गुरु पूर्णिमा

(दिनांक १६, २०, २१ एवं २२ जुलाई ६४)

पाण्डवों की कर्म भूमि
पानीपत
जब एक बार पुनः जीवन के संग्राम को लड़ने के लिए उद्‌घोष
होगा, साधनाएं होंगी,
अर्थात् कर्मठता और चारों पुरुषार्थों को पूर्णता से जीवन में
उतार लेने के लिए होंगे सद्‌गुरु संग के विरल क्षण . . .
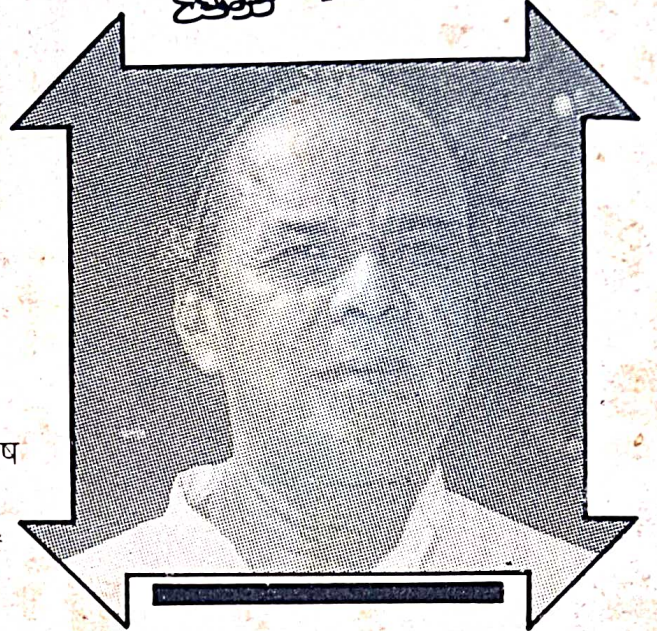
१६.०७.६४ : कुण्डलिनी जागरण प्रयोग

२०.०७.६४ : महालक्ष्मी साधना एवं ब्रह्मवर्चस्व साधना

२१.०७.६४ : पूर्णत्व प्राप्ति प्रयोग एवं सिद्धाश्रम प्राप्ति साधना

२२.०७.६४ : गुरु पूर्णिमा पर्व

इस साधना शिविर का सर्वाधिक महत्वपूर्ण दिवस गुरु-पूर्णिमा पर्व और इस दिवस को गुरु पूजन के उपरान्त पूज्यपाद गुरुदेव जो दीक्षा प्रदान करेंगे उसका विवरण उन्होंने गुप्त ही रखा है। एक - एक क्षण साधना और जीवन की चैतन्यता से भरा होगा, उत्साह व ओज प्रदान करने में समर्थ होगा, जिससे साधकों के जीवन में जो भी न्यूनता हो वह समाप्त हो सकेगा, यह गुरु पूर्णिमा नहीं वरन पूज्यपाद गुरुदेव के शब्दों में ही शिष्य पूर्णिमा जो है। यह समस्त भारत और भारत के बाहर रह रहे शिष्योंको **सिद्धाश्रम साधक परिवार** की ओर से आत्मीय आह्वान है।

स्थानीय सम्पर्क

सत्यवीर सक्सेना, विशनस्वरूप कॉलोनी, पानीपत
सतीश सिंगला, सुखदेव नगर, पानीपत
फोन : (घर)-०१७४२-२१३८६, (होटल)-०१७४२-२३३६६

आयोजन स्थल -
होटल सिंगला पैलेस, जी० टी० रोड, पानीपत, हरियाणा
(पानीपत बस स्टैंड से दो किमी० आगे जी. टी. रोड पर स्थित भव्य एवं सुसज्जित)

पानीपत, दिल्ली से १०० कि० मी० दूर रेल व बस द्वारा जुड़ा महत्वपूर्ण नगर है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश, हिमांचल प्रदेश, हरियाणा व पंजाब के साधक यहां तक सीधे पहुंच सकते हैं। शेष प्रान्तों के साधकों के लिए दिल्ली आकर **अन्तर्राज्यीय बस स्टैंड** (पुरानी दिल्ली रेल्वे स्टेशन के पास स्थित) से बस द्वारा पानीपत पहुंचना ही सुविधाजनक रहेगा।

आनो भद्रा : क्रतवो यन्तु विश्वतः
गानव जीवन की सर्वतोन्गुखी उन्नति प्रगति और
भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

प्रार्थना

ध्यायेत्सदा सद्गुरुं श्रुतिशास्त्रपारगं
वेदान्तवेद्यमनद्यं परमार्थरूपम् ।
संसार सागर समुत्तरणाय पोतं,
चैतन्यमप्रतिरथं निखिलं नमामि ।।

संसार सागर से पार उतरने के लिए नौका सदृश, वेद तथा शास्त्रों से परे, उपनिषदों के लक्ष्य स्वरूप, परम-पावन, लोकहितार्थ मानव शरीर धारण किए हुए, चैतन्य तथा परम-अजेय हृदय में उनका ध्यान करता हुआ, गुरुदेव निखिलेश्वरान्द जी के श्री चरणों में उदात्त तम विनम्र भावों से मैं नमन करता हूं।

नियम

अनुक्रमणिका

साधना

कथ्य

स्तम्भ

विशेष

ज्योतिष

सद्गुरुदेव

सौन्दर्य

चिकित्सा, योग

कहानी

पाठकों के पत्र

❁ पत्रिका पढ़ने पर ऐसा लगता है कि मैं पूज्य गुरुदेव से पूर्व जन्मों से परिचित हूं। कुछ साधनाएं भी की और सफलताएं भी पायी। पत्रिका पढ़ने के बाद ऐसा लगता है कि मुझे अब मंजिल मिल गयी है।

डॉ० कमलेश कुमार वर्मा, बलिया

❁ मैं पत्रिका का नया पाठक हूं। पत्रिका कई बार पढ़ चुका हूं। हर बार मुझे एक नया ज्ञान, हमारे प्राचीन शास्त्रों में वर्णित तथ्यों के प्रति एक नयी अवधारणा मिली है। पत्रिका का एक-एक शब्द मोतियों से तुलनीय है। होली पर तंत्र के एक सौ आठ प्रयोगों में से ५४ प्रयोग आप शिव-विशेषांक में प्रकाशित कर चुके हैं, शेष प्रयोगों को आगामी अंक में देने की कृपा करें। तांत्रोक्त गुरु साधना के प्रकाशन के लिए बधाई। मांत्रोक्त गुरु साधना कब प्रकाशित कर रहे हैं?

एस० आर० मचली, आरेछा, बस्तर

❁ राशिफल को पहले मैं अंधविश्वास मानता था किन्तु एक बार हंसी-हंसी में **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान** में अपनी राशि पढ़ी और सारी की सारी भविष्यवाणियां खरी उतरी। तब से बेहद विश्वास करने लगा हूं।

प्रहलाद जसवानी, मन्डला

❁ मैं पिछले कई महीनों से ऐसी अनुकूलता अनुभव कर रहा हूं कि बिना आपसे मिले मैं अपने-आप को रोक नहीं पा रहा। स्कूल-कॉलेज का अध्ययन मानव जीवन के निर्माण में किसी प्रकार से सहायक नहीं हो सकता। अपना स्वरूप, आत्मज्ञान का दर्शन कराने वाले तो केवल गुरु ही होते हैं। आप ही मेरी गति हैं। मेरे सर्वस्व व सबकुछ ही हैं।

मायकल डेविड एन्थोनी, उल्हासनगर

❁ . . . पत्रिका स्तम्भ की उपयोगिया को विस्तार देते हुए विश्व कल्याणार्थ प्रत्येक माह एक रोग एवं सम्बन्धित लक्षण, आयुर्वेदिक चिकित्सा का संक्षिप्त विवरण तथा सामग्री पृष्ठ पर औषध तालिका को सादर स्थान दिया जाए तो निःसंदेह राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर पत्रिका परिवार के लिए एक श्रेष्ठ उपहार होगा।

डॉ० कृष्ण कुमार कश्यप, आर्थोपेडिक सर्जन, सहरसा

❁ इस महत्वपूर्ण **हीरक जयन्ती वर्ष** में यदि आप अपने विशेषांकों की सूचना पूर्व प्रकाशित करें तो पाठक वर्ग के लिए उपयोगी रहेगा तथा आपके विशेषांकों से मिलते-जुलते नाम से विशेषांक प्रकाशित करने वाली पत्रिकायें भी हतोत्साहित होंगी।

दीपक कुमार कुलश्रेष्ठ, उन्नाव

❁ पत्रिका में योग से सम्बन्धित लेखों का अभाव खटकने लगा है। जिस प्रकार विगत वर्ष में पूरा विशेषांक केवल योग पर ही आधारित था, उसी प्रकार इस वर्ष भी प्रकाशित करें।

कु० नीलम मिश्रा, भोपाल

❁ पत्रिका में ज्योतिष से सम्बन्धित महत्वपूर्ण ज्ञान समय-समय पर प्रकाशित होता रहा है। किन्तु मेरा अनुरोध है कि हस्तरेखा से सम्बन्धित ज्ञान की भी प्रामाणिक प्रस्तुति पत्रिका के माध्यम से हो।

शशिकान्त यादव, अम्बिकापुर

भूल सुधार

पत्रिका का मई अंक **'साधना सिद्धि विशेषांक'** सम्पूर्णता समाहित किए हुए है किन्तु पत्रिका में कुछ त्रुटियों की ओर आपका ध्यान दिलाना भी आवश्यक समझता हूं, उदाहरण के लिए इसी अंक में पृष्ठ ६० पर प्रकाशित **'त्रिपुर भैरवी'** साधना से सम्बन्धित लेख का शीर्षक **'त्रिपुर सुन्दरी'** के रूप में प्रकाशित हुआ है जो मेरी दृष्टि से एक गम्भीर त्रुटि है क्योंकि त्रिपुर सुन्दरी से तात्पर्य षोडशी महाविद्या साधना से लिया जाता है। इसी प्रकार **'तांत्रोक्त गुरु साधना'** में पृष्ठ ४६ पर मणिपुर चक्र में पूज्यपाद गुरुदेव के स्थापन के उपरान्त अनाहत चक्र में किस प्रकार स्थापन करें इसका विवरण छूट गया है, कृपया इसे भी **पाठकों के पत्र** स्तम्भ के माध्यम से स्पष्ट करें।

सुरजीत सिंह कोमल, कलकत्ता

*—आपके ध्यानाकर्षण के लिए हम आभारी हैं। वस्तुतः **'त्रिपुर सुन्दरी'** एक बोध वाच्य संज्ञा है जिसके अनुसार जो मन, बुद्धि व चित्त तीन **'पुर'** पर अधिकार रखें। महाविद्या साधनाओं में जिस प्रकार **श्री कुल** की त्रिपुर सुन्दरी— षोडशी हैं उसी प्रकार **काली कुल** की त्रिपुर सुन्दरी — मां भगवती त्रिपुर भैरवी है, फिर भी हमारे सुविज्ञ पाठकों को जो असुविधा पहुंची उसके लिए हम हृदय से क्षमा प्रार्थी हैं।*

***तांत्रोक्त गुरु साधना** में मणिपुर चक्र में स्थापन के उपरान्त **''श्री रुद्र देवानन्दनाथ इच्छा शक्त्यम्बा अनाहत चक्रे स्थापयामि''** ऐसा उच्चारण कर साधना विधि को सम्पूर्ण करें।*

—सहा० सम्पादक

वर्ष १४ अंक ७ जुलाई ९४

प्रधान संपादक - नन्दकिशोर श्रीमाली

सह सम्पादक मण्डल - डॉ. श्यामल कुमार बनर्जी, सुभाष शर्मा, गुरुसेवक, गणेश वटाणी, नागजी भाई

संयोजक - कैलाश चन्द्र श्रीमाली, **वित्तीय सलाहकार -** अरविन्द श्रीमाली

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान , डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - ३४२००१ (राज.) ,फोन : ०२९१ - ३२२०६

गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, नई दिल्ली - ११००३४, फोन : ०११-७१८२२४८, फेक्स : ०११-७१८६७००

सम्पादकीय

साधना का अर्थ एक वाक्य में पूछा जाए तो यही है कि जो कुछ प्रारब्ध में नहीं भी हो, उसे प्राप्त करना। इसी कारणवश भारतीय चिन्तन की सर्वश्रेष्ठ धारा साधना की ही मानी गयी। साधना सही अर्थों में प्रकृति पर विजय की घटना है और प्रकृति के समान ही इसकी भी क्रिया है।

साधना की क्रिया-पद्धति को प्रकृति की क्रिया-पद्धति से ही समझा जा सकता है। एक बीज पृथ्वी के गर्भ में जाता है, विनष्ट होता है, पुनः कई-कई बीजों को जन्म देता है और यह चक्र चलता ही रहता है। ठीक उसी प्रकार साधना जगत में भी एक क्रिया सम्पन्न होती है, उसकी पश्चात्‌वर्ती क्रिया सम्पन्न होती है तथा प्राप्ति होने के बाद भी चक्र रुकता नहीं है।

मई का **साधना-सिद्धि विशेषांक,** तत्पश्चात्‌ जून में **अलौकिक साधना विशेषांक** एवं प्रस्तुत विशेषांक **पूर्ण सिद्धि विशेषांक** इसी प्रकार एक पूर्ण क्रम है, किन्तु इसके पश्चात्‌ भी विराम नहीं है क्योंकि प्रकृति के समान, प्रकृति पर विजय प्राप्त करने की क्रिया भी निरन्तर चलती ही रहेगी।

यह अवश्य है कि अब आपके पास एक बीज के स्थान पर कई-कई बीज हैं। विभिन्न साधनाओं के, विभिन्न पद्धतियों के, श्रेष्ठतम ऋषियों द्वारा रचे गए एवं युगों-युगों से प्रामाणिक रहे बीज मंत्र।

इस महत्वपूर्ण **हीरक जयन्ती वर्ष** की गुरु पूर्णिमा के अवसर पर यह विशेषांक आप सभी को पूज्यपाद गुरुदेव की ओर से आशीर्वाद स्वरूप प्राप्त हो रहा है, क्योंकि गुरु और पूर्णता– एक-दूसरे की पर्याय जो हैं। इसी माह **२२/७/९४** को पड़ने वाला महत्वपूर्ण पर्व– **गुरु पूर्णिमा** आपके जीवन में एक नवीन क्रम बने, आप की मनोवाञ्छा पूरा करने का आधार बने, और पूर्णता की स्थिति वने यही शुभ कामनाएं पत्रिका परिवार की ओर से स्वीकार करें।

आपका

नन्दकिशोर श्रीमाली
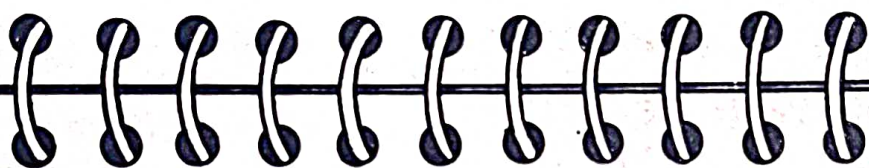
मेरे गुरुदेव

अपने गुरुदेव की चर्चा करना, स्मरण कर जीवन के उन क्षणों को पुनः जीना जो गुरु साहचर्य में व्यतीत हुए, इससे श्रेष्ठ जीवन का कोई अन्य आनन्द सम्भव ही नहीं। यह तो शिष्य-जीवन की विविध रंगों से भरी जीवन-यात्रा है। कहीं इस लम्बे पथ पर गुरुदेव अपने लौकिक रूप में है, कहीं गुरु स्वरूप में और कहीं शिष्य के भीतर स्थापित होते हुए शिष्य स्वरूप में।

इस यात्रा में कौन-कौन से पड़ाव आते हैं, कहां एक साधक घड़ी दो घड़ी विश्राम करता है और कहां तक उसे पहुंचना होता है, इन्हीं सब बातों का नितांत आत्मीय ढंग से व्यक्तीकरण. . .

यदि कभी आपने ऋषिकेश की यात्रा की हो और लक्ष्मण झूले से गंगा के उस पार स्वर्गाश्रम से लेकर राम झूला तक की यात्रा की हो तो सहज ही समझ सकते हैं कि गुरु साहचर्य में की गयी यात्रा का क्या आनन्द होता है। विविध सुखद वृक्षों की घनी छांव, बगल में मां भगवती जगज्जननी गंगा और एक ऐसा पथ जो लगता है कि न कभी समाप्त होगा, न इच्छा होती है कि यह समाप्त ही हो। मन एक शून्य में खो जाता है, और शरीर तो इस यात्रा को पूर्ण कराने का एक निमित्त मात्र बन जाता है, क्योंकि यह यात्रा तो प्राणों से होती है।

यह जीवन भी एक ऋषिकेश ही है जिसके उस पक्ष से अर्थात् कोलाहल से भरे जीवन से एक लक्ष्मण झूला पार कर थोड़ा हट कर दूसरी ओर आना होता है, कुछ दूर चलना होता है, और पुनः राम झूला तक आते-आते उसी पतित पावनी गंगा की गोद से होकर पुनः ऋषिकेश में चले जाना होता है, जो कोलाहल से भरा है किन्तु तब तक दृष्टि बदल चुकी होती है, कोई विलक्षणता अपने अंदर तक उतर आयी होती है और ऑक्सीजन की जगह, श्वासों से होकर कुछ अनोखी ताजगी, एक "प्राण" को अपने अन्दर तक उतार कर स्वयं को शीतलता और आह्लाद से परिचित करा चुके होते हैं।

यह तो जीवन का एक वर्तुल है जो निरन्तर चल रहा है अविराम, ज्यों गंगा निरन्तर वह रही है अविराम, वृक्ष स्पन्दित है अविराम। निःस्तब्ध तो इस प्रकृति के व्यापार में कुछ है ही नहीं उस गुरु के अतिरिक्त जो एक पथ बनकर शाश्वत है। थोड़ा पथरीला है किन्तु सुखद छांव भी देता है, निर्जन है किन्तु फिर वहीं अपने से वार्तालाप का अवसर भी देता है और ऐसे ही गुरु-पथ के ठीक बगल में शक्ति स्वरूपा मां भगवती जगदम्बा का साहचर्य भी तो शाश्वत रूप से विद्यमान है।

कोई एक मोड़ आता है मन हर्षित हो जाता है, कुछ का कुछ और दिखने लग जाता है और ऐसे ही अनेक मोड़ पार कर अंत में उसकी स्मृति शेष रह जाती है, कुछ कसक रह जाती है कि काश इस पथ के पत्थर ही हो सकते . . . लेकिन जीवन तो वर्तुल है।

इस वर्तुल में एक क्षण आया जब मुझे काल ने ही ढकेल कर मां भगवती गंगा के क्रोड़ से होकर उस पार जाने को कहा, जो गुरु-पथ है और निश्चित रूप से उस नित्य लीला विहारिणी की इच्छा के बिना, उसकी क्रोड़ से हुए बिना कोई गुरु-पथ पर जा ही नहीं सकता। मेरी यह अहंमन्यता नहीं रही कि मैं इसे अपने पूर्व जन्मों का पुण्य मानूं या अपना अधिकार कहूं। प्रकृति स्वरूपा मां भगवती का ही तो कोई कृपा कटाक्ष उसके पास ले गया। बिना शक्तिमय हुए कौन गुरु-साहचर्य में आ सका है? और जीवन के ऐसे ही एक क्षण में वही नित्य लीलाविहारिणी काली बनकर काल से परे ले जाकर मेरा परिचय गुरु से करवा आयी। आज तो एक-एक क्षण, एक-एक पल और एक-एक इंगित समझ में आता है किन्तु तब

क्या कुछ समझ सका था? कदाचित् नहीं। तब तो बोध था कि "मैं", मैं ही उस पार जा रहा हूं।

एक व्यामोह से भरा जीवन था और उस व्यामोह की गर्भावस्था से निकल कर जो कुछ देखा वह तो अधखुली आंखों से कुछ 'कौतुक' सा देखा गया था। नादान शिशु की ही भांति, जिसे किसी हलचल और उत्सव का बोध तो हो किन्तु वह उसका कारण और अर्थ न समझता हो। किन्तु जब काल का एक क्षण आता है और मां महाकाली की कृपा का अवसर आ जाता है तब जीवन में ऐसा कुछ घटता ही है जो सामान्य जीवन से अलग हो . . .

. . . मां महाकाली- जो श्मशान में महाकाल के साथ उन्मुक्त भाव से नित्य लीलारत है उसकी कृपा के बिना कौन समझ सकता है जीवन के अनसुलझे रहस्य, और वही नित्य श्मशानवासिनी ही तो अपने उद्दाम नर्तन के द्वारा जब महाकाल पर आरूढ़ होकर सृजनता का एक विशेष क्षण उपस्थित करती तभी तो साधक अपने जीवन में कुछ देख सकता है, कुछ समझ सकता है वही जगज्जननी तो काल के किसी एक क्षण पर आरूढ़ होकर, हमारी उंगली पकड़ उस चैतन्य माध्यम तक लाती है जो पूज्य गुरुदेव का पवित्र विग्रह है।
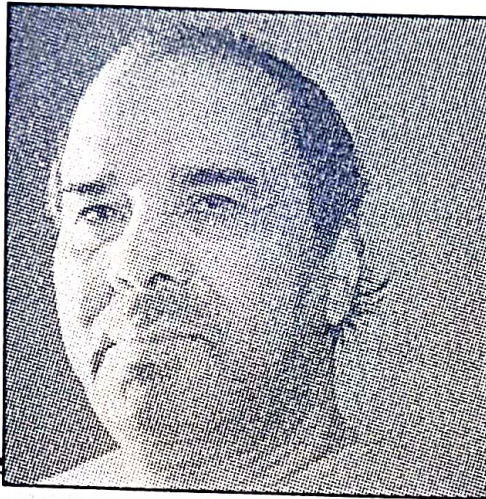
काल चक्र से प्रेरित होकर यों ही जीवन के एक क्षण विशेष में मैं गुरुदेव के चरणों में गया कोई बोध नहीं था, कोई उच्चता नहीं थी कोई भाव-भूमि नहीं थी किन्तु उस दीक्षा स्थल पर जहां बगल में **सरयू का निर्मल प्रवाह गतिशील था और ऊपर स्वच्छ नीला आकाश प्रतिबिम्बित हो रहा था। वही मेरे आत्म की एक छवि मात्र थी जिसका साक्षात्कार गुरु चरणों के स्पर्श से हो सका, पहली बार अनुभव किया कि एक नदी मेरे भीतर भी प्रवाहित है** जिसमें एक स्वच्छ नीला आकाश प्रतिक्षण प्रतिबिम्बित हो रहा है और उस परम पावनी सरयू की एक-एक हिलोर मेरे मन में उतर कर आंसुओं की शक्ल में बह उठी थी। वायु मंडल में गूंजता पूज्यपाद गुरुदेव का अजस्र प्रवाह ठीक उन्हीं क्षणों और उन्हीं मंत्र ध्वनियों को वायुमंडल से ग्रहण कर सभी शिष्यों में उतारते हुए जो कभी महर्षि वशिष्ठ ने उसी सरयू तट पर भगवान श्रीराम को ब्रह्म दीक्षा के अवसर पर उच्चरित किया था। काल का अन्नत प्रवाह में बहता हुआ पुनः अपनी आवृत्ति को होता देख ठिठक गया था।

काल के इस अनन्त प्रवाह में हम सभी कण मात्र ही तो हैं। सरयू की भांति निरन्तर बहे जा रहे जल के अंश ही तो हैं। कोई अंश किसी शव को ढो रहा है, कोई अंश किसी पुष्प को लिए बह रहा है, कोई अंश किसी की तृप्ति का हेतु बन रहा है, कोई अंश किसी की स्वच्छता का निमित्त बना है और कहीं किसी ने अजुंली भर जल अपनी हथेली में उठा लिया है। **जल राशि तो एक ही है लेकिन कोई अंश पूजा की सामग्री बन गया, अर्घ्य बन गया और कोई यों ही बहता चला गया। किसी हिलोर से किसी अंश ने किन्हीं पावन चरणों को पखारा** और कोई हिलोर यूं ही खाली किनारों से टकरा कर लौट गयी . . .। अपनी-अपनी नियति।

किन्तु मेरी नियति इस बार किन्हीं पावन चरणों में जाकर उन्हें भिगो देने की थी। किसी पावन अंजुरी में अर्घ्य बन जाने की थी। एक विशाल प्रवाह में से इस लघु अस्तित्व का यही परिचय है, जो गर्वित भी है और नगण्य भी।

स्व का परिचय दूं, उल्लेख करूं तो मन में संकोच होता है, अहंमन्यता परिलक्षित होती है और न दूं तो उस उदात्तता का वर्णन नहीं हो सकता। जो गुरुत्व की उदात्ता है, पूज्य गुरुदेव की विराटता है। क्योंकि तुलनात्मक रूप से ही तो कुछ वर्णित किया जा सकता है। विराटता वर्णित करना कठिन है किन्तु लघुता वर्णित करना सरल है। विराटता तो बस स्पष्ट हो सकती है, विराटता वर्णित नहीं हो सकती। यही स्थिति सदा-सदा से रही है। कबीर के साथ भी ऐसा ही था, जीवन का यह द्वंद्व ऐसे क्षणों में आकर हतप्रभ कर ही देता है।

रोऊं तो बल घटे है हंसू तो हरि रिसाय।
मनहि माहि विसूरणा ज्यों काटहि घुण खाय।।

मन में कुछ घुन सा कचोटता रहता है, साल दर साल बीतने के साथ-साथ स्पष्ट होता जाता है कि किसके सम्पर्क में आया, कैसे-कैसे प्रस्तुत हुआ, क्या-क्या बातें कहीं और क्या कुछ नहीं किया। क्या वह सब उचित था? और तब मन में असीम वेदना होती है अपनी अहंमन्यता और पूर्णता को लेकर जो घुन की भांति खाने लगती है। किन्तु फिर थकहार कर एक ही आश्रय शेष रह जाता है कि वह कोई अन्यभावभूमि होती है। कोई अन्य आत्मीयता

"गुरु" . . . यह शब्द इतना हल्का नहीं कि इसे एक मुहावरे की तरह चलते फिरते उछाल दिया जाए . . . कुछ अनुभूतियों की चर्चा कर अपनी ही पीठ थपथपा ली जाए।

"गुरु" शब्द कहा और कंठ नहीं रूंध आया, हृदय रोमांचित नहीं हो उठा तो "गुरु" शब्द फिर कहा ही नहीं।

होती है। जिसके वशीभूत होकर गुरुदेव निरन्तर गतिशील रहते हैं। निरन्तर कृपा दृष्टि करते ही रहते हैं, निरन्तर प्रेम रस और अपने हृदय का बल प्रदान करते हुए जीवन में उचित व अनुचित का बोध कराते हुए विष व अमृत के स्वाद में भेद की क्षमता प्रदान करते हुए शाश्वत पथ पर ले चलने के लिए अहर्निश गतिशील रहते हैं।

"गुरु" शब्द लिखने के लिए समस्त वनों को काटना भी आवश्यक नहीं है न उनसे लेखनी बनाने की आवश्यकता है और न समुद्र की स्याही बनाने की , पृथ्वी रूपी कागज बनाने की आवश्यकता भी नहीं। इतना वागजाल और रूपक भी आवश्यक नहीं। **बस कभी दिल के कोने में झांक लेने पर जो सूरत दिख जाए, जो मूरत देख कर हृदय भर जाए, आंखें आसुओं से कुछ नम हो जाएं वही गुरु हैं और दोनों आंखों से ढुलके एक - एक आंसू गुरु शब्द के दोनों अक्षर लिख देंगे।** शास्त्रों के **"गुकार"** उच्यते और "रुकार" उच्यते से गुरु का परिचय नहीं मिल सकता। कम से कम मेरे गुरुदेव का कदापि नहीं। परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी का कदापि नहीं। **वे इन सभी शब्द जालों से बहुत - बहुत परे उस स्थान पर अवस्थित हैं जहां अपनी प्रखरता और ओजस्विता के आगे शिष्य को कुछ बोलने के लिए शेष रहने ही नहीं देते,** फिर भी जो कुछ शेष बच जाता है उसे वे ही ओढ़ लेते हैं। मां ने शिशु पर कब कौन सा दायित्व डाला है? कब कौन सी कामना की है? कब आशा रखी है?

शब्दों में हृदय को उड़ेला नहीं जा सकता और हृदय जिन आंसुओं की भाषा में अपने-आप को उड़ेल देता है उसे शब्दों में नहीं ढाला जा सकता।

कविवर रविन्द्रनाथ टैगोर अपनी मृत्यु शैया पर थे और उनकी आंखों में आंसू थे किसी ने उनसे पूछा आपको क्या वेदना शेष रह गयी है, आपने कला, संस्कृति, काव्य सभी में तो एक नूतन परम्परा दी है, हजारों पदों की रचना की, हजारों व्यक्तियों को अनुप्राणित किया, विश्व का सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार पाया . . . अब क्या शेष रह गया? कवि गुरु का उत्तर था कि— अभी तो मैंने उससे बस कुछ परिचय ही किया था कि जाने का वक्त आ गया, मुझे जो कहना था वह तो मैं कह ही नहीं पाया।

यही कसक और कचोट हर क्षण रह जाती है कि अभी तो बस परिचय ही किया था, अभी तो उसे बस कुछ जाना ही था, कल तक जो उसे जाना था वह तो कोई और था, और आज जो जान रहा हूं वह कोई और है . . . और वह नित-नूतन होता ही जा रहा है। एक पक्ष पर टिक ही नहीं पा रहा है मैं उसे शब्दों में बांधू तो कैसे? व्यक्तित्व कहूं तो किस पक्ष को लेकर? दया, करुणा कहूं या वह असीम प्रेम कहूं या अपने-आप में एक परिभाषा, सौन्दर्य कहूं या निर्मलता की पराकाष्ठा और ज्योति स्वरूप कहूं या परमशांत निर्विकल्प . . . किन्तु मन की कचोट तो कहती ही रहती है, कुछ बांधों कुछ पकड़ो इसी तरह से कोई खुद ही लिख जाएगा।

मन से शब्दों के फूल झरने दो, धरा पर खुद ही कोई चादर बिछ जाएगी। खुलने दो हृदय के कपाट रिमझिम फुहार बरस ही जायेगी, क्योंकि हृदय में जो धन आकर बसा है, जो बरसों में कण-कण कर एकत्र हुआ है वह मेघ तो राह ढूंढेंगा ही, कुछ नैनों से बिखरेगा, कुछ शब्दों से, कुछ मौन से और कुछ गीतों से।

सच कहूं तो मुझे मेरे गुरुदेव के विषय में लिखना बहुत कठिन है। जब मैं "दो" होऊं तभी तो कुछ कहूं और "दो" सद्गुरु होने कब देते हैं। सद्गुरु का तो आगमन एकत्व दिलाने के लिए होता है। मेरा सौभाग्य, मेरा पुण्य, मेरा सम्पूर्ण जीवन और मेरा अस्तित्व रह ही कहां गया।

कबीरा गुरु गरवा मिल्या
आटे रलि गया लवण
जांति पांति कुल सब मिटे
नाम धारोगे कौन

मुझे तो गरवा (गम्भीर) गुरु मिल गया और उससे भी बड़ी बात ये हुई कि उसने मुझे अपने- आप में मिला भी लिया। मैं जो एक अंश था वह पूर्ण हो गया उसी समष्टि में समाहित हो गया जहां से उद्भव हुआ था। जब अपना उद्भव मिल जाता है तभी तो मूल प्रवाह मिलता है, तभी तो छलछला कर बहने की घटना होती है, तभी तो गुरु हमारा गोत्र बनता है, तभी तो हमारी धमनियों में बहता रक्त गुरु का परिचय हो जाता है और सही अर्थों में गुरु से परिचय हो जाता है।

जीवन का ऐसा प्रवाह सभी को पूर्णता देने को तत्पर है क्योंकि वह तो पूर्ण है और पूर्णत्व देना ही उसका एक प्रकार से सांसारिक शब्दों में कहा जाए तो धर्म है। यद्यपि गुरु तो स्वयं ही धर्म होते हैं। **मेरे गुरुदेव तो स्वयं धारण करने योग्य हैं। किसी भी मंदिर में स्थापित मूर्ति से ज्यादा पवित्र, किसी भी तीर्थ से ज्यादा दर्शन करने योग्य और किसी भी महोदधि से अधिक अवगाहन करने योग्य क्योंकि वे व्यष्टि नहीं समष्टि जो हैं।**

जो व्यष्टि नहीं समष्टि है वह तो यों ही रहेगा, जो पूर्णिमा है वह तो सदैव प्रकाशित रहेगा।

जो उज्ज्वल है वह निरन्तर सभी को इसी प्रकार प्रकाश देता ही रहेगा। गुरु पूर्णिमा तो एक अवसर बन गया जिस के कारण उस पूर्ण चन्द्र के बारे में कहने का उपाय मिल गया।

❁

शिव - शक्ति - विवेक - बल
श्रावण मास में पूर्ण मनोकामना सिद्धि

निश्चित मनोकामना पूर्ण सिद्धि
भिक्षावृत्तिं चर पितृवने भूतसंगर्भभेदं
विज्ञातं ते चरितमखिलं विप्रलिप्सोः कपालिन्

(अप्पय)

हे भगवान शिव! हे स्वामी!! आप चाहे भिक्षावृत्ति का आश्रय लेकर एक अभिनय करें अथवा भूत - प्रेत, पिशाचों के संग श्मशानों में वास करें किन्तु हे कपालिन! मेरी दृष्टि में आपका ऐश्वर्य अब छुपा नहीं रह गया है। मैं यह जान चुका हूं कि त्रिमूर्ति सहित इस समस्त जगत के स्वामी आप ही हैं।

भगवान शिव योगी रूप में ही प्रकट हुए हैं किन्तु उनका स्वरूप पूर्णता का प्रतीक है। स्वर्णिम लहराती जटा उनकी व्यापकता का सूचक है, जटा में स्थित गंगा कलुषता नाश की तथा चन्द्रमा अमृत का देवता है। गले में लिपटा सर्प काल स्वरूप है अर्थात काल पर वश करने के कारण ही वे मृत्युंजय हैं, त्रिशूल तीन प्रकार के कष्टों दैहिक, दैविक, भौतिक के विनाश का सूचक है। व्याघ्र चर्म मन की चंचलता के दमन का सूचक है, नन्दी रूपी धर्म पर वे आरूढ़ होने के कारण ही धर्मेश्वर हैं और शरीर पर भस्म लपेटे हुए पूर्ण निर्लिप्तता के प्रतीक हैं ऐसे ही सम्पूर्ण देव की आराधना कर साधक अपने जीवन को सवांर सकता है।

सर्वथा निर्लिप्त और निराकार भगवान शिव पूर्ण रूप से विरक्त होते हुए भी सम्पूर्ण अर्थों में गृहस्थ का प्रतिनिधित्व करते हैं और इसी कारणवश जहां वे योगियों के अधीश्वर हैं वहीं गृहस्थों के भी जीवन के आधार हैं केवल अपने वरदायक स्वरूप के साथ ही नहीं वरन साथ में मां भगवती पार्वती, कार्तिकेय एवं गणपति सभी तो वरदायक ही हैं इसी से भगवान शिव की साधना सम्पूर्ण अर्थों में गृहस्थ की साधना है क्योंकि एक शिव साधना से ही चार साधनाओं का संयुक्त फल प्राप्त हो जाता है। भगवान शिव जहां ऐश्वर्य देने में समर्थ हैं मां भगवती पार्वती की कृपा से श्रेष्ठ गृहस्थ जीवन, योग्य वर की प्राप्ति, अखण्ड सौभाग्य जैसे फल प्राप्त होते हैं, वहीं भगवान गणपति की विघ्न विनाशकता है और वहीं भगवान कार्तिकेय का वह अद्‌भुत तेज और बल जिससे किसी भी पुरुष के जीवन में अद्वितीय सौन्दर्य, वीरत्व समाहित हो सकता है।

श्रावण का महीना प्रत्येक साधक के लिए अत्यन्त प्रिय और महत्वपूर्ण माना गया है, जो सही अर्थों में साधक हैं, वे तो पूरे वर्ष भर इस माह का इन्तजार करते रहते हैं और जो अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति चाहते हैं, वे पहले से ही तैयारी कर लेते हैं, जिससे कि इस माह में सम्पन्न होने वाली साधना का पूरा-पूरा लाभ उठा सकें।

जीवन में अनेक प्रकार की समस्याएं होती हैं समाज के अलग- अलग वर्ग की अलग - अलग आवश्यकताएं होती हैं किन्तु

जिस प्रकार से भगवान शिव का परिवार सभी विरोधाभाषों को समेटे एक सम्पूर्णता का प्रतीक है उसी प्रकार श्रावण मास की यह साधना जीवन की विभिन्न विरोधाभाषी स्थितियों का निदान करने में समर्थ है। उदाहरण के लिए परिवार का मुखिया विभिन्न जिम्मेदारियों के साथ आय प्राप्ति के लिए चिन्तित रहता है। पत्नी अपने अक्षुण सौभाग्य की कामना करती है, किशोर आयु वर्ग के बालक - बालिकाओं को विद्या प्राप्ति की समस्या होती है, वहीं युवा वर्ग के साथ विवाह की, सुखद गृहस्थ जीवन, शत्रु नाश, राज्य सम्मान इत्यादि स्थितियों का समाधान भी इसी साधना से प्राप्त होता है।

भगवान शिव का स्वरूप शक्ति युक्त होने के कारण सर्वाधिक प्रभावशाली और साधक की मनोवांछा पूर्ण करने वाला है। इसी से जहां छोटे से छोटे ग्राम में शिवालय की स्थापना मिलती है वहां कोई भी स्त्री गौरा-पार्वती के आराधना के बिना अपने जीवन को सम्पूर्ण मानती ही नहीं। **पुरुष यदि कामना करता है कि उसका पुत्र भगवान श्री गणपति के समान बल, बुद्धि से युक्त हो तो वहीं स्त्री की कामना रहती है कि उसका पुत्र कार्तिकेय जैसा सौन्दर्यवान और वीर हो।** ये प्रमाण है किस प्रकार सम्पूर्ण शिव परिवार जन मानस में पैठा हुआ है। जिस प्रकार जहां शिव है वहीं शक्ति हैं ठीक उसी प्रकार जहां श्री गणपति हैं वहीं लक्ष्मी हैं, जहां श्री कार्तिकेय हैं वहीं भगवती सरस्वती हैं इसी से इस साधना को सम्पूर्ण साधना कहा गया है।

साधना सामग्री

श्रावण मास से सम्बन्धित साधना करने के लिए निम्न सामग्री की आवश्यकता होती है, जो कि मंत्र सिद्ध, प्राण-प्रतिष्ठा युक्त है, वास्तव में ही यह सामग्री अपने-आप में दुर्लभ और महत्वपूर्ण है।

१. मनोकामना पूर्ति- शिव सिद्धि यंत्र।
२. साफल्य प्राप्ति रुद्राक्ष- जो शिव आपूरित मंत्र से सिद्ध हो।
३. कल्पवृक्ष वरद- जो वरदायक कल्प वृक्ष हो।
४. कायाकल्प गोमती चक्र।
५. ऋद्धि-सिद्धि यंत्र।

६. मनोवांछित कामना सिद्धि विग्रह।
७. रुद्राक्ष कंठा।

मनोवांछित साधना सिद्धि पैकेट

श्रावण मास निकट है, और इस बार कई साधकों, संन्यासियों और पाठकों ने ऐसी इच्छा प्रकट की है, कि वे दुर्लभ और प्रामाणिक सामग्री एक ही पैकेट में चाहते हैं, और हम ऐसा पैकेट तैयार करवा कर भिजवाने की व्यवस्था कर रहे हैं इस पैकेट में उपरोक्त सातों वस्तुएं प्रामाणिक रूप से संग्रहित होंगी जिसे सर्वकामना सिद्धि पैकेट कहा गया है।

मुहूर्त

श्रावण मास अपने-आप में सिद्धि मास माना जाता है, इसलिए इस महीने में समय या मुहूर्त आदि की आवश्यकता नहीं होती, दिन या रात में किसी भी समय में साधना प्रारम्भ की जा सकती है और सफलता पाई जा सकती है।

साधना कौन करे

इस साधना को पुरुष या स्त्री, बालक या बालिका कोई भी कर सकता है, इसके लिए किसी भी प्रकार का कोई प्रतिबन्ध नहीं है।

अन्य सामग्री

उपरोक्त पैकेट के अलावा कुछ अन्य सामग्री की आवश्यकता होती है जिसकी पहले से ही व्यवस्था कर लेनी चाहिए।

१. आसन, कोई भी रंग का हो, **२.** जल पात्र, **३.** गंगाजल,

यदि हो तो, ४. चांदी या स्टील की प्लेट, ५. कुंकुम (रोली), ६. चावल, ७. केशर, ८. पुष्प, ९. बिल्व पत्र, १०. पुष्प माला, ११. दूध, दही, घी, चीनी, शहद, अनुमान से, १२. नारियल, १३. रक्तसूत्र या मौली अथवा कलावा, १४. यज्ञोपवीत, १५. अबीर-गुलाल, १६. अगरबत्ती, १७. कपूर, १८. घी का दीपक, १९. नैवेद्य हेतु दूध का प्रसाद, २०. पांच फल, २१ इलायची।

इसके अलावा यदि घर में पंचपात्र, अर्घ्यपात्र, घण्टी, शंख, अगरबत्ती स्टैण्ड आदि हो तो उसकी भी व्यवस्था कर लें।

साधना प्रयोग

सर्वप्रथम स्नान कर शुद्ध सफेद धोती पहन कर पूर्व की ओर मुंह कर आसन पर बैठ जाएं, यदि सम्भव हो तो अपनी पत्नी को भी अपने दाहिने हाथ की ओर आसन पर बिठा दें, फिर अपनी चोटी को गांठ लगावें और बाएं हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ से अपने पूरे शरीर पर निम्न प्रोक्षण पढ़ते हुए जल छिड़कें जिससे कि शरीर पवित्र हो—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।
यः स्मेरत पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

फिर सामने जल का कलश चावल की ढेरी बना कर उस पर रख दें और उसके चारों तरफ कुंकुम या केशर की चार बिन्दियां लगा लें, और उसमें निम्न मंत्र पढ़ते हुए जल भरे—

गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरी जले स्मिन सन्निधं कुरु।।
पुष्करायानि तीर्थानि गंगायास्सरितस्तथा।
आगच्छन्तु पवित्राणि पूजाकाले सदा मम।।

फिर उस कलश में से जल लेकर संकल्प करें—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णु श्रीमद्‌भागवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणः द्वितीय परार्द्धेश्वेतवाराह कल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे (अपने शहर का नाम लें) **नगरे श्रावण मासे सोमवासरे मम** (अपना नाम व कामनाओं या इच्छाओं का नाम लें) **अमुक कामना सिद्धयर्थं साधना करिष्ये।**

इसमें जिन-जिन कार्यों की पूर्ति का विवरण दिया है या आपकी जो भी इच्छा है, उसका उच्चारण कर सकते हैं, या मन में बोल सकते हैं।

गणेश पूजन

फिर सामने स्टील या चांदी की प्लेट में कुंकुम से स्वस्तिक बनाकर गणपति को स्थापित करें, यदि गणपति नहीं हो तो एक सुपारी रखकर उसे गणपति मानकर उस पर जल चढ़ाकर पोंछकर, केशर लगाकर सामने नैवेद्य एवं फल रख दें, पुष्प चढ़ायें और फिर हाथ जोड़कर बोले—

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।

फिर गणपति को किसी अलग स्थान पर स्थापित कर दें और सामने पात्र में "मनोवांछित कामना सिद्धि" पैकेट में से "अद्वितीय मनोवांछित कामना सिद्धि यंत्र" को स्थापित करें, इससे पहले ही भगवान शिव के प्रामाणिक चित्र को फ्रेम में मंढवाकर रख देना चाहिए और उसे जल से धो कर पोंछ कर, केशर लगाकर, पुष्प माला पहना देनी चाहिए।

पात्र में मनोवांछित कामना पूर्ति शिव सिद्धि यंत्र के साथ-साथ साफल्य प्राप्ति रुद्राक्ष, कल्पवृक्ष वरद, कायाकल्प गोमती चक्र, ऋद्धि-सिद्धि यंत्र तथा मनोवांछित कामना सिद्धि विग्रह को भी रख देना चाहिए।

फिर शुद्ध जल में थोड़ा सा कच्चा दूध और गंगाजल मिलाकर 'नमः शिवाय' मंत्र का उच्चारण करते हुए इन सब पर जल चढ़ाएं, पतली धार से लगभग पांच मिनट तक चढ़ाते रहें, साथ ही दूध, दही घी, शहद, शक्कर मिलाकर पंचामृत से भी स्नान करावें फिर शुद्ध जल से धो लें, फिर इन सभी विग्रहों को बाहर निकाल कर शुद्ध वस्त्र से पोंछ ले और अलग पात्र में स्थापित कर लें, तत्पश्चात् इन सभी विग्रहों पर निम्न मंत्र पढ़ते हुए केशर और कुंकुम लगावें।

नमस्सुगन्धादेहाय ह्यवन्ध्यफलदायिने।
तुभ्यं गन्धं प्रदास्यामि चान्धकासुरभन्जन।।

इसके पश्चात् भगवान शिव पर और इन सभी यंत्रों पर अबीर, गुलाल और अक्षत चढ़ावें तथा उन्हें पुष्प और पुष्पमाला समर्पित करें।

तत्पश्चात् सामने अगरबत्ती व दीपक जलाकर नैवेद्य रखें तथा फल भी समर्पित करें। इसके बाद श्रद्धायुक्त दोनों हाथ जोड़कर निम्न स्तुति का पाठ करें।

वन्दे देवउमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणं।
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशुनापतिम्।।
वन्दे सूर्यशशांक वहि नयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं।
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम्।।

इसके बाद किसी भी माला से या मनोवांछित कामना सिद्धि पैकेट में जो रुद्राक्ष कंठा है, उसके द्वारा मंत्र जप करें, इसमें रुद्राक्ष माला का सर्वाधिक महत्व है यदि यह उपलब्ध न हो तो स्पटिक माला या मूंगा माला से मंत्र जप करें, इस में ग्यारह माला जप इन यंत्रों के सामने करना आवश्यक है।

ऊपर चार सोमवार का क्रम समझाया हुआ है, इन चारों सोमवारों में पूजा-विधान तो समान ही है जो ऊपर दिया गया है, पर इन चारों सोमवारों के लिए मंत्र अलग-अलग हैं जो कि निम्न प्रकार से हैं—

२५/७/६४ *प्रथम सोमवार को सम्पन्न किया जाने वाला मंत्र जप*

ॐ महाशिवाय वरदाय ह्रीं ऐं काम्य सिद्धि रुद्राय नमः।

१/८/६४ *द्वितीय सोमवार को सम्पन्न किया जाने वाला मंत्र जप*

ॐ लक्ष्मी प्रदाय ह्रीं ऋण मोचने श्रीं सर्व सिद्धिं देहि देहि शिवाय नमः।

८/८/६४ *तृतीय सोमवार को सम्पन्न किया जाने वाला मंत्र जप*

ॐ रुद्राय शत्रु संहारय क्लीं कार्य सिद्धाय महादेवाय फट्।

१५/८/६४ *चतुर्थ सोमवार को सम्पन्न किया जाने वाला मंत्र जप*

ॐ भवायदेवदेवाय सर्वकार्य सिद्धिं देहि देहि कामेश्वराय नमः।

ये सभी मंत्र अद्वितीय और महत्वपूर्ण हैं। यह हम लोगों का सौभाग्य है कि हमारे जीवन काल में ऐसा महत्वपूर्ण अवसर उपस्थित हुआ है जिसका हम पूरा-पूरा लाभ उठा सकते हैं।

प्रत्येक सोमवार को मंत्र जप करने के बाद इन सभी यंत्रों को अलग पात्र में रख देना चाहिए और नित्य इनके सामने सुबह शाम अगरबत्ती व दीपक लगाकर दिन में एक बार "ॐ नमः शिवाय" मंत्र की एक माला अवश्य फेरनी चाहिए।

२१ अगस्त १६६४ को श्रावण पूर्णिमा है, अतः इस दिन इन सिद्धि किए हुए यंत्रों को या तो पूजा स्थान में ही लाल वस्त्र बिछाकर स्थापित कर देना चाहिए या घर में किसी स्थान पर रख देना चाहिए, यदि यह सम्भव न हो तो समुद्र या नदी में विसर्जित किया जा सकता है, पर ज्यादा अच्छा यही होगा कि इन्हें अपने पूजा स्थान में रख दें या घर में किसी पवित्र स्थान पर स्थापित कर दे।

भगवान शिव तो सर्वाधिक दयालु और तुरन्त वरदान देने वाले महादेव हैं, अतः इन प्रयोगों एवं साधनाओं का फल तुरन्त प्राप्त होता है और साधक शीघ्र ही मनोवांछित सफलता प्राप्त करने में सफल हो पाता है।

इस प्रकार के प्रयोग के लिए रुद्राक्ष माला का सर्वाधिक महत्व है।

अद्भुत आश्चर्यजनक असाधारण शिवलिंग

श्रावण माह में जिस प्रकार के पूजन का महत्व है उसी प्रकार शिवलिंग स्थापन का भी महात्म्य माना गया है। कोई भी धर्मपरायण व्यक्ति शिवलिंग की स्थापना अवश्यमेव करता ही है। शिवलिंग शिव-शक्ति का संयुक्त प्रतीक है।

सामान्यतयः साधक पारद शिवलिंग एवं नर्मदेश्वर शिवलिंग को अपने घर में स्थापित करते हैं किन्तु शिवलिंग अन्य दुर्लभ वस्तुओं से भी निर्मित किए जाते हैं। गन्ध लिंग, फलोत्थ लिंग, नवनीतज शिवलिंग, मौक्तिक शिवलिंग आदि शिवलिंगों के अनेक उदाहरण है किन्तु इनमें से भी तीन प्रकार के शिवलिंग विशिष्टतम माने गए हैं — **"माणिक्य शिवलिंग, मुक्तक शिवलिंग एवं नीलम शिवलिंग"**। इनकी स्थापना श्रावण माह में करनी अनुकूल मानी गयी है।

मुक्तक शिवलिंग - मोतियों को परस्पर मिलाकर धागे से पिरोकर जिस शिवलिंग का निर्माण किया जाता है उसे मुक्तक शिवलिंग की संज्ञा दी गई और स्त्रियों को ऐसा शिवलिंग अखण्ड सौभाग्य देने में समर्थ होता है।

माणिक्य शिवलिंग - माणिक्य शिवलिंग प्राकृतिक शिवलिंग होता है और इसके स्थापन व पूजन से साधक प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है। एक प्रकार से यह सर्वसिद्धिदायक शिवलिंग है।

नीलम शिवलिंग - एक अत्यन्त दुर्लभ और प्रकृति का चमत्कार ही है जिसके द्वारा व्यक्ति कैसा भी राज्य संकट अथवा शत्रु भय हो उसका समापन करने में समर्थ होता है।

जी हाँ. . .!

का वार्षिक सदस्य बनने पर **"मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान"**

गौरवशाली हिन्दी मासिक पत्रिका
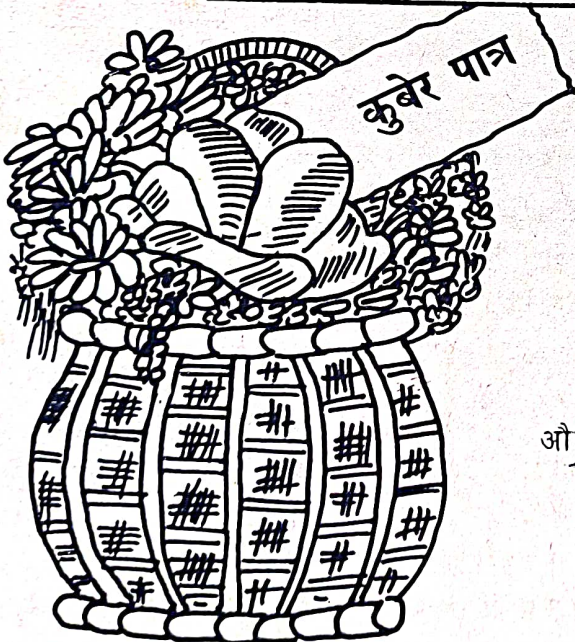
यही तो है हिन्दी जगत की वह मासिक पत्रिका जो आपको प्रदान करती है, स्वस्थ मनोरंजन के साथ- साथ अपने भारतीय ज्ञान की परम्परा. . . जिनका ठोस आधार है -- ज्ञात-अज्ञात शास्त्रों से ढूंढकर लाई गई एक से एक दुर्लभ और अचूक साधनाएं. . . जिनके द्वारा सदैव आपके जीवन में धन- सम्पदा, सुख-शांति और आनन्द की रस धारा बहती ही रहे. . . ज्योतिष, योग, आयुर्वेद, कथाएं, तंत्र-मंत्र के रहस्य, क्या कुछ नहीं, और ये सब प्रतिमाह निरंतर. . . आपको चिंतन और ज्ञान वर्धन की मिली-जुली दुनिया में ले जाती हुई. . .

वार्षिक सदस्यता शुल्क १५०/- ,
डाक खर्च सहित १६८/-

सम्पर्क

गुरुधाम
३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा
नई दिल्ली-३४, फोन-०११-७१८२२४८

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी
जोधपुर (राज.), फोन-०२९१-३२२०९

मंत्र-तंत्र-यंत्र
साक्षी युग परिवर्तन की **विज्ञान**

● इन्दर चन्द तिवारी
लखनऊ

औघड़ ने पीछा छुड़ाया

जहां तक मुझे याद पड़ रहा है यह नवम्बर का महीना था। हल्की-हल्की ठंडक शुरू हो चुकी थी। लखनऊ दूरदर्शन को प्रारम्भ हुए दो महीने ही हुए थे। दूरदर्शन का चौपाल अवधी का कार्यक्रम है। अवधी मेरे घर की जुबान है। माता-पिता सभी अवधी में ही बोलते हैं, फिर देहाती परिवेश से जुड़े होने के कारण उस वातावरण से जुड़ा होना स्वाभाविक है।

उन दिनों चौपाल में एक अवधी नाटक के प्रस्तुतीकरण की तैयारी चल रही थी। चौपाल के कार्यक्रम निष्पादक महोदय ने उसके निर्देशन के दायित्व के लिये मुझसे कहा। मैंने सहमति व्यक्त करते हुए उसके रिहर्सल आदि के विषय में जानकारी प्राप्त की।

— हां, पुराने हैदराबाद के एक मकान में फिलहाल रिहर्सल प्रारम्भ करा दिया है, चाहो तो चलकर देख लो कार्यक्रम निष्पादक महोदय ने उत्तर दिया।

— ठीक है, कल शाम को चलूंगा . . . आपके ही साथ।

और अगले दिन शाम को उनके साथ लखनऊ के पुराना हैदराबाद मोहल्ले में जा पहुंचा। यह मकान एक सामाजिक कार्यकर्ती महिला का था, जिनका अपना होम्योपैथिक का दवाखाना भी था। वे जनता को निःशुल्क चिकित्सा उपलब्ध कराती थीं। रिहर्सल उस समय जारी था। जिन महोदया के निवास पर यह रिहर्सल चल रहा था, वह उन सामाजिक कार्यकर्ती के यहां किरायेदार थीं, उनके पति विद्युत विभाग में एक उच्च पदाधिकारी थे। वह महिला स्वयं भी इस नाटक में एक महत्वपूर्ण भूमिका कर रही थीं। मेरा परिचय सब के साथ-साथ उस महिला से कराया गया। बातचीत के दौरान पता चला कि वह महिला एक अच्छी मंजी कलाकार है। लगभग चालीस के वय-वर्ण की लम्बी, छरहरी महिला कोई खास सौन्दर्य युक्त नहीं थी। कुल मिलाकर एक साधारण भारतीय महिला का रूप कहा जा सकता है। हां उसकी आंखें बड़ी गहरी थीं . . . रहस्य से भरी . . . कुछ पीली बल्कि भूरे रंग की।

मैं भी उस समय लगभग ४७ वर्ष का था, अतः मेरी ओर से कोई सन्देह नहीं था, फिर वह स्वयं एक उच्च पदाधिकारी की बाल-बच्चों वाली महिला थी।

पर नियति को कुछ और ही स्वीकार्य था . . . बल्कि मेरा दुर्भाग्य मेरे द्वार पर दस्तक दे चुका था और मैं किसी शैतान के वशीभूत हो उस द्वार तक पहुंच गया।

साधारण शिष्टाचार निभाते हुए मैंने दुआ-बंदगी की और रिहर्सल के निर्देशन में व्यस्त हो गया। अपने बुद्धि व विवेक के अनुसार अभ्यास कराया और सुधार किए। मेरे कार्य-व्यवहार से वह महिला भाव-विभोर हो प्रसन्नता और आवेग से भर उठी। मैं भी न जाने किस जादू के अधीन अपूर्व आनन्दानुभूति के सागर में डूबने-उतराने लगा। रिहर्सल के तीन-चार दौर के पश्चात् चाय-नाश्ता हुआ और हम सब विसर्जित हो गए। शालीनता और शिष्टाचार के साथ वह महिला मुझे द्वार तक विदा करने आई।

उनके बोलने पर मेरे कानों में जैसे संगीत लहरी बजने लगी। उनका बोलना, देखना, मुस्कराना मुझे किसी दिव्य संगीत के सागर में डुबोने लगा। आप कह सकते हैं कि इस अधेड़ अवस्था में मुझे जवानों का रोग लग गया था। वहां से चलने पर ऐसा लगा कि न जाने मैंने कितनी मदिरा का पान कर लिया है। उन दिनों मैं एक साधारण सी बाबू छाप सायकिल पर चलता था। मुझे ऐसा लगा कि मेरी सायकिल बिना पैड्ल मारे हवा में उड़ती जा रही हो।

अब आपको-अपने परिवार की ओर लिए चलता हूं। मेरी पत्नी का छठा भाव जिसे अंग्रेजी में 'सिक्सथ सेन्स' कहते हैं, किसी पूर्वजन्म की साधना के कारण असाधारण रूप से जाग्रत है। इस कारण वे दूर की वस्तुएं भी ऐसे देख लेती हैं जैसे हम और आप आमने-सामने कुछ देखते हों। घर पहुंचते ही उन्होंने मेरा चेहरा गौर से घूरा और प्रश्न किया कि-- कहां से

आ रहे हो।

इसका उत्तर बताने से पहले स्पष्ट कर दूं कि मैं इस मामले में पूर्णतया पत्नीव्रता हूं। मैंने सारा वृत्तान्त उनको यथावत् सुना दिया, पर उनकी अन्तर्दृष्टि ने भविष्य के मस्तक पर एक प्रश्न चिन्ह अंकित कर दिया। मैंने उस महिला की प्रशंसा के साथ अपना पक्ष भी निःस्वार्थ भाव से रख दिया, पर उनके मुंह से केवल यही शब्द निकले—

—यह औरत मेरा सर्वस्व छीन लेगी . . . मेरा घर बरबाद कर देगी।

—कैसी बात करती हो . . . मैंने अपने पक्ष को स्पष्ट करना चाहा . . . बड़ी पालिस्ड है, शिष्ट है . . . बाल-बच्चेदार है।

—यही शिष्टता की चिंगारी मेरा घर जलाकर राख कर देगी।

पर मुझे होश कहां, मैं तो सम्मोहन के वशीभूत हो चुका था। मैंने रिहर्सल का कार्य जारी रखा, पर सोते-जागते वही महिला मेरे दिलो-दिमाग पर छाई रहती। मैं कहीं भी जाने के लिए निकलता, पर मेरी सायकिल अनायास ही उसके घर की ओर खिंच जाती।

नाटक की रिकार्डिंग हुई, प्रसारण हुआ और प्रशंसा भी मिली। उस महिला की जब सहेलियों व पति के मित्रों ने उस नाटक को देखा तो सभी ने प्रशंसा के पुल बांध दिए। उस महिला के हर्ष का पारावार न था। अब उन्होंने अपनी बची-खुची शक्ति लगाकर पूर्णतः मुझे वशीभूत कर लिया . . . यों कहिए कि जैसे मुझे मुर्गा बना डाला हो। समय मिलते ही मैं सीधा उनके घर पहुंचता और घंटों चर्चा होती— सांस्कृतिक, सामाजिक सभी विषयों पर।

इधर पत्नी के रुख में बदलाव आ गया। वह महिला जिससे मेरा कभी कठोर वार्तालाप न हुआ हो, उससे मेरी तू-तू, मैं-मैं होने लगी। हम एक-दूसरे से दूर होने लगे, बात-बात पर झगड़ा-फसाद, कहा-सुनी, यूं कहिए कि घर का वातावरण ही विरोधी सा लगने लगा। घर, बाल-बच्चे सब पराये लगने लगे। मेरा जो कुछ था वह सब वही महोदया . . . उस से अधिक कुछ नहीं। स्थिति यहां तक पहुंच गई की सोते में यदि पत्नी का आंचल भी छू जाता, तो मैं चौंक कर उठ बैठता . . . जैसे किसी बिच्छु ने डंक मार दिया हो।

. . . सहसा ताजे रक्त की एक बूंद आटे में गिरी मैंने साधारण सी बात समझ कर गौर नहीं किया किन्तु सोचने को बाध्य हो गया, घर भी पक्का था और स्लैब भी पक्की थी।

पत्नी की रातों की नींद दुस्वार हो गयी . . .अन्धेरे में चमकती दो आंखें उसको तोड़कर रख गयीं मुझे भी ऐसा लगने लगा ज्यों पेट में बांयी ओर कोई पत्थर रखा हो। एक विचित्र सा रिश्ता बन गया था मेरे दर्द और उस महिला में. . . इधर दर्द उठा नहीं और मैं खींच कर सीधे उनके गली में . . .

जब कभी घर लौटता, तो पत्नी से झगड़ा प्रारम्भ हो जाता। पत्नी मेरे व्यवहार से दिन-रात दुःखी रहने लगी और मैं सम्मोहन के मादक ज्वर से पीड़ित घूम रहा था।

इस सम्बन्ध में एक दिन की घटना दृष्टव्य है। मेरी बेटी और पत्नी भोजन की तैयारी कर रही थीं, उस समय सुबह के लगभग दस बजे थे। मेरा घर पक्का है और स्लैब भी पक्की है। सहसा ताजे रक्त की एक बूंद आटे में गिरी, जिसे मेरी बेटी सान रही थी। पत्नी ने मुझे बुलाकर दिखाया, पर मैंने साधारण सी बात समझ कर ज्यादा गौर नहीं किया। पत्नी की रातों की नींद दुःस्वार हो गई, उनको रात के अन्धेरे में उल्लू की दो आंखें सी चमकती दिखाई पड़तीं और आंखों-आंखों में ही उनकी रात कट जाती।

मेरी पत्नी की व्यथा अब असहनीय हो चली थी। इसी बीच अक्सर मेरे पेट में बायीं ओर ऐसा लगने लगता, जैसे पत्थर सी कोई चीज रखी हो, धीरे-धीरे उसमें तेज दर्द भी शुरू हो गया। उस पीड़ा में भी एक अनुभूति होती, जैसे ही दर्द शुरू होता, मैं भाग कर उस महिला के यहां पहुंच जाता।

इधर पत्नी को बिना बताए ही भाषित हो जाता कि मैं उस महिला से कब-कब मिला। पेट में दर्द उठने पर मेरी पत्नी कुछ पढ़कर मेरे पेट पर हाथ रख देती, तो उन्हें अनेक भयानक भूत-प्रेत जैसे चेहरों के साथ उस महिला की आकृति भी दिखाई पड़ती। वे उनको नष्ट करतीं, पर जहां मैं उस महिला के यहां जाता, पुनः क्रम शुरू हो जाता।

पत्नी को किसी ने बताया कि गोमती पार क्षेत्र में एक सज्जन हैं, जिन्हें लोग मुखिया कहते हैं और जो किसी भी प्रेत बाधा को दूर करने में सक्षम हैं।

एक दिन वह मुझे बताये बिना उनके पास पहुंच गई। मुखिया ने कपूर जलाकर कुछ प्रक्रिया की और कुछ लौंग फूंक कर, इस निर्देश के साथ पत्नी को दी कि उन्हें गोमती में प्रवाहित कर दिया जाए। पत्नी ने ऐसा ही किया।

लौंग को पानी में डालते ही उन्हें ऐसा लगने लगा जैसे पैरों के नीचे से पत्थर खिसक रहे हों और कोई उन्हें पानी में फेंकने का प्रयास कर रहा हो। घर आने के लिए वे जैसे ही बस में बैठीं, सर्वत्र अंधकार सा लगने लगा।

मैं उन दिनों रेल-डाक व्यवस्था के सार्टिंग ऑफिस के अमीनाबाद कार्यालय में कार्यरत था। अमीनाबाद उतरकर श्रीमती जी मेरे कार्यालय की ओर चलीं, पर जैसे सड़क पार करने के लिए उनके पैर उठ ही न रहे हों। दो मुस्लिम महिलाओं ने सहारा देकर उन्हें सड़क पार करवाई। वे मेरे कार्यालय में आकर बैठ गईं। मैंने सहज भाव से उन्हें खुर्शेद बाग स्थित एक अभिन्न मित्र के यहां जाने को कहा, पर लोगों की सलाह पर मैं स्वयं ही उन्हें वहां छोड़ने चला गया। इत्तिफाक से वहां पहले से ही एक तांत्रिक महोदय उपस्थित थे।

मेरी शक्ल देखते ही उन्होंने कुछ भांपते हुए मेरे मित्र की पत्नी से चावल मांगे और चौदह चावल पढ़कर यह निर्देश दिया कि रात को इन चावलों को पलंग पर बिछाकर सो जाना। प्रातः पत्नी ने बताया कि रात में उन्हें नींद तो नहीं आई, पर बेहोशी सी छाई रही। साथ ही छह माह तक खूनी पेचिश भी हुई और काफी इलाज के बाद ठीक हो पाई। इसके बाद आलमबाग के दुर्गा मन्दिर के पंडित जी ने उपचार किया।

उन महोदया के यहां मेरा आना-जाना जारी रहा और वहां जाते ही मेरी मति भ्रष्ट हो जाती, घर में कहर बरपा हो जाती, यहां तक कि मेरी निजी जिन्दगी भंवर में फंस चली थी।

वह होली का दिन था। घर पर कुछ महिलाएं पत्नी से मिलने आईं। इतने में एक औघड़ कहीं से आ गया, उसने पत्नी को पास बुलाया, पर आई हुई महिलाओं ने कहा इसे भिक्षा दो और जाने दो, यह सुनकर औघड़ बिगड़ उठा—

—चुप रहो, तुम लोग क्या जानो इसे कितनी पीड़ा है . . . वह इसके मर्द को अपने वश में किए है और इसको मार डालना चाहती है।

"पत्नी यह सुनकर चौंक उठी।" —"ला गुझिया खिला" बाबा ने कड़क कर कहा।

मेरी पत्नी ने उसे दो गुझिया दी। --"जा और ला"

और मेरी पत्नी ने दो गुझिया उसे और दी, पर अबकी बार उसने गाली बकते हुए वह गुझिया हवा में उछाल दी तो वे गायब ही हो गई, मानो उसे हवा खा गई हों।

--"जा अब कभी नहीं जायेगा उसके पास," कहकर बाबा चल दिया।

—"महाराज, फिर दर्शन दीजियेगा," पत्नी ने निवदेन किया।

—"नहीं, अब कभी नहीं आऊंगा" कहकर बाबा वहां से चला गया पर आगे जाकर एकाएक न जाने वह कहां गायब हो गया।

वह दिन है और आज का दिन, मैं उन महोदया के घर क्या, उसके आस-पास से भी न गुजर सका . . . ऐसा लगा कि मैं किसी दुःस्वप्न से जाग गया हूं।

❋

औघड़ साधना सिद्धि

संसार की सर्वाधिक तीव्र साधना पद्धति औघड़ साधना पद्धति है। औघड़ साधना के लिए पहले औघड़ सिद्धि प्राप्त करनी आवश्यक होती है तभी कोई औघड़ प्रयोग सफल हो सकता है **यह रहस्य मुझे पूज्यपाद गुरुदेव के शिष्य औघड़ कपिलेश्वर बाबा से प्राप्त हुआ था।** इसके लिए आवश्यक है कि साधक किसी भी अमावस्या की रात्रि में एक छोटा सा प्रयोग सम्पन्न करे। अमावस्या की रात्रि को किसी श्मशान से थोड़ी सी मिट्टी लाकर अपने आसन के नीचे बिछाए और अपने सामने काले वस्त्र पर **कापालिक मंत्रो से सिद्ध कोई भी शिवलिंग** स्थापित कर पश्चिम की ओर मुंह करके लगभग छः घण्टे तक **काले हकीक की माला** से निम्न मंत्र जप करें। इसमें मंत्र जप की संख्या निर्धारित नहीं है। अन्दाज से लगभग छः घण्टे मंत्र जप करना पर्याप्त है। मंत्र जप रात्रि १० से ४ के मध्य ही करें।

मंत्र -

ॐ वीर भूतनाथाय औघड़ महेश्वराय रक्ष रक्ष हुं हुं फट्

यह साधना पूर्ण निडरता के साथ करनी आवश्यक है और सम्पूर्ण साधना काल में भगवान शिव के रौद्र रूप का स्मरण करता रहे यदि सम्भव हो तो इस प्रयोग को घर में न करके श्मशान स्थल में अथवा किसी शिवालय के करीब ही करें। साधना के बाद सामग्री विसर्जित कर दें और श्मशान की मिट्टी को भी घर से काफी दूर फेंक दें तथा स्नान कर लें।

साबर मांत्रोक्त अप्सरा सिद्धि शीघ्र सरल सम्पूर्ण

साबर मंत्र और अप्सरा साधना यह कुछ लोगों को अटपटा लग सकता है क्योंकि साबर मंत्रों के रचयिता तो पूर्ण हठयोगी हैं, लेकिन जो साबर मंत्रों के इतिहास एवं उनके रचयिताओं के इतिहास से परिचित हो, उनके लिए हमें कोई भी आश्चर्य नहीं, क्योंकि वे जानते हैं कि किस प्रकार नाथ सम्प्रदाय अत्यन्त पूर्व में एक वाम मार्गीय सम्प्रदाय ही था।

उड़ीसा के श्री शैल पर्वत से सम्बन्धित चौरासी सिद्धों की कथा से सभी परिचित हैं, जिन्होंने भोग को ही मुक्ति का उपाय बताया और खुल कर पंचमकारों का सेवन किया। ऐसा ही चौरासी सिद्धों में एक प्रमुख सिद्ध सरहपाद की शिष्य परम्परा में आगे चलकर योगी जालन्धर नाथ हुए, जिन्होंने अपना पूर्ण स्वतन्त्र नाथ सम्प्रदाय स्थापित किया, जिसमें आगे चलकर मत्स्येन्द्रनाथ एवं गोरखनाथ हुए। गोरखनाथ ने ही नाथ सम्प्रदाय में से वामाचार हटाकर पूर्णरूप से इसे हठयोग का रूप दिया।

भोग को जीवन में अत्यधिक महत्व देने के कारण यह स्वाभाविक था कि नाथ सम्प्रदाय के पूर्ववर्ती सभी योगी

भारतीय साधना की कोई भी पद्धति लें उसमें अप्सरा साधना का वर्णन मिलता ही है, जिससे सिद्ध होता है कि अप्सरा साधना जहां अत्यन्त प्राचीन है वहीं प्रामाणिक भी।

साबर साधना द्वारा अप्सरा सिद्ध करने में विशेष बात यह है कि शीघ्र सिद्धि के साथ-साथ साधक को अप्सरा का जीवन - पर्यन्त साथ भी मिलता है।

अप्सरा साधनाओं, यक्षिणी साधनाओं एवं किसी भी प्रकार की इतर साधनाओं को प्रमुखता देते थे। केवल उनके काल तक ही नहीं बाद में भी गुरु गोरखनाथ की परम्परा में आगे चलकर अनेक सिद्धों ने तंत्र और भोग का सम्मिश्रण कर नए-नए साधना सूत्र ढूंढे और उनके ये सूत्र किसी भी पद्धति से अधिक तीव्र व प्रामाणिक रहे, उदाहरण स्वरूप गोरखनाथ के ही शिष्य

करवाल भैरव हुए जिन्होंने भैरवी चक्र सम्प्रदाय को प्रारम्भ किया और अपने ग्रंथ 'आनन्द मंगल' में स्त्री के माध्यम से स्वर्ण बनाने की कुछ क्रियाओं को स्पष्ट किया, जिसमें से भैरवी साधना, भैरवी पूजन और भोग भैरवी क्रियाएं विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

ऐसे समस्त सिद्धों ने अपने ग्रंथों में उन लक्षणों का वर्णन किया, जिनसे युक्त स्त्री के माध्यम से ऐसी क्रियाएं सम्पन्न हो सकती हैं अथवा उनके अभाव की दशा में उन्होंने कतिपय अप्सरा साधनाओं को प्रमुखता दी। उनकी यह परम्परा और प्रयोग की लालसा केवल विषय विशेष तक अथवा स्त्री के माध्यम से स्वर्ण निर्माण तक ही सीमित नहीं रही, वरन् और भी आगे बढ़कर उन्होंने उन अप्सराओं की साधना पद्धतियां खोजीं जिनकी साधना पद्धति अन्य रूप में प्रचलित थी। यह एक प्रकार से उनका हठ था और उनकी परम्परागत तंत्र पद्धति को चुनौती थी। इसके माध्यम से उन्होंने स्पष्ट किया कि वे उन अप्सराओं को प्रकट कर सकते हैं जो अपने-आप में सौन्दर्य की साकार मूर्ति बताई गई हैं।

प्रमुख अप्सराओं के नाम के मध्य तिलोत्तमा का नाम उफनते यौवन की साकार मूर्ति के रूप में वर्णित किया गया है। उर्वशी, रम्भा, मेनका, घृताची सदृश्य उच्चकोटि की अप्सराओं के मध्य तिलोत्तमा का भी स्थान विशेष और अनिन्द्य सौन्दर्य का प्रतिमान है ही। सुतवां अण्डाकार चेहरा, सामान्य से कुछ बड़ी लेकिन बोलती आंखें, हल्का सा सुनहरापन लिए खिलता हुआ गोरा रंग, रसीले अधर और गढ़ी हुई चिबुक ... इन्हीं का सम्मिलित नाम है तिलोत्तमा।

सामान्य से कुछ लम्बी देह यष्टि, और सांचे में ढला हुआ सारा बदन, जिस पर यौवन की लालिमा हल्की सी उत्तेजना के कारण जगमगा रही हो, और सारा जिस्म एक अनोखी सी मादकता में भीगा हो।

सुडौल वक्ष-स्थल, जिसकी गठन से किसी भी साधक के दिल में सनसनी भर जाए और जिन पर कौंधती हुई सुनहरी लड़ियों से किसी का भी ध्यान उन उन्नत बिन्दुओं की ओर जाने को बाध्य हो ही जाए। सीधे, सपाट रोम रहित नाभि प्रदेश, जिसकी प्रत्येक पग में थिरकन हो, यौवन के गीत गा रही हो, ऐसी ही सौन्दर्यवती तिलोत्तमा निस्सन्देह अपने संग की अप्सराओं के मध्य एक विशिष्ट स्थान प्राप्त करने की स्वामिनी है ही।

कौंधती हुई सुनहरी लड़ी जो उन पर दृष्टि टिकाने को विवश ही कर दे और दृष्टि जहां से फिसलकर चली जाए उस रोम रहित नाभि प्रदेश पर . . .

. . . उन्नत नितम्ब प्रदेश, और कदली वृक्ष के नव पल्लवों की ही भांति शरद की सुनहरी धूप में कोमल आभा देती सुडौल और रोम रहित भारी जंघाएं, जिनकी कोई उपमा उनकी मासंलता में न समा रही हो। सम्पूर्ण देह यौवन की नृत्य मुद्राओं को प्रदर्शित करता हुआ जिसका उद्दाम नर्तन देखना तो सचमुच सौभाग्यशाली साधकों के जीवन की ही घटना हो सकती है। और इसी सौभाग्य के साक्षी रहे नाथ योगी, उन्होंने अपने मंत्र बल, साधनात्मक बल और पौरुष के दम पर न केवल इन विशिष्ट अप्सराओं को प्रकट होने को बाध्य किया वरन् उनके यौवन का उपभोग कर यह स्पष्ट किया कि यदि साधक चाहे तो वह भी अपने जीवन में इन्द्र से कम वैभव नहीं एकत्र कर सकता है।

सच तो यह है कि अप्सरा साधनाओं की आवश्यकता गृहस्थ के जीवन में ही सर्वाधिक है क्योंकि जीवन में भोगयुक्त रहना गृहस्थ के द्वारा ही तो सम्भव होता है।

ऐसी ही अनके साधनाओं में से एक विशिष्ट साधना, जो तिलोत्तमा के प्रत्यक्षीकरण से सम्बन्धित है उसका विवरण मैं आगे की पंक्तियों में प्रस्तुत कर रहा हूं, जिसके माध्यम से मेरे कथन की प्रामाणिकता स्पष्ट हो सकती है। यद्यपि प्रारम्भ का कार्य, जब इन साधनाओं की रचना की गई वह भिन्न था और साधक समाज से कट कर अपने विशिष्ट ढंग से इनकी सिद्धि करते थे। जबकि आज ऐसा नहीं रह गया है और न ऐसा आवश्यक ही है कि इन साधनाओं को समाज से अलग हटकर, एकान्त में बैठकर सिद्ध किया जाए। सच तो यह है कि अप्सरा साधनाओं की आवश्यकता गृहस्थ के जीवन में ही है, क्योंकि जीवन में भोगयुक्त रहना तथा जीवन के सभी सुखों का आस्वादन करना केवल गृहस्थ के द्वारा ही सम्भव होता है, सौन्दर्य की यथार्थ परिभाषा और सौन्दर्य का प्रत्यक्षीकरण उसके लिए ही आवश्यक होता है। काल के परिवर्तन के साथ नाथ योगियों के परम्परागत उपायों के स्थान पर यंत्रों के विधान रचे गए, **किन्तु नाथ योगियों की यह विशेषता थी कि वे प्रकृति के सम्पर्क में रहने के कारण कुछ ऐसी जड़ी अथवा फल अपने पास रखते थे जिसके माध्यम से वे साधनाओं में सिद्धि शीघ्र ही प्राप्त कर लेते थे।**

प्रस्तुत साधना में भी ऐसा है, परम्परागत अप्सरा यंत्र के साथ-साथ चन्द्रप्रिया नामक जड़ी एक आवश्यक सामग्री होती है, जिसको साधना स्थल पर

(शेष भाग ९२ पर)

राजनीतिक भविष्य एवं शेयर मार्केट

विगत कुछ महीनों से चली आ रही उथल-पुथल समाप्त होगी एवं देश में परस्पर सौहार्द का वातावरण प्रबल होगा। अनेक दोहरे चरित्र वाले प्रमुख व्यक्तित्व अपनी विश्वसनीयता खोयेंगे तथा समाज का प्रमुख वर्ग जातिगत व धर्मगत राजनीति से ऊबकर आपसी मेल-मिलाप को ही प्रश्रय देगा। विघटनकारी बाह्य शक्तियों को पर्याप्त जनआधार नहीं मिलेगा और सम्भव है वे अपनी असफलता से असन्तुलित होकर कोई गम्भीर घटना भी पूर्वी भारत में घटित करें, किन्तु व्यापक स्तर पर असफल ही सिद्ध होंगे। सीमा पर चला आ रहा तनाव हल्का पड़ेगा। अन्तर्राष्ट्रीय आलोचनाओं से पाकिस्तान अपनी विघटनकारी गतिविधियों को अत्यन्त सीमित करने के लिए विवश होगा।

कांग्रेस (आई) के भीतर उथल-पुथल प्रबल होगी। श्री नरसिंहराव की लोकप्रियता पार्टी में कम होगी। प्रकटरूप से वे ही सर्वोच्च रहेंगे किन्तु आन्तरिक रूप से श्री अर्जुन सिंह, श्री राजेश पायलट और श्री प्रणव मुखर्जी का वर्चस्व ही बढ़ेगा। सत्ता संघर्ष भी इन्हीं तीनों के मध्य चलता रहेगा। भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री वी० पी० सिंह एकाएक तीव्रता से लोकप्रियता अर्जित करेंगे तथा उनके नेतृत्व में पार्टी के सभी वरिष्ठ राजनेता एकजुट होकर पार्टी के संगठन को महत्वपूर्ण स्थिति में पहुंचा देंगे। एक प्रकार से देश उनकी ओर वैकल्पिक प्रधानमंत्री के रूप में देखेगा। श्री मुलायम सिंह सर्वाधिक अलोकप्रिय एवं असफल मुख्यमंत्री के रूप में सिद्ध होंगे तथा गम्भीर संकटों में उलझेंगे। राज्यों के स्तर पर इस माह विशेष राजनीतिक उथल-पुथल होने की सम्भावना कम ही है। देश का ध्यान राष्ट्रीय स्तर पर अधिक केन्द्रित रहेगा। राष्ट्र में दृढ़ता आयेगी व विश्व में प्रतिष्ठा बढ़ने के साथ-साथ, विश्व व्यापार में भी भारत की उल्लेखनीय प्रगति अंकित होगी।

अमेरिका का रुख भारत के प्रति कूटनीतिक रूप से मैत्रीपूर्ण होगा। इस माह वार्ताओं के महत्वपूर्ण दौर भी सम्पन्न होंगे। इटली में राजनीतिक हिंसा व्याप्त होगी। मिस्र व अफ्रीका के विभिन्न देशों में भी राजनीतिक कारणों से हिंसक घटनाओं की प्रबलता रहेगी।

शेयर मार्केट

इस माह बम्बई शेयर मार्केट में स्पेसिफॉइड शेयर्स का बोलाबाला नहीं रहेगा इसके स्थान पर नॉन स्पेसिफॉइड शेयर्स अधिक जोर पकड़ेंगे। स्पेसिफॉइड शेयर्स में प्रथम स्तर पर ग्लैक्सो, जे० के० इन्डस्ट्रीज, एस० के० एफ० ही अच्छा व्यवसाय देंगे। द्वितीय स्तर पर रेमण्ड, वोल्टास, टिस्को एवं जुआरी का नाम उल्लेखनीय है।

नॉन स्पेसिफॉइड शेयर्स में डी० सी० एम० टॉय, एच० एम० टी०, लक्मे, मोदी अल्कलीज एवं वी० एक्स० एल० इण्डिया का नाम प्रमुख है।

यह माह दवा उद्योग एवं केमिकल्स पर आधरित उद्योगों के लिए विशेष लाभदायक है और इनसे सम्बन्धित शेयर्स अभी कई माह अपना वर्चस्व बनाए रखेंगे।

नॉन स्पेसिफॉइड शेयर्स में द्वितीय स्थान पर बी० एच० ई० एल०, बॉयर, कैम्लिन, सिपला, चम्बल फर्टीलॉइजर, फेरो एलॉय, गुजरात गोदरेज, हल्दीलिया कैमिकल्स, मिल्क फूड के नाम उल्लेखनीय है। तृतीय स्तर पर हीरो होण्डा, होटल लीला का नाम उल्लेखनीय है। जबकि कैल्विनेटर, मोदीजिरॉक्स, मोदी सीमेंट के भाव में कई बार उतार-चढ़ाव आयेगा, फिर कुल मिलाकर लाभ का ही सौदा रहेगा।

इसके अतरिक्त एशियन होटल, लार्सन एण्ड टुब्रो, यू० टी० आई० मास्टर शेयर्स, अंसल प्रॉपर्टीज, फ्लेक्स इन्डस्ट्रीज, कजरिया सिरेमिक्स, लुपिन केमिकल्स, नाहर शुगर, एवं रिलायंस पेट्रोकेमिकल्स की दिल्ली व उत्तरी भारत में स्थिति मजबूत रहेगी।

उत्तरी भारत एवं दिल्ली में आई० टी० सी० होटल्स, जयमाता रोल्ड ग्लास, चांद वनस्पति, चम्बल फर्टीलाईजर, यूनाईटेड लीजिंग, योगी फॉर्मेसी, जी० टेली फिल्मस्, विरमानी स्टील, स्ट्रिप एवं रेमण्ड सिन्थेटिक्स की स्थिति द्वितीय स्तर पर महत्वपूर्ण व उल्लेखनीय रहेगी।

सिद्धाश्रम दिवस महोत्सव

स्वामी अभयानन्द जी ऐसे सिद्ध योगियों में से हैं, जो तीन हजार वर्ष की आयु प्राप्त करने के बाद भी चिरयौवनमय है, उनसे सिद्धाश्रम में क्रियान्वित कई घटनाओं और उत्सवों में से एक महोत्सव - दिव्य पात समारोह का आंखों देखा विवरण हमें प्राप्त हुआ जो कि पत्रिका- पाठ्कों के लिये वरदान स्वरूप है। पत्रिका-पाठकों के लिये एक महत्वपूर्ण और जीवन में उतारने वाला आलेख . . .

यह मानव जीवन क्षण भंगुर है, हम व्यर्थ में ही घमण्ड करते हैं, कि हम स्वस्थ है, सम्पन्न है, यौवनमय एवं सुन्दर है, परन्तु यह सब कुछ तो नाशवान है, कालचक्र के निरन्तर घूमते रहने से यौवन वृद्ध हो जाता है, सुन्दरता झुर्रियों मे बदल जाती है, और व्यक्ति का शरीर एक मुट्ठी राख में परिवर्तित हो जाता है अधिकांश व्यक्ति इस मुट्ठी भर राख की परिणति की ओर ही अग्रसर है बहुत ही कम ऐसे व्यक्ति है, जो अपने जीवन के मध्यकाल में ही उच्चकोटि का निर्णय ले लेते हैं, और उस निर्णय को क्रियान्वित करने के लिये समर्थ गुरु के सान्निध्य में साधना सम्पन्न कर सशरीर सिद्धाश्रम जाने में सक्षम हो पाते हैं ऐसे ही व्यक्ति सही अंर्थों में पुरुष है, जो अपने जीवन-पथ का निर्माण स्वयं करते है, जो उस अलौकिक दृश्य के भागीदार बनते हैं, जो अपने-आप में अद्वितीय है, हजारों-लाखों की भीड़ में वे अलग से ही पहचाने जा सकते हैं।

यद्यपि सृष्टि के प्रारम्भिक काल से सिद्धाश्रम का उल्लेख प्राप्त होता है। इसकी मिट्टी, चन्दन की तरह ललाट पर लगाने योग्य है, तपस्या से सारा आश्रम अपने-आप में सुगन्धित दिव्य और मनोहारी है, जहां का तृण-तृण मुस्कराता है, जहां न मुरझाने वाले पुष्पों से सारा आश्रम सौरभमय बना रहता है, चिरयौवनमयी साधिकाओं और साधकों से जहां का वन-प्रांतर कहकहों से गुंजरित रहता हैं, ऐसे आश्रम का उल्लेख लगभग सभी उच्चकोटि के ग्रंथों में पाया जाता है, परन्तु सामान्य जनसाधारण की दृष्टि और ज्ञान से यह आश्रम अछूता ही बना रहा है, इसका कारण यह है, कि यहां के साधक अपने-आप में लीन रहे, जनसाधारण से उसका न तो सम्पर्क था, और न वे इसके लिये लालायित रहे।

परन्तु पिछले तीन सौ वर्षों में एक महत्वपूर्ण निर्णय क्रियान्वित हुआ, जिसमें निर्णय लिया गया कि जनसाधारण को इस आश्रम के बारे में पूरा-पूरा ज्ञान होना आवश्यक है, प्रयत्न यह हो कि यहां से उच्चकोटि के योगी और साधक जन-साधारण के मध्य में जायें, उन्हीं के बीच उन्हीं के बनकर उन्हीं की तरह रहें, और भारत की दिव्य साधनाओं और विद्याओं को जन-साधारण में प्रचलित करें, इस निर्णय के फलस्वरूप सिद्धाश्रम के कई महापुरूष इस रूप में रहे, उन्होंने यथासम्भव इस प्रकार की साधनाओं से जन-साधारण

को परिचित कराया, यद्यपि इस कठोर भूमिका के लिये उन-उन लोगों को जरूरत से ज्यादा संत्रास, अपमान, दुःख, और वेदना झेलनी पड़ी, परन्तु फिर भी उन्होंने पूरे धैर्य के साथ सिद्धाश्रम की परम्पराओं और आज्ञाओं का निर्वाह किया। यज्ञों और साधनाओं के माध्यम से उन्होंने जन-साधारण को इस अद्वितीय आश्रम के बारे में जानकारी दी, परन्तु फिर भी यदि पिछले तीन सौ वर्षों का आकलन किया जाय तो ज्ञात होता है, कि सामान्य व्यक्ति अत्यधिक तुच्छ बातों के लिये प्रयत्नशील रहा है। सन्देह, भ्रम और बुद्धिवादिता उन पर जरूरत से ज्यादा हावी रही है, प्रयत्न करने पर भी वे दिग्भ्रमित है, दृढ़ता, एकाग्रता और सर्वस्व-समर्पण की उनमें न्यूनता है, फलस्वरूप बहुत ही कम जनसामान्य अपने पुरुषार्थ और प्रयत्नों से इस आश्रम तक पहुंच सके, पर पहुंचने के बाद उन्होंने अनुभव किया कि यह जीवन अत्यन्त महत्वपूर्ण है, जो क्षुद्र वस्तुओं-पैसा, पद आदि के पीछे भागने के लिये नहीं है, अपितु इस प्रकार के आश्रम तक पहुंचने के लिये है, जो अपने-आप में सर्वाधिक महत्वपूर्ण और अद्वितीय है।

यहां साधकों को उन साधनाओं में दीक्षित किया जाता है, जो उच्चकोटि की कही जाती हैं। ये ऐसी साधनायें है, जो मानव को ईश्वर प्राप्ति में सहायक होती है, प्रकृति पर पूर्णतः नियन्त्रण स्थापित करने में सहयोगी होती है, इनके माध्यम से व्यक्ति काल के अनवरत प्रवाह भूत, वर्तमान, भविष्य-को देख पाने में समर्थ होता है, वह रोग, वृद्धावस्था, एवं मृत्यु से ऊपर उठ जाता है, यहां आने पर इन साधनाओं के माध्यम से उसे उच्चकोटि की अनिर्वचनीय सिद्धियाँ और अतुलनीय मानसिक शांति प्राप्त होती है, उनके जीवन में हंसी, मुस्कराहट, ममत्व, प्रेम और माधुर्य का स्रोत प्रवहित होने लगता है, एक-एक क्षण सार्थक हो जाता है, उच्चकोटि के मृत्युंजयी योगियों के चरणों में बैठना, उनसे वार्तालाप करना, उनके द्वारा प्रवचनों को सुनना, साधक एक ऐसा लाभ वह प्राप्त करता है, जिसकी अपने-आप में कोई तुलना नहीं है।
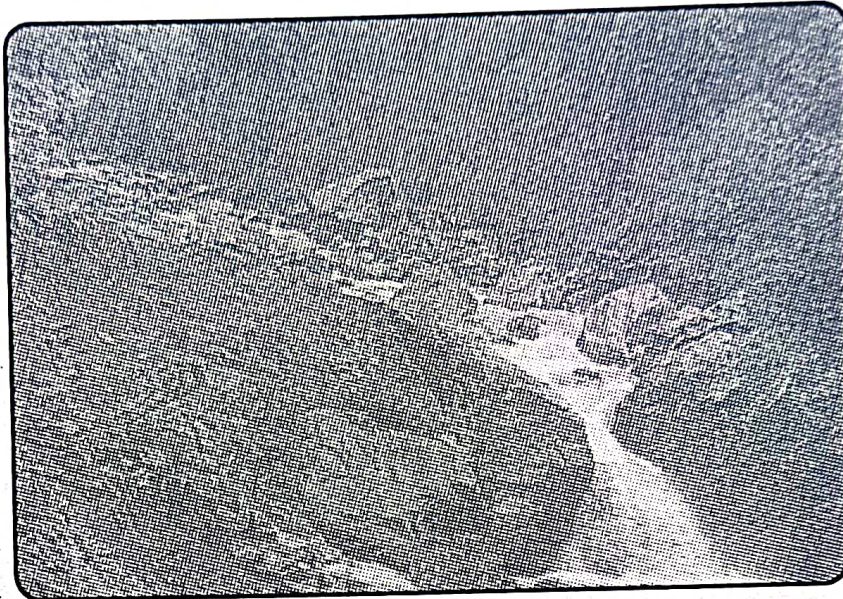
यह आश्रम एक ऐसा दिव्य स्थान है जिसको शब्दों में बांधना सम्भव ही नहीं है, मीलों लम्बा-चौड़ा आश्रम, जिसके एक ओर धवल बर्फ से ढका कैलाश पर्वत है, तो दूसरी तरफ सिद्धयोगा झील का पारदर्शक जल, जिसमें स्नान करने पर स्वतः ही रोग समाप्त हो जाते हैं, जिनके किनारे साधिकाओं एवं अप्सराओं के हास्य-विनोद, किलोलें, मुस्कराहटें और खिलखिलाहटें हैं तो दूसरी ओर ध्यान में लीन योगियों के पुण्य दर्शन सहज सम्भव हैं, जिनके दिव्य शांत एवं तेजस्वी चेहरों से अनिर्वचनीय प्रकाश झरता रहता है, जिन्हें मृग श्रावक बैठे-बैठे टुकुर-टुकुर निहारते रहते हैं, जहां की पर्णकुटियाँ अपने-आप में दिव्य है, जहां के साधना स्थल मनोहारी है, जहां का कण-कण आह्लादित और उल्लास से ओतप्रोत है। यह हमारी पीढ़ी का सौभाग्य है, कि हमारे बीच में, हमारे निकट देव-दुर्लभ ऐसा आश्रम विद्यमान है, ऐसे समर्थ सिद्धाश्रम के योगी और साधक विद्यमान है, जिनके चरणों बैठकर जीवन के रहस्यों की गुत्थियां सुलझाने में सक्षम हो सकते हैं, फिर भी यदि हम अपने संकीर्ण घेरे में, तुच्छ मनोवृत्तियों, संदेह, अविश्वास तथा भ्रम के कटघरे में ही आबद्ध रहें तो हमारा इससे बड़ा दुर्भाग्य और क्या हो सकता है?

यहां सिद्धाश्रम में साधकों को उच्च महत्वपूर्ण साधनायें सम्पन्न कराई जाती है, यहां एक निश्चित स्तर को प्राप्त करने के बाद उन साधकों का **"दिव्य पात"** सम्पन्न किया जाता है, जिसके माध्यम से वे साधक अमरत्व और अमृतत्व का उपभोग कर सकते हैं और अद्वितीय साधनाओं में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

'सिद्धाश्रम-दिवस' का पुण्य प्रभात। आज चारों ओर एक विशेष हलचल व्याप्त थी, छः विशिष्ट साधकों को परम पूज्य स्वामी सच्चिदानन्द जी के द्वारा 'दिव्य पात' होना था, यह उन साधकों के लिये एक अपूर्व अवसर था, इनमें तीन स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी के, दो स्वामी गुणातीतानन्दजी के तथा एक मेरा शिष्य था, जो आज इस स्तर तक पहुंच सके थे, कि वे महायोगी सच्चिदानन्द जी के द्वारा दिव्यपात प्राप्त कर सकें, हम लोगों के लिये तो यह महत्वपूर्ण था ही, पर उन साधकों के लिये तो जीवन का यह एक अद्वितीय अवसर था, एक अनिर्वचनीय दिवस था, जबकि वे ब्रह्म से साक्षात्कार करने जा रहे थे, चारों ओर एक विशेष हलचल, एक विशेष आह्लाद, एक विशेष दिव्यता प्राप्त थी, सिद्धयोगा झील के पूर्वीय पार्श्व में परम्परानुसार समारोह आयोजन की व्यवस्था

(शेष भाग पृष्ठ ५२ पर)

अपने प्रकट स्वरूप में भी और अपने वरदायक स्वरूप में भी. . . लक्ष्मी का प्रत्यक्षीकरण तो प्रत्येक स्थिति में सौभाग्य ही होता है। एक सावर पद्धति, जैन तंत्र पर आधारित. . .

साधना माध्यम से सम्भव है

प्रत्यक्ष लक्ष्मी सिद्धि

यदि दो टूक शब्दों में पूछा जाए कि जीवन का सौन्दर्य क्या है, जीवन की सार्थकता क्या है, तो निःसंकोच उत्तर दिया जाना चाहिये — लक्ष्मी। यही जीवन का परम सत्य है क्योंकि इसके अभाव में फिर जीवन का और विशेषकर गृहस्थ जीवन का कोई अर्थ रह ही नहीं जाता। केवल गृहस्थ जीवन तक ही नहीं वरन् लक्ष्मी का अर्थ व्यापक होता हुआ जीवन के प्रत्येक पक्ष, प्रत्येक ढंग और प्रत्येक शैली को अपने अन्तर्गत ले ही लेता है, क्योंकि इसी से जीवन में गतिशीलता सम्भव होती है, कामनाओं की पूर्ति सम्भव होती है तथा उन सभी स्थितियों को जीने की आधार भूमि बनती है, जिससे मानव अपने-आप को सुखी व सन्तुष्ट बना सकता है।

यदि जीवन के परम सत्य एवं लक्ष्य को एक पल के लिए अलग कर दें और फिर किसी व्यक्ति से पूछें कि वह सारी भाग-दौड़, परिश्रम और सम्बन्धों का बनाना-बिगाड़ना किस कारणवश कर रहा है, तो निश्चित रूप से उसका उत्तर यही होगा "अपने व अपने परिवार के पालन-पोषण के लिए तथा पालन-पोषण की स्थितियों से ऊपर उठने के बाद शेष सुख-सुविधाओं को एकत्र करने के लिए।" इससे व्यक्ति को केवल अपने लिए ही नहीं वरन् उससे भी आगे बढ़कर अपने परिवार के सदस्यों के लिए कुछ करने में जो प्रसन्नता मिलती है, वही जीवन का सौन्दर्य होता है और जब तक जीवन में ऐसा सौन्दर्य नहीं होता, तब तक व्यक्ति के मन में तृप्ति का भाव भी नहीं पनपता। जीवन के छोटे-छोटे क्षणों को जी लेने के बाद जब मनुष्य का मन सरस होता है, तृप्त होता है व आह्लादित होता है तभी उसके मन में वह भाव-भूमि उत्पन्न होती है जिसके आधार पर उसका मन ईश्वर के चरणों में नमित होता है।

यदि शास्त्रों में प्रमाण मिलता है, पुराणों में लक्ष्मी प्रत्यक्षीकरण की घटनाएं मिलती हैं तो यह क्रिया आज भी सम्भव है।

देश, काल, परिस्थिति से बहुत अधिक अन्तर नहीं पड़ता।

एक प्रकार से देखा जाए तो भौतिक सुख एक ऐसी वर्षा होती है जिससे भीग कर ही व्यक्ति के नम हृदय में आध्यात्मिकता के कोमल अंकुर फूटते हैं। अभाव ग्रस्त, दुःखी, हीन, दरिद्री और कष्ट से पीड़ित व्यक्ति ईश्वर की आराधना भले ही कितनी जोर-शोर से कर ले किन्तु उसके स्वर में तरलता नहीं होती। उसकी पुकार

के पीछे एक चिड़चिड़ाहट और ईर्ष्या के भाव ही छुपे होते हैं, अतः **यदि यह कहा जाए कि दुःखी रहना, शरीर सुखाना और दीन-हीन बने रहना ही आध्यात्मिकता की सही पहचान है, तो खेद से कहना पड़ता है कि सम्भवतः अभी तक हमारा चिन्तन उस दैन्य और दासता से मुक्त नहीं हुआ है, जो वर्षों की गुलामी की देन है।**

दूसरी ओर यह भी सत्य है कि जब व्यक्ति को अर्थोपार्जन के उपाय नहीं मिलते, सम्पन्नता की स्थिति नहीं प्राप्त होती, तब वह हताश होकर अपनी दैन्यता को ही आध्यात्मिकता मानने की ऐसी प्रवंचना रच लेता है, जिससे वह कालांतर में खुद ही ग्रसित होकर दीन-हीन, पतित बना रह जाता है, क्योंकि अर्थोपार्जन करना, घर में 'श्री' का स्थापन करना सहज कार्य नहीं है।

''क्योंकि आवश्यक नहीं कि मेरे जीवन की सभी स्थितियां आपकी आंखों के समक्ष ही हों, किन्तु मेरे तो वे शिष्य हैं, मुझे तो उनके भरण-पोषण की देखभाल करनी ही पड़ती है. . .''

स्पष्ट शब्दों में कहा जाए तो लक्ष्मी को घर में स्थापित करना सहज कार्य नहीं है। इसका कारण यह नहीं कि लक्ष्मी चंचला है वरन् इसका कारण यह है कि व्यक्ति के पास वह भाव-भूमि और चैतन्यता नहीं होती जिससे लक्ष्मी को स्थायित्व दिया जा सके। सड़क पर चलते समय व्यक्ति किसी आकर्षक दुकान को देख कर दो क्षण ठिठक जाता है लेकिन वहीं कहीं आगे बढ़ने पर गंदगी का ढेर देखकर जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाने की क्यों सोचता है? यही अंतर होता है लक्ष्मी के स्थापन में। **जहां स्वच्छता है, स्थापना हेतु आधार है, पवित्रता और आग्रह है, लक्ष्मी वहीं स्थापित हो सकेगी। जहां दीनता, मलिनता कलह और दुर्बुद्धि है वहां लक्ष्मी किस आधार पर स्थापित होगी।** देशकाल और परिस्थिति का अंतर साधना-जगत में बहुत अधिक नहीं पड़ता। इसके द्वारा साधना के पक्ष प्रभावित अवश्य होते हैं लेकिन इससे कोई गुणात्मक अंतर पड़ता हो, यह नितांत आवश्यक नहीं होता, अतः यदि शास्त्रों में प्रमाण मिलते हैं, पुराणों में कथाएं मिलती हैं कि यज्ञों, साधना आदि के माध्यमों से लक्ष्मी प्रकट होती थी, तो यह आज के युग में भी सम्भव है। कलियुग की दूषित प्रवृत्तियां बाधाकारी अवश्य हैं किन्तु वे असम्भव स्थितियां नहीं हैं। साधना के मध्य मुख्य महत्व देशकाल का नहीं होता वरन् इस बात का होता है कि जो व्यक्ति साधना में प्रवृत्त है उसकी चैतन्यता क्या है, उसके प्राणों में कितना बल है और उसमें कितना पौरुष है, जिससे वह एक साधना-सिद्धि को सम्भाल कर रख सके। साधना में केवल प्रारम्भिक सफलता ही पर्याप्त नहीं होती वरन् यह भी महत्वपूर्ण होता है कि क्या साधक साधना की पश्चातवर्ती स्थितियों को संभालना जानता है, सिद्धि को चिरस्थायी करना जानता है। यदि इसे अतिशयोक्ति न समझा जाए तो साधना में सिद्धि तो एक बहुत मामूली सी घटना होती है क्योंकि देवी, देवता मंत्र स्वरूप होते हैं, जो विशिष्ट क्रियाओं द्वारा आबद्ध होने के लिए बाध्य होते ही हैं। लक्ष्मी प्राप्ति तो समुद्र मंथन की क्रिया है और जीवन के समुद्र में साधनाओं के शेषनाग रूपी रज्जु से जो कुछ मथ कर प्राप्त होता है वही लक्ष्मी का यथार्थ स्वरूप होता है। इस प्रकार साधनाओं के द्वारा केवल लक्ष्मी ही नहीं वरन् चौदह रत्नों की प्राप्ति भी होती है। इसी कारणवश जीवन में महालक्ष्मी की साधना अपने-आप में सम्पूर्ण साधना पद्धति कही गयी है। किन्तु जहां मंथन होता है वहां विष की उत्पत्ति भी अनिवार्य होती है। साधना के क्षेत्र में किया गया ऐसा मंथन विष की सृष्टि भी करता है और यह विष होता है— साधक की अहंमन्यता, प्रमाद, जिसके वशीभूत होकर साधक उस सुख को प्राप्त नहीं कर पाता, जो अमृत-पान का आनन्द होता है।

यदि साधक इस विष को शमित करने की कला जानता हो, तब वह स्पष्ट अनुभव कर सकता है कि लक्ष्मी उसके समक्ष हर पल उपस्थित है ही। पग-पग पर उसके साथ ही चल रही है और चल ही नहीं रही वरन् अनुगमन कर रही है। साधनाओं के द्वारा ऐसा चमत्कार सम्भव है। इसका आप भी प्रत्यक्ष उदाहरण देखते ही होंगे कि समाज में कुछ लोग सर्वथा तनाव रहित, मुक्त, स्वच्छंद एवं जीवन-ऊर्जा से भरे-पूरे, छलकते हुए दिखाई देते हैं और जानने की इच्छा होती ही है कि आखिर इन्होंने अपने जीवन में ऐसा क्या कुछ किया है, क्या पाया है, जिससे इस तनाव के युग में भी वे सर्वथा उन्मुक्त दिखाई दे रहे हैं। यही प्रभाव साधना से भी प्राप्त किया जा सकता है अर्थात् जो प्रारब्ध से न मिला हो उसे पुरुषार्थ से अर्जित किया जा सकता है।

अपने संन्यास जीवन में जब मैं निरन्तर एक स्थान से दूसरे स्थान का भ्रमण करता हुआ केवल प्राचीन पद्धतियों का संग्रहण कर रहा था तब मैंने अनुभव किया था कि जिस प्रकार से गृहस्थ व्यक्ति को लक्ष्मी की नितांत आवश्यकता रहती है उसी प्रकार विरक्त जीवन में भी पग-पग पर लक्ष्मी का साहचर्य आवश्यक हो ही जाता है। मेरी भेंट एक ऐसे वृद्ध योगी से हुई जो जंगल में सर्वथा एकान्त में कुटी बनाकर रहते हुए निश्चिन्त और तृप्त रहते थे। संन्यास की समस्त मर्यादाओं का पालन करते हुए भी उनके जीवन में कोई अभाव नहीं था और उसी अनुरूप उनका स्वभाव भी खुली किताब जैसा था। मैंने उनसे इस बात का रहस्य जानना चाहा, तो उन्होंने बिना हिचक के बता दिया कि उन्हें लक्ष्मी की प्रत्यक्ष सिद्धि है, जिससे वे भौतिक जीवन से सम्बन्धित जो भी मांग करते हैं वह तत्क्षण पूर्ण हो ही जाती है, और मैंने उनके साथ एक सप्ताह रहकर पाया कि

वास्तव में वे अपनी साधना के बल से उस घनघोर जंगल में भी जिस वस्तु की कामना करते थे वह उपलब्ध होती ही थी, चाहे वस्त्रों की बात हो अथवा सुस्वादु भोजन की। यह बात और है कि उस योगी की आवश्यकताएं अत्यन्त न्यून ही थीं।

मैंने उनसे इस साधना का रहस्य जानना चाहा और **उन्होंने भी बिना किसी हिचकिचाहट के इस साधना का मूल मर्म समझा दिया, क्योंकि उनका विश्वास था कि साधना जीवन में गोपनीय रखा जाने वाला पक्ष होता ही नहीं है।** सचमुच उनकी मस्ती, फक्कड़ स्वभाव देखकर ईर्ष्या ही होती है उनकी यह विद्या सम्भवतः जैन साबर तंत्र पर आधारित थी और किसी भी अमावस्या की रात्रि में, लाल वस्त्र पहिन कर, दो त्रिकोण उल्टे व सीधे खींच उसके प्रत्येक शीर्ष पर एक-एक **गोमती चक्र** रख (अर्थात् कुल छः गोमती चक्र), मध्य में एक **सियार सिंगी** रखकर, **मूंगे की माला** से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र-जप करना था। मंत्र-जप के काल में तेल का दीया जलते रहना था उसके तेल में **पांच केलन** डाल देना था, मंत्र इस प्रकार से था—

मंत्र

।। ॐ णमो लक्ष्म्यै सिद्धिं देहि प्रत्यक्षं भव णमो हुं।।

मंत्र-जप के उपरान्त तेल का दीया फूंक मारकर बुझा देना था, चार केलन चार दिशाओं में फेंक कर, समस्त साधना-सामग्री को साधना स्थल पर ही गड्ढा खोद कर एक बचे हुए केलन के साथ गाड़ देना था।

मैंने उसके बताये ढंग से साधना सम्पन्न की, लेकिन अपने मन की शंका भी उनके समक्ष रखी कि जहां साधक गृहस्थ हो और इस प्रकार जंगल में बैठकर साधना न कर रहा हो तब वह क्या करे? इसके प्रत्युत्तर में उन्होंने बताया कि लाल वस्त्र में साधना सामग्री को बांधकर किसी कोने में डाल देना भी भूमि में दबा देने के समान ही माना गया है। मैं ऐसे दुर्लभ प्रयोग को प्राप्त करने के लिए आज तक उनका आभारी हूं, साथ ही चलते समय उन्होंने जो बात कही वह मेरी स्मृति में निरन्तर बनी रहती है।

मैंने चलते समय उनसे हास्य पूर्ण ढंग से कहा कि आप तो सर्वथा वीतरागी हैं, वृद्ध हैं, आप को लक्ष्मी की क्या आवश्यकता पड़ गई? उनका उत्तर था— यह सत्य है मेरे स्वयं की आवश्यकताएं तो यहीं प्रकृति के माध्यम से पूरी हो जाती हैं लेकिन मेरे जो सैकड़ों संन्यस्त व गृहस्थ शिष्य हैं उनके जीवन की आवश्यकताएं, उनके वस्त्र, भोजन आदि की आवश्यकताएं कैसे पूरी होंगी? कोई आवश्यक नहीं कि वे शिष्य आपकी दृष्टि के सामने हैं अथवा नहीं, किन्तु मेरे तो शिष्य हैं ही। मुझे तो उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति गुरु होने के कारण करनी ही पड़ती है। क्या बिना लक्ष्मी के यह सम्भव है?

आज अपने गृहस्थ जीवन में जहां उनके बताये ढंग से लक्ष्मी का चैतन्य स्वरूप देख सका हूं, वहीं यह भी अनुभव कर सका हूं कि लक्ष्मी का प्रत्यक्षीकरण अर्थात् उसकी कृपाओं का जीवन में स्पष्ट अवतरण आवश्यक ही नहीं वरन् पग-पग पर अनिवार्य भी है।

सुखद जीवन का अहसास इस जीवन का सौभाग्य एवं गौरव

सदस्य बनने के दो माह के भीतर ही भीतर चैतन्य महालक्ष्मी दीक्षा सर्वथा मुफ्त

पूरे समय पत्रिका सर्वथा निःशुल्क आपके घर डाक द्वारा

अद्वितीय और अद्भुत भाग्योदय में सहायक, उंगली में जड़वाकर पहिनने योग्य आकर्षक सूर्यकान्त उपरत्न निःशुल्क

समस्त क्रियाओं में सहायक तेजस्वी पारद शिवलिंग उपहार स्वरूप

प्रथम साधना शिविर में, अत्यधिक उपयोगी शिविर सिद्धि पैकेट (धोती, माला, पंचपात्र, गुरु चित्र तथा सिद्धासन सर्वथा निःशुल्क)

एक बड़ा प्राण ऊर्जा से चैतन्य घर में स्थापित करने योग्य पूज्यपाद गुरुदेव का आकर्षक चित्र आशीर्वाद स्वरूप

प्राण-प्रतिष्ठित व पूज्यपाद गुरुदेव की प्राणश्चेतना से युक्त गुरु यंत्र आशीर्वाद स्वरूप

सिद्धाश्रम कैसेट, ऑडियो कैसेट जो आपके घर को मधुर व पवित्र वाणी से शुद्ध, चैतन्य कर देगा। सर्वथा मुफ्त
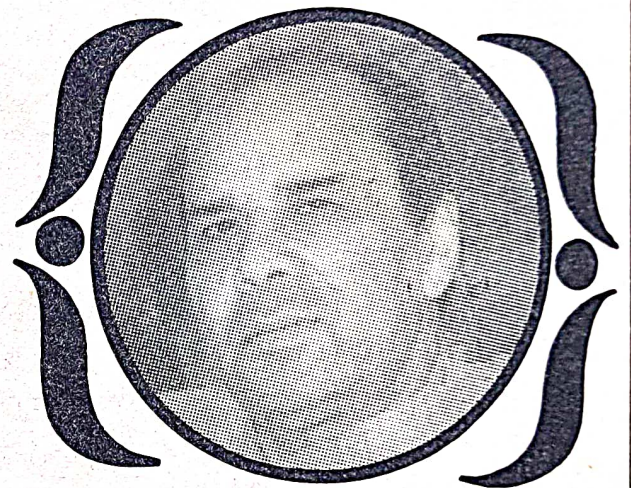
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान की आजीवन सदस्यता सुखद जीवन का आधार है

केवल एक श्रेष्ठ हिन्दी पत्रिका की सदस्यता ही नहीं, एक रचनात्मक आन्दोलन व ऋषियों द्वारा संस्पर्शित आध्यात्मिक संस्था की गतिविधियों में आगे बढ़कर भाग लेना भी। जो पूज्यपाद गुरुदेव के समक्ष अपनी सजगता और अपनी शिष्यता को स्पष्ट करने की क्रिया भी है, आजीवन सदस्यता वास्तव में परिवार की आजीवन सदस्यता है और समस्त आजीवन सदस्यों को पूज्यपाद गुरुदेव से भेंट करने के विशेष अवसर भी उपलब्ध होते रहेंगे। केवल ६६६६/- रुपये (आजीवन सदस्यता शुल्क के रूप में) यदि एक मुश्त में सम्भव न हो तो तीन किस्तों में जमा करने की सुविधा भी।

नोट - बिना उपरोक्त उपहारों के भी केवल २,४००/- रुपये द्वारा आजीवन सदस्यता उपलब्ध है ही।

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर(राज.), फोन:०२९१-३२२०९

गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-११००३४, फोन:०११-७१८२२४८, फेक्स:०११-७१८६७००

• विद्यापति
दिल्ली

उठाओ भी ये परदा दर्मियां से

जॉर्ज बर्नार्ड शॉ जहां एक ओर प्रख्यात दार्शनिक, चिंतक , नाटककार और विश्व- विख्यात व्यक्तित्व थे वहीं वे अपनी हाजिर जवाबी और व्यंग बाणों के कारण भी कम परिचित नहीं थे। उनके जैसा अद्भुत व्यक्तित्व विश्व में कोई दूसरा माना ही नहीं गया लेकिन इन सभी बातों के बाद भी वे हृदय से बेहद कोमल, सरस, मुखर और जीवन-सौन्दर्य को समझ कर उसे अपने में उतारने वाले बेहद सौम्य शख्सियत के मालिक भी थे।

उनके किसी प्रशंसक ने एक मौके पर उनसे भेंट करने के लिए जाते समय यह सोचकर एक फूलों का गुच्छा भी अपने साथ ले लिया कि जॉर्ज प्रकृति-प्रेमी होने के कारण उस उपहार को अवश्य ही पसन्द करेंगे और उनके धर पहुंच कर उसने उसे बाहर के कमरे में सलीके से एक ओर सजा दिया, पर हुआ ठीक इसका उल्टा ही! जॉर्ज भीतर से बाहर आए और उन्होंने फूलों के उस गुच्छे को देखकर कड़क कर जानना चाहा कि इसे कौन यहां लाया है? लाने वाले व्यक्ति को थोड़ी चोट पहुंची और उसने हल्के स्वर में कहा . . . लेकिन मैंने तो सुना था कि आप प्रकृति-प्रेमी हैं, फिर फूलों के इस गुच्छे से एकाएक इतनी नफरत क्यों?

जॉर्ज ने मुस्करा कर कहा . . . मुझे तो नन्हें बच्चों का संग भी आनन्द देता है तो कल क्या आप उनकी गर्दनें काट कर मेरी मेज पर रख देंगे?

कहीं किसी का दिल धड़का है मेरी ही याद करके, किसी ने पांवों को रखा है लोच से, क्या यह अप्सरा नहीं है?

सौन्दर्य को काटकर सजाया नहीं जाता और न सौन्दर्य को मसल कर परखा जाता है। कुछ ऐसा होता है जो आंखों में पहले एक अक्स बनकर उतरता है और फिर आहिस्ता-आहिस्ता खुद में ही समाकर खुद की ही पहचान बनता जाता है। वही तो सौन्दर्य होता है और जब सौन्दर्य को इस ढंग से देखा जाए, परखने की कोशिश की जाए तब अप्सरा का नाम खुद ब खुद होठों पर आ ही जाता है क्योंकि अप्सरा ऐसे ही सौन्दर्य की, सौन्दर्य-बोध की बात जो होती है।

**-चलना उसका सबा सा,
भूलता नहीं मुझको
पांव रखने की वो अदा,
अभी तक आंखों में तिरती है**

जब ऐसा सौन्दर्य और सौन्दर्य-बोध आकर जीवन में समा जाता है तभी जीवन में प्रेम फूट सकता है, क्योंकि तभी तो लगता है कि कोई मेरी है जो पल-पल मेरे बारे में सोचती होगी, मुझसे मिलने को आतुर रहती होगी, मेरी कामना करती होगी।

तुम जिसको समझते हो,
कि है हुस्न तुम्हारा
मुझको तो वह अपनी ही,
मुहब्बत नजर आयी

किसी ने श्रृंगार किया है, केवल मेरे लिए, किसी ने मेरी याद कर-कर एक-एक फूल में अपनी नर्म उंगलियों से मेरे नाम के साथ खुद को गूंथ कर एक गजरा सजाया है अपनी वेणी में . . . मेरी ही यादों से महकता हुआ, मेरे लिए अपने तन की सुन्दरता को रंगों में भरा है, किसी के माथे का टीका उसके गोरे चेहरे पर सुनहरी किरण-बनकर बिखर गया है, और कोई मेरे आने की बात सुनकर सुध-बुध भुलाकर दौड़ती चली आई है।

क्या यह प्रेम नहीं है? क्या इससे अधिक मधुर कुछ और भी हो सकता है?

बेखुदी बेसबब नहीं है
कुछ तो है जिसकी पर्दादारी है

(बेखुदी - खोया खोया रहना, बेसबब - बिना मतलब)

किसी ने होठों पर थरथराती शर्म के साथ-साथ अधरों की उन पंखुड़ियों पर मेरा नाम भी कोमलता से रख लिया है और खुल-खुल कर बंद होती जाती पलकों के बीच में मेरा ही अक्स बसा लिया है, अपनी लरजती देह से समर्पण का एक गीत गा लिया है, इससे अधिक प्रेम और सौन्दर्य की क्या कोई परिभाषा हो सकती है?

पलकें बंद अलसाई जुल्फें,
नर्म सेज पर बिखरी हुई
ओंठों पे इक मौजे तबस्सुम,
जागे हो कि सोए हो

. . . माथे पर जो दिप्-दिप् चमक रहा है, नर्म कलाइयां, उंगलियों के फंसने से कसमसाहट की शक्ल जो कुछ लिख रही हैं, या सारे तन-बदन की कोमलता पर जो एक नर्म गुलाबी चादर रात में बिखरे फूलों की पंखुड़ियों सी आकर बिछ गई है उसी का नाम अप्सरा है।

चांदनी की ठंडक में नहाकर, रातों के पिछले पहर में जागकर, रात-रानी की नशीली खुशबू में भीग कर जो गुनगुनाहट मन में फूटती चली जाती है, 'किसी' को अपने पास महसूस कर, पाकर और स्पर्श कर जो हलचल रग-रग में मचलती चली जाती है, उसी का नाम अप्सरा है।

किसी की आंखों में कुछ लिख उठा है और उनमें एक कतरा आंसू का उतर आया है बेबसी से, क्या यह प्रेम नहीं है, क्या यही अप्सरा का सही रूप नहीं है?

दिल के आइने में,
इस तरह उतरती है निगाह
जैसे पानी में लचक जाए किरन,
क्या कहना!

जिसने रात तड़प-तड़प कर काटी हो, जिसने अपने आंसुओं से सुबह अपने तकिए पर मेरी ही तस्वीर उभार दी हो, जिसके सूखे होठों पर मेरा ही नाम लिख गया हो और जिसके कपोलों पर आंसुओं की सूखी लकीरों में एक आइना बन गया हो, बस एक बार मिलने की चाहत में, एक बार देख लेने की हसरत में जिसने खुद को फना कर दिया हो और एक लम्बे इंतजार के बाद सामना होने पर दौड़कर आते-आते भी जिसके पांव थम कर भी न थम पा रहे हों और बढ़ना चाहकर भी न बढ़ पा रहे हों, वही तो प्रेमिका कहला सकती है।

आंखों की कोर में छिपा एक आंसू जो बिछोह की बेवसी से बरबस आंखों में उतर आया हो, होठों पर मूक शिकवों की बातें आ समायी हों, वही तो अप्सरा है, वही तो दिल में गहराई तक जाकर उतरने का हौंसला रखती है।

होश में कैसे रह सकता हूं,
आखिर शायरे फितरत हूं
सुबह के सतरंगे झुरमुट से,
जब वो नर्म उंगलियां मुझे बुलाए

किसी ने मेरी ही सोच में अपने-आप को ढाल दिया है, पल-पल मुझे याद किया है, पल-पल दूर रहकर भी मेरे हृदय को धड़काया है और फिर भी नहीं कहा कि तुमसे मोहब्बत की है, वही तो मेरा गरूर है, मुझे मिली मेरी ही पहचान है। यह मेरी हौसला-अफज़ाई है, जिससे जुड़कर मैंने भी जाना कि मैं बस यूं ही इस दुनिया में अकेला और बदहवास सा इधर से उधर भटकने के लिए नहीं जन्मा हूं, **मुझमें भी कुछ छुपा है, मैं भी एक शख्सियत का मालिक हूं, मेरा भी कोई वजूद है, जो हजारों-हजारों की भीड़ से हटकर नाजुक और नर्म दिल है, ऐसे सभी अहसास मुझे बताने वाली को ही तो मैं अपना 'प्रेम' कह सकता हूं।**

देह तो पता नहीं कब की भूली-बिसरी बात हो गयी और उसे छोड़ आसमानों सा ही कुछ फैलता चला गया मेरे अंदर, जिस आसमान में, मेरे मन के जिस आसमान में बहुत कुछ आकर समा गया, बहुत कुछ

अच्छा लगने लगा, जीने का हौसला मिलने लगा, नदियों सा कुछ बहने लगा और दरिया सा कुछ झलकने लगा, एक खुशबू मेरे तन-मन में समाकर सारे बंधनों को बेड़ियों को और तनावों को हल्का कर गयी। मैं साधना की पहली सीढ़ी चढ़ गया क्योंकि जब मन मुक्त हुआ तो उसे कहीं न कहीं जाकर घुल-मिल जाना ही था, आंखों में जो 'हुस्न' समा गया था उसे कहीं न कहीं जाकर जगमगाना था।

अप्सरा तो एक 'हुस्न' है, सही कहा जाए तो जिसको देखना और निहारना ही अप्सरा साधना की हकीकत है

इस दुनिया में ही है
इक दुनिया - ए - मुहब्बत भी
हम उस जानिब जाए है,
बोलो तुम भी आए हो

अप्सरा यूं ही जिन्दगी के एक-एक मोड़ पर साथ देती ही है। अपने रंगों में रंगने की, अपनी गुनगुनाहटों में समेटने की, उदासियों को दूर करने की चंद कोशिशें करती ही है, बस होना यह चाहिए कि उस 'हुस्न' को, उस सौन्दर्य को एक ओर खड़े होकर निहारना आता हो, उसे सौन्दर्य समझने की चाहत हो अपनी आजमाइशों पर कसने की वहशत न हो। मौन रहकर किसी का तोहफा कबूल करना आता हो, किसी को दिल में बसाना आता हो और किसी के दिल में उतर जाने का हौसला रखना आता हो, सही मायनों में जिन्दगी को जीना आता हो। जो गुत्थियां हों उन्हें सुलझाना आता हो, जो पर्दे बीच में पड़े हों, उन्हें हटाना आता हो।

वह तो सिर से पांव तक
मोहब्बत ही मोहब्बत है
मगर उसकी मोहब्बत
साफ पहचानी नहीं जाती

जहां यूं ही मोहब्बत होती है वहां पहचानी भी कैसे जा सकती है? वह तो इशारों में छुपी और दिल के सात पर्दों में जाकर बसी होती है पर **ऐसा ही होता है जब अप्सरा की सिद्धि मिलती है, गुरु-कृपा से साधना के गोपनीय सूत्र मिलते हैं या शक्तिपात युक्त दीक्षा मिल जाती है और जिसका मैं खुद साक्षी रहा हूं,** जिससे मैंने एक विचित्र सी तृप्ति, स्वास्थ्य, धन एवं यौवन का पूर्ण लाभ प्राप्त किया है। इसी तृप्ति और मानसिक सन्तोष का तात्पर्य मेरे लिए सर्वाधिक है। अप्सरा तो मुझे प्रेमिका रूप में सिद्ध हुई ही है, उससे भी ज्यादा मैंने सौन्दर्य, बुद्धिमता, प्रेम और अपनेपन के एक अनोखे मेल को भी पाया है।

चेहरा मेरा था निगाहें उसकी
खामोशी में भी वे बातें उसकी
मेरे चेहरे पे गजल लिखती गयी
शेर कहती हुई आंखें उसकी
शोख लम्हों का पता देने लगी
तेज होती हुई सांसे उसकी
ऐसे मौसम भी गुजारे हमने
सुबहें जब अपनी थी शामें उसकी

सौन्दर्य और बुद्धिमता के मेल पर जॉर्ज बनार्ड शॉ की ही बात पुनः याद आती है, जिनकी बुद्धिमत्ता और प्रसिद्धि से प्रभावित होकर उनकी समकालीन एक अत्यन्त प्रसिद्ध और यौवन का पर्याय मानी जानी वाली अभिनेत्री ने प्रस्ताव रखा कि जॉर्ज उससे विवाह कर ले। जॉर्ज ने पूछा इससे लाभ क्या होगा? अभिनेत्री का मानना था उनकी जो सन्तान होगी वह विलक्षण होगी, उसमें उसका रूप और जॉर्ज की बुद्धिमत्ता समाई होगी। जॉर्ज ने कुछ देर सोचा और फिर एक उलझन भरी मुस्कराहट के साथ कहा . . . यह तो ठीक है मैडम! पर यदि इसका उल्टा हो गया तो?

प्रसंगवश यह कहना अनुचित नहीं होगा कि जॉर्ज बनार्ड शॉ सांसारिक मापदंड की दृष्टि से एक कुरूप व्यक्ति कहे जाते थे।

लेकिन प्रेम तो इक आइना है। प्रेम में शरीर कहां, प्रेम में तो कुछ और ही देखा जाता है।

आइना है तो अपनी सफाई न दे मुझे
मुमकिन नहीं कि अक्स दिखाई न दे मुझे

अप्सरा तो दिल के आइने में ही दिखाई पड़ती है, बेहद खूबसूरत, बेहद कोमल, आपकी अपनी ही, आपको ही चाहने वाली, आपकी ही होकर जीने वाली, आपकी सोच में डूबी रहने वाली, जरा खुद को ही टटोलिए न, पर्दों को दर्मियां से हटाइए न, आपकी अप्सरा वहीं है,

जो भी तसल्ली दे सके, जो भी अपनी हो सके, जो भी चलते - चलते कुछ धुंधलाहट आ जाने पर राह दिखा सके, उदासी की घड़ियों में हमसफर हो सके, हम जुबां हो सके और हमनशीं भी हो सके वही अप्सरा है।

फिर भी मन में तो कुछ बच जाता ही है-

वो आ भी जाते, वो हो भी जाते
चश्मे तमन्ना फिर भी तरसती

(चश्मे तमन्ना - देखने की चाह)

या यूं होता है कि जब कोई बहुत अपना बहुत करीब हो जाता है तब भी हसरतें गुमसुम हो जाती हैं यानी कि मुहब्बत की इंतिहा (सम्पूर्णता) हो जाती है। समझ में नहीं आता कि क्या करें, कैसे अपने दिल को खोल कर रख दें, कैसे अपने दिल को उड़ेल कर रख दें। बहुत ही नाजुक और बहुत ही खूबसूरत अहसास जो है यह. . .

हम सुखन होंगे जो हम दोनों
तो हर बात के बीच
अन कही बातों का
मोहूम सा पर्दा होगा
कोई इकरार
न मैं याद दिलाऊंगा न तुम
कोई मजमून
वफा का न जफा का होगा

आपके सम्पूर्ण जीवन का आधार

हस्त रेखा - भाग्य रेखा

जिस प्रकार ज्योतिष के द्वारा व्यक्ति के अतीत एवं भविष्य में झांका जा सकता है उसी प्रकार व्यक्ति की हस्त रेखाएं भी उसके बारे में बहुत कुछ वता जाती हैं और हस्त रेखा विज्ञान भी ज्योतिष के समान एक पूर्ण प्रामाणिक विद्या है। इस अंक से हम इस विज्ञान के महत्वपूर्ण पक्षों को लेते हुए जो लेख माला प्रारम्भ कर रहे हैं उसकी प्रारम्भिक कड़ी के रूप में प्रस्तुत है यह विवेचन—

यद्यपि मानव के जीवन में सब कुछ होता है, पर यदि उसका भाग्य साथ नहीं देता है, तो एक प्रकार से उसका पूरा जीवन व्यर्थ कहा जाता है। चाहे व्यक्ति के पास भव्य व्यक्तित्व हो, चाहे हृदय से वह कितना ही उदार हो, चाहे स्वास्थ्य की दृष्टि से उसमें सभी प्रकार की श्रेष्ठता हो, परन्तु यदि उसका भाग्य उसे साथ नहीं देता है, तो उसका जीवन एक प्रकार से निष्क्रिय हो जाता है। कहा जाता है कि **यदि व्यक्ति का भाग्य साथ देता हो और वह मिट्टी भी छू ले, तो सोना बन जाती है। इसके विपरीत यदि भाग्य साथ नहीं देता, तो सोने को भी स्पर्श करने पर वह मिट्टी के समान हो जाता है।**

वस्तुतः जीवन में भाग्य का महत्त्व सबसे अधिक माना गया है। इसीलिए हाथ में भी 'भाग्य रेखा' या **'प्रारब्ध रेखा'** को महत्त्व दिया जाता है। अंग्रेज़ी में इसे **'फेट लाइन'** कहते हैं। यह रेखा जितनी अधिक गहरी, स्पष्ट और निर्दोष होती है, उसका भाग्य उतना ही ज्यादा श्रेष्ठ कहा जाता है। **यदि व्यक्ति के हाथ में सभी रेखाएं दूषित एवं कमजोर हों, परन्तु यदि उसकी भाग्य रेखा अपने-आप में अत्यन्त श्रेष्ठ हो तो यह बात निश्चित है कि उसके ये सारे दुर्गुण छिप जाते हैं** और वह जीवन में पूर्ण प्रगति करने में समर्थ हो पाता है। अतः हस्त रेखा विशेषज्ञ को चाहिए कि वह हथेली का अध्ययन करते समय भाग्य रेखा का सावधानी से अध्ययन करे।
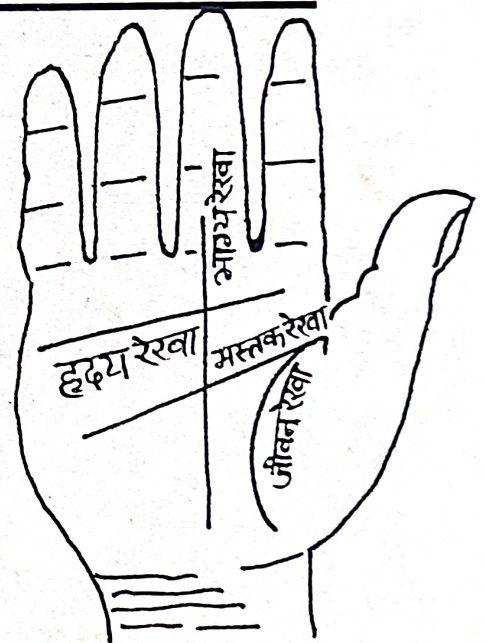
इस रेखा को शनि रेखा भी कहा जाता है, क्योंकि इस रेखा की समाप्ति शनि पर्वत पर होती है। यद्यपि यह रेखा व्यक्ति के हाथों में अलग-अगल स्थानों से प्रारम्भ होती है, तथापि इस रेखा की समाप्ति शनि पर्वत पर ही होती देखी गई है। इसलिए भी इसको शनि रेखा के नाम से पुकारते हैं।

जिन हाथों में यह रेखा कमजोर होती है या नहीं होती है, उन व्यक्तियों की उन्नति तो होती है, परन्तु उन्नति

में भाइयों, सम्बन्धियों या रिश्तेदारों का किसी प्रकार का कोई सहयोग उसे जीवन में नहीं मिलता। इस प्रकार से वह जो भी प्रगति करता है, स्वयं के प्रयत्नों से ही कर पाता है। ऐसे लोगों को न तो समाज से किसी प्रकार का कोई सहयोग मिलता है और न परिवार से ही सहायता मिलती है। जिन लोगों के हाथ में शनि रेखा का अभाव हो, तो यह समझ लेना चाहिए कि इसके जीवन में जो भी दिखाई दे रहा है वह सब इसके प्रयत्नों से ही सम्भव हुआ है।

मध्यमा उंगली के मूल में शनि पर्वत होता है। हथेली के किसी भी स्थान से कोई भी रेखा प्रारम्भ होकर शनि पर्वत को स्पर्श कर लेती है, तो वह भाग्य रेखा कहलाने लगती है। **हथेली के भिन्न-भिन्न स्थानों से प्रारम्भ होने के कारण भाग्य रेखा का महत्त्व भी भिन्न-भिन्न हो जाता है।** इसलिए भाग्य रेखा का उद्‌गम तथा उसकी समाप्ति दोनों ही बिन्दुओं का भली-भांति सूक्ष्मता से अध्ययन करना चाहिए।

ऊपर मैंने भाग्य रेखा के बारे में कुछ तथ्य स्पष्ट किए हैं। मेरे अनुभव के आधार पर भाग्य रेखा का उद्‌गम निम्न प्रकार से हो सकता है:—
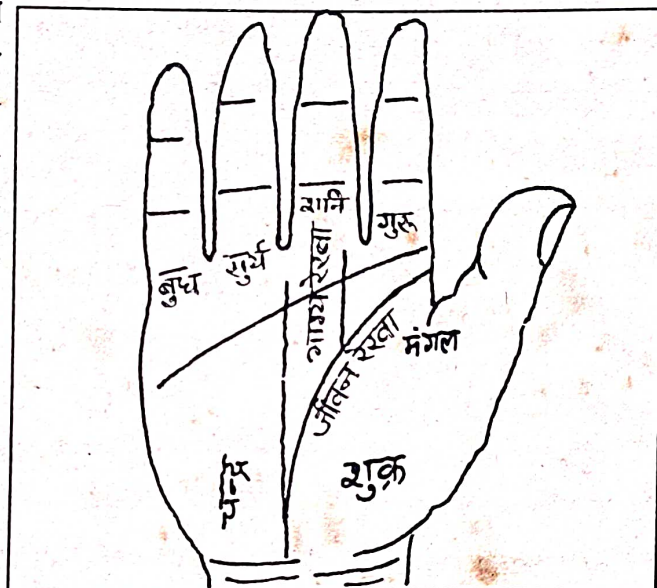
१. हथेली में भाग्य रेखा मणिबन्ध के ऊपर से निकल कर अन्य रेखाओं का सहारा लेती हुई शनि पर्वत तक पहुंचती है।
२. कई बार यह रेखा जीवन रेखा के पास में से निकल कर शनि क्षेत्र पर पहुंच जाती है।
३. भाग्य रेखा शुक्र पर्वत से भी निकल कर शनि पर्वत तक पहुंचती है।
४. कभी-कभी यह रेखा मंगल पर्वत से भी निकलती हुई दिखाई दी है।
५. यह रेखा जीवन रेखा को काटती हुई शनि पर्वत तक पहुंचने का प्रयास भी करती है।
६. कुछ हाथों में मैंने भाग्य रेखा राहु क्षेत्र से भी निकलती हुई देखी है।
७. भाग्य रेखा हृदय रेखा से निकलकर शनि पर्वत को स्पर्श करती हुई अनुभव की है।
८. कई बार यह रेखा नेपच्यून क्षेत्र से प्रारम्भ होकर शनि पर्वत तक जाती है।
९. कुछ हाथों में यह रेखा चन्द्र पर्वत से भी निकलती है।
१०. हर्षल क्षेत्र में भी इस रेखा का प्रारम्भ देखा जा सकता है।
११. कई बार यह रेखा मस्तिष्क रेखा से प्रारम्भ होकर शनि पर्वत को जाती है।

ऊपर मैंने भाग्य रेखा के ग्यारह उद्‌गम स्थान बताए हैं। अधिकतर हाथों में उद्‌गम स्थल इसी प्रकार के दिखाई देते हैं। परन्तु इसके अलावा भी उद्‌गम स्थल हो सकते हैं। अब मैं इन उद्‌गम स्थलों से सम्बन्धित भविष्यफल स्पष्ट कर रहा हूं।

१. यदि भाग्य रेखा सीधी तथा स्पष्ट हो और शनि पर्वत से होती हुई सूर्य पर्वत की ओर जा रही हो, तो वह व्यक्ति कला के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करता है।
२. यदि यह रेखा लाल रंग की हो तथा मध्यमा उंगली के प्रथम पोर तक पहुंच जाए, तो उस व्यक्ति की दुर्घटना में मृत्यु होती है।
३. यदि यह रेखा हृदय रेखा को काटते समय जंजीर के समान बन जाए तो उसे प्रेम के क्षेत्र में बदनामी का सामना करना पड़ता है।
४. यदि हृदय रेखा हथेली के मध्य में फीकी या पतली अथवा अस्पष्ट हो, तो व्यक्ति का यौवनकाल दुखमय होता है।
५. यदि व्यक्ति के हाथ में भाग्य रेखा के साथ-साथ सहायक रेखाएं भी हों तो उसका जीवन अत्यन्त सम्मानित होता है।
६. यदि भाग्य रेखा जंजीरदार अथवा लहरदार हो, तो जीवन में उसे बहुत अधिक दुख भोगना पड़ता है।
७. जिस व्यक्ति के हाथ में भाग्य रेखा नहीं होती, उसका जीवन अत्यन्त साधारण और नगण्य सा होता है।

८. यदि भाग्य रेखा प्रारम्भ से ही टेढ़ी-मेढ़ी हो, तो उसका बचपन अत्यन्त कष्टदायक होता है।

९. भाग्य रेखा अपने उद्गम स्थल से प्रारम्भ होकर जिस पर्वत की ओर भी मुड़ती है या शनि पर्वत से उसमें से कोई शाखा निकलकर जिस पर्वत की ओर जाती है, उस पर्वत से सम्बन्धित गुणों का विकास उस व्यक्ति के जीवन में मिलता है।

१०. यदि भाग्य रेखा चलते-चलते रुक जाए तो वह व्यक्ति जीवन में बहुत अधिक तकलीफ उठाता है।

११. हथेली में भाग्य रेखा जिस स्थान में भी गहरी, निर्दोष और स्पष्ट होती है, जीवन के उस भाग में उसे विशेष लाभ या सुख मिलता है।

१२. भाग्य रेखा हथेली में जितनी बार भी टूटती है, जीवन में उतनी ही बार महत्वपूर्ण मोड़ आते हैं या कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

१३. यदि भाग्य रेखा मणिबन्ध से प्रारम्भ होकर मध्यमा के ऊपर चढ़े तो वह दुर्भाग्यशाली होता है। जिसकी भाग्य रेखा ऐसी होगी, उसे जीवन में किसी प्रकार का कोई सुख या आनन्द नहीं मिलेगा।

१४. यदि भाग्य रेखा प्रथम मणिबन्ध से भी नीचे हो अर्थात् प्रथम मणिबन्ध से नीचे उसका उद्गम स्थल हो, तो उसे जीवन में जरूरत से ज्यादा कष्ट उठाना पड़ता है।

१५. यदि भाग्य रेखा के साथ में कोई सहायक रेखा हो, तो यह शुभ कहा जाता है। यदि उंगलियां लम्बी हों और भाग्य रेखा का प्रारम्भ चन्द्र पर्वत से हो, तो ऐसा व्यक्ति प्रसिद्ध तांत्रिक होता है।

१६. यदि चन्द्र पर्वत को काटकर भाग्य रेखा आगे बढ़ती हो, तो वह व्यक्ति जीवन में कई बार विदेश यात्रा करता है।

१७. यदि भाग्य रेखा के उद्गम स्थान पर त्रिकोण का चिन्ह हो, तो वह व्यक्ति अपनी ही प्रतिभा से उन्नति करता है।

१८. यदि भाग्य रेखा से कुछ शाखाएं निकल कर ऊपर की ओर जा रही हों, तो उसे अतुलनीय धन लाभ होता है।

१९. यदि भाग्य रेखा मस्तिष्क रेखा से प्रारम्भ हो और मार्ग में कई जगह आड़ी तिरछी रेखाएं हों, तो उस व्यक्ति को बुढ़ापे में सफलता मिलती है।

२०. यदि भाग्य रेखा शनि पर्वत पर वृत्ताकार बन जाए तो उसके जीवन में अत्यधिक परिश्रम के बाद सफलता आती है।

२१. यदि भाग्य रेखा मस्तिष्क रेखा से प्रारम्भ हो और उसकी शाखाएं गुरु, सूर्य तथा बुध पर्वत पर जाती हों, तो वह व्यक्ति विश्वविख्यात होता है।

२२. यदि भाग्य रेखा के उद्गम स्थान पर तीन या चार रेखाएं निकली हों, तो ऐसे व्यक्ति का भाग्योदय विदेश में होता है।

२३. यदि भाग्य रेखा के उद्गम स्थान से एक सहायक रेखा शुक्र पर्वत की ओर जाती हो, तो किसी स्त्री के माध्यम से उसका भाग्योदय होता है।

२४. यदि भाग्य रेखा मस्तिष्क रेखा के पास समाप्त हो जाती हो, तो उसे जीवन में बार-बार निराशा का सामना करना पड़ता है।

२५. भाग्य रेखा पर जितनी ही आड़ी-तिरछी रेखाएं होती हैं, वे उसकी प्रगति में बाधक होती हैं।

२६. यदि भाग्य रेखा की समाप्ति पर तारे का चिन्ह हो, तो उसकी वृद्धावस्था अत्यन्त कष्टमय होती है।

२७. यदि भाग्य रेखा और विवाह रेखा परस्पर मिल जाएं तो उसका गृहस्थ जीवन दुखमय रहता है।

२८. यदि भाग्य रेखा से कोई सहायक रेखा निकलती हो, तो वह भाग्य को प्रबल बनाने में सहायक होती है।

२९. यदि इस रेखा के ऊपर या नीचे शाखाएं हों, तो आर्थिक कष्ट उठाना पड़ता है।

३०. भाग्य रेखा के अन्त में क्रॉस या जाली हो, तो उसकी क्रूर हत्या होती है।

३१. यदि रेखा के अन्त में चतुर्भुज हो, तो उस व्यक्ति की धर्म में विशेष आस्था होती है।

३२. भाग्य रेखा पर धन (+) का चिन्ह शुभ माना गया है।

३३. भाग्य रेखा गहरी स्पष्ट और लालिमा लिए हुए होती है, तो व्यक्ति जीवन में शीघ्र ही प्रगति करता है।

वस्तुतः भाग्य में ही जीवन का सब कुछ सार संग्रहित होता है। अतः जिसकी हथेली में भाग्य रेखा प्रबल, स्पष्ट और सुन्दर होती है, वह व्यक्ति अपने भाग्य से शीघ्र उन्नति करता है और समाज में सम्माननीय स्थान प्राप्त करता हुआ पूर्ण भौतिक सुखों का भोग करता है।

(हस्तरेखा विज्ञान के विविध पक्ष आगामी अंकों में)

आयुष्य लक्ष्मी

प्रत्येक मनुष्य अपनी इच्छाओं का विस्तार करता रहता ही है। उसे संवारने के उसमें अपने ढंग से नित नई कल्पना करके रंग भरने के प्रयत्न करता रहता ही है। जीवन में 'श्री' सम्पन्न होने के अथक प्रयास भी करता है। जीवन में लक्ष्मी को विविध स्वरूपों को समाहित करने की क्रियायें करता है जिससे जीवन को शांति मिल सके और इस प्रकार से जीवन में अनेक प्रकार के रंग आकर समाते है। **जीवन को नित एक ही मार्ग पर घिस-पिटे तरीके से जीने में कोई आनन्द भी नहीं है और प्रयास करके जीवन के सभी रंगों को अपने-आप में उतारना ही चाहिए।** इन रंगों से अपना जीवन संवारने की आधारभूता देवी महालक्ष्मी ही है और उनके विविध स्वरूपों की साधना पद्धतियां वास्तव में विविध उल्लासों व विविध कामनाओं की पूर्ति के लिए अलग-अलग व विशेष रूप से ढूंढी गई साधना पद्धतियां ही है। जीवन के तो अनेक पक्ष हैं लेकिन मुख्य रूप से भगवती महालक्ष्मी के १०८ स्वरूप निर्धारित कर जीवन को उसमें समेटने का प्रयास किया गया है।

लक्ष्मी के १०८ स्वरूपों में आयुष्य लक्ष्मी का भी नाम है। **जीवन में यदि पूर्ण आयु ही नहीं होगी, पूरा विस्तार ही नहीं होगा तो कब व्यक्ति अपनी इच्छाओं की कामनाओं की पूर्ति कर सकेगा,** कब अपनी इच्छा का संसार रच सकेगा और वह सब कुछ प्राप्त करने में सफल होगा जो उसके मन की चिरसंचित अभिलाषा हो। साथ ही कब उन कर्त्तव्यों को पूरा कर सकेगा जो जन्म से ही उसके साथ चलते रहते हैं। हिन्दू धर्म के अनुसार व्यक्ति जन्म से ही मातृ- ऋण, पितृ- ऋण, देव - ऋण और गुरु - ऋण से आबद्ध होता है जिनका भुगतान किए बिना वह मुक्त हो ही नहीं सकता और इसके लिए, इन कर्त्तव्यों को पूरा करने के लिए व्यक्ति को लम्बी आयु आवश्यक होती है।

लक्ष्मी के सभी अन्य स्वरूपों के साथ आयुष्य लक्ष्मी की साधना भी जीवन की प्राथमिक साधना में मानी गई है, जीवन का विस्तार करने में सहायक मानी गई है। जिससे व्यक्ति अपनी जीवन यात्रा को तृप्ति के साथ सम्पन्न कर सके। शास्त्रों में स्पष्ट रूप से कहा गया है जिस व्यक्ति की कामनाएं शेष रह गयी हो या जो अल्पायु हो वह मुक्ति लाभ का अधिकारी नहीं **कल्पद्रुम सौख्य** में प्राप्त आयुष्य लक्ष्मी साधना के द्वारा व्यक्ति पूर्ण आयु का लाभ प्राप्त कर जीवन की आकांक्षा पुत्र-पौत्र का सुख तो प्राप्त करता ही है साथ ही प्रारब्ध द्वारा पूर्ण आयु प्राप्त होने पर भी यदि यह साधना सम्पन्न कर ली जाती है तो उससे जीवन का मार्ग सहज हो जाता है। **जीवन में केवल वर्षों की संख्या से आयु का निर्धारण नहीं किया जा सकता। जीवन कितना तृप्त सुखी और परिपूर्ण बीता, कितने क्षण आनन्द में व्यतीत हुए - वही जीवन की वास्तविक 'आयु' है।**

आयुष्य लक्ष्मी साधना किसी भी सप्ताह में बुधवार, गुरुवार अथवा शुक्रवार में से कोई एक दिवस निर्धारित कर प्रत्येक सप्ताह उसी दिवस पर नियम पूर्वक करते रहना आवश्यक है। इस साधना में विधान अधिक जटिल नहीं है और जो भी दिवस निश्चित किया हो उसमें प्रातः ६ से ८ के मध्य शुद्ध वस्त्र धारण कर साधना में बैठ जाएं और अपने सामने तावीज रूप में **आयुष्य लक्ष्मी यंत्र** स्थापित कर लें। प्रथम दिन की साधना के बाद इस तावीज को गले में धारण कर लेना है और आगे केवल **सफेद हकीक की माला** से निम्न मंत्र का १०८ बार उच्चारण करना है।

मंत्र -

ॐ अं अः आयुष्यायै महालक्ष्म्यै नमः

इस साधना में ध्यान देने योग्य बात यह है कि प्रथम दिन जिस समय साधना प्रारम्भ की थी अगले बार पुनः ठीक उसी समय पर साधना प्रारम्भ करें। साधक संकल्प पूर्वक ५ सप्ताह, ११ सप्ताह अथवा २१ दिवसों (अर्थात् ५, ११, या २१ निर्धारित दिवसों पर) की यह साधना सम्पन्न कर सकते हैं और चाहें तो निरन्तर प्रति सप्ताह भी करते रह सकते हैं।

जब आपके संकल्प के दिवस पूर्ण हो जाय तब पांच छोटी कन्याओं को सम्मानपूर्वक भोजन आदि कराकर उन्हें भगवती महालक्ष्मी का ही स्वरूप मानते हुए दक्षिणा आदि से सन्तुष्ट करें तथा उनमें से सबसे छोटी कन्या को भेंट में यंत्र व माला दे दें। यदि ज्योतिषीय दृष्टि से किसी की आयु कम हो या **हाथ में जीवन रेखा कटी हो,** उसे इस प्रयोग को सम्पन्न कर लेना ही चाहिए।

बुढ़ापे को परे धकेलिये गायत्री साधना से

शक्ति साधना की अनिवार्यता से कौन असहमत हो सका है? प्रकट अथवा अप्रकट, व्यक्त अथवा अव्यक्त - प्रत्येक रूप में यह जगत शक्ति का आश्रय लेकर ही तो गतिशील है। तभी तो शक्ति को मातृ स्वरूपा कहा है, जिस पर साधक अपने जीवन का समस्त भार डाल कर निश्चिंत हो सकता है।

गायत्री जयन्ती (१५.०८.९४) के अत्यन्त पावन दिवस पर जीवन में षट्शक्ति स्वरूपा मां भगवती गायत्री की दुर्लभ साधना एवं गुह्य पद्धति का सांगोपांग विवरण प्रस्तुत करता लेख।

यदि आंकलन करके देखा जाए तो शक्ति की सर्वाधिक प्रचलित साधना मां भगवती की ही साधना है और जो साक्षात् वेद माता हैं उनके प्रति साधकों का इस प्रकार से भावयुक्त होना आश्चर्यजनक भी तो नहीं कहा जा सकता है। तेजस्विता, बल, ओज और पाप - नाश की मूर्तिमन्त स्वरूपा मां भगवती गायत्री के उद्धरणों से समस्त शास्त्र और हमारा प्राचीन साधनात्मक साहित्य भरा पड़ा है। **हमारे दैनिक जीवन का आधार, हमारी प्रत्येक प्रातः एवं सायं का आधार मां गायत्री ही तो है जिनके चरणों में हम अपनी 'संध्या' निवेदित कर अपने पग -पग के जीवन की वाधाओं का नाश करते चलते हैं** और प्रमादवश, त्रुटिवश अथवा आलस्यवश होने वाले समस्त पापों की क्षमायाचना करके अपने को उस देवत्व और देवत्व से भी आगे बढ़कर ब्रह्मत्व तक ले जाने के लिए संलग्न रहते हैं, जहां तक पहुंचना ही हमारे जीवन का अर्थ है। जिस तेजस्विता और ब्रह्मवर्चस्व के लिए भारत सदा - सदा से विख्यात रहा है। जिस ओज और बल के लिए भारत ऋषि - भूमि बन सका है और जिस साधना के बल पर इस देश ने अनेक तेजस्वी, ब्रह्मत्व - युक्त व्यक्तित्व संसार को दिए उसके मूल में मां भगवती के इसी स्वरूप की तो महिमा निहित है।

आज गायत्री जयन्ती के अवसर पर ऐसी मातृ स्वरूपा तेजस्विनी, त्रिगुणात्मिका भगवती का स्मरण करना ही जीवन का पुण्य है और यदि उनकी सविधि साधना, अराधना सम्पन्न क ली जाए तो साधक के जीवन में कोई अभाव रह ही नहीं सकता क्योंकि साक्षात् सूर्य की शक्ति होने के कारण उनके ही अन्दर वह निवारक क्षमता है जिससे वह अपने साधक के जीवन की मलिनता, दीनता और अभावों को समाप्त कर सकती हैं। जीवन में ऐसी स्थितियां केवल एक कारणवश ही उत्पन्न होती है और वह कारण होता है- पूर्व जन्म के दोष, जिनके कारण साधक पग - पग पर असफलता का मुंह देखता है, पीड़ित और विषाद- युक्त बना रहता है। गायत्री साधना की उष्ण रश्मियों से साधक के अन्दर ऐसे समस्त पाप - पुंज समाप्त कर निर्मल प्रकाश की स्थिति बनती है और तब साधक के जीवन से दैन्य, दुख, दरिद्रता, रोग समाप्त होकर चेहरे पर साक्षात् सूर्य की लाली और ओज जगमगा उठता है।

शायद ही कोई भारतीय होगा जो गायत्री मंत्र से अपरिचित हो और शायद ही कोई धर्मपरायण व्यक्तित्व होगा जो अपनी दैनिक पूजा में कम से कम एक बार गायत्री मंत्र का उच्चारण न करता हो। केवल भारतीय ही नहीं विदेशी विद्वान तक इस मंत्र की असीम सम्भावनाओं से हतप्रभ रह गए हैं। पाश्चात्य जगत के गम्भीर भारतविद् भारत की दो ही बातों से सर्वाधिक प्रभावित हुए हैं जिनमें से प्रथम है **श्री यंत्र** तथा द्वितीय **गायत्री मंत्र।** जिस प्रकार वे श्री यंत्र की संरचना को अपने आधुनिकतम कम्प्यूटर से भी

नहीं आंक पा रहे हैं, उसी प्रकार गायत्री मंत्र की ध्वन्यात्मक प्रभाव की गम्भीरता को भी नहीं समझ पा रहे हैं और आश्चर्य में पड़ जाते हैं कि प्राचीन भारत के ऋषि ज्ञान की किस स्थिति को प्राप्त कर चुके थे कि वे अपने तप- ऊर्जा को इस प्रकार से गायत्री मंत्र के रूप में व्यक्त कर गए। इस एक मंत्र में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को आलोड़ित कर देने का रहस्य छुपा है और **भारत के प्रख्यात आलोचक आर्थर कोयस्लर** ने एक बार इस तथ्य का उद्घाटन किया था कि इस मंत्र में कितनी अधिक ऊर्जा छुपी हुई है। उनके अनुसार यदि किसी संकट काल में भारत के निवासी सामूहिक रूप से इसका जप कर लें **तो इतनी अधिक ऊर्जा उत्पन्न होगी जिससे कई - कई परमाणु बमों का प्रभाव समाप्त किया जा सकता है** और वैज्ञानिक जिस एक मंत्र को लेकर शोधरत होने को बाध्य हुए हैं वह गायत्री मंत्र ही है।

गायत्री मंत्र अपने स्वरूप में जिस प्रकार विशिष्ट है उसी प्रकार गम्भीर एवं विवेचना योग्य भी है। वर्तमान में इसके त्रिपाद ही स्पष्ट होते हैं जबकि इसका चतुर्थ पाद गोपनीय ही रखा गया है।

इस मंत्र में **''ॐ भू र्भुव स्वः''** तो प्रणव है, **''तत्सवितु वरेणियम्''** पहला पद, **''भर्गो देवस्य धीमहि''** द्वितीय पद और **''धियो यो नः प्रचोदयात्''** तृतीय पद है। महर्षियों ने जब इसके तीक्ष्ण प्रभावों को अनुभव किया तब चतुर्थ पद गोपनीय कर दिया और उसे केवल सुपात्र को, वह भी गोपनीय रूप से देने का विधान रखा।

यहां यह भी महत्वपूर्ण है कि गायत्री मंत्र मूल रूप में एक ध्वन्यात्मक मंत्र है और इसमें स्पष्ट उच्चारण का ही महत्व है। **इसे ज्यों का त्यों रट देने से अथवा दोहरा भर देने से इसके वास्तविक प्रभावों को नहीं प्राप्त किया जा सकता।** प्राचीन काल में कोई जब सुपात्र निस्पृह भाव से गुरु - चरणों में ब्रह्म विद्या के लिए संलग्न होता था तब गुरु कृपापूर्वक न केवल चतुर्थ पद स्पष्ट करते थे अपितु इसके प्रामाणिक उच्चारण को भी स्पष्ट करते थे।

शास्त्रों में स्पष्ट रूप से वर्णित है कि अन्य साधनाएं तो व्यक्ति सम्भवतः स्वयं भी सम्पन्न कर सकता है किन्तु गायत्री साधना मूल रूप से मंत्रात्मक एवं विशिष्ट ध्वनि संयोजन पर आधारित होने के कारण केवल सद्गुरु से दीक्षा लेकर एवं उनके चरणों में बैठ कर ही सम्पन्न की जा सकती है। जिस प्रकार अन्य महाविद्या साधनाएं अपने स्वरूप में विशिष्ट हैं, उसी प्रकार गायत्री साधना भी विशिष्ट एवं महाविद्या साधना ही है और सही कहा जाय तो महाविद्या साधनाओं से भी ज्यादा क्लिष्ट और जटिल है क्योंकि इस साधना में जिस एकाग्रता और पवित्रता की आवश्यकता होती है आज के युग में साधक सम्भवतः उसका निर्वाह नहीं कर सकता, किन्तु यह भी सत्य है कि गायत्री महाविद्या की साधना के द्वारा ही साधक अपने जीवन को जाज्वल्यमान बना सकता है।

वर्तमान में गायत्री मंत्र एवं गायत्री साधना को लेकर प्रचार - प्रसार तो बहुत हुआ है लेकिन एक महत्वपूर्ण तथ्य की उपेक्षा कर दी गई है कि **गायत्री मंत्र अपने मूल स्वरूप में एक आध्यात्मिक मंत्र है न कि जीवन को भौतिक उन्नति प्रदान करने वाला मंत्र।** पूर्ण रूप से आध्यात्मिकता एवं ब्रह्म विद्या से सम्बन्धित होने के कारण इसमें निहित गुह्य पक्ष यह है कि इसके निरन्तर चिन्तन, मनन, उच्चारण के द्वारा व्यक्ति का मन धीमे - धीमे भौतिकता से असम्पृक्त होकर पूर्ण आध्यात्मिकता की ओर उन्मुख हो जाता है, फलतः भौतिक जीवन में न्यूनता आना स्वाभाविक ही है।

किन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं है कि गायत्री साधना के द्वारा व्यक्ति अपने भौतिक जीवन को नहीं सुधार सकता। आवश्यकता यह है कि व्यक्ति गायत्री साधना की वह पद्धति प्राप्त करे जो भौतिक जीवन से भी सम्बन्ध रखने वाली हो। जीवन की अलग - अलग आवश्यकताओं के लिए अलग - अलग मंत्रों की आवश्यकता पड़ती है। एक ही मंत्र को लेकर सभी कुछ का निवारण नहीं किया जा सकता यद्यपि मूल शक्ति तो एक ही होती है और यही बात गायत्री साधना के सम्बन्ध में पूर्ण रूप से सत्य है।

मां भगवती गायत्री षट्शक्ति स्वरूपा हैं। ज्ञान शक्ति, इच्छा शक्ति, परा शक्ति, कुण्डलिनी शक्ति एवं मातृका शक्ति इनकी प्रमुख शक्तियां है और इनमें से प्रत्येक शक्ति की मानव जीवन में जो आवश्यकता है उसे कदाचित स्पष्ट करने की आवश्यकता नहीं है। इन्हीं छः मूल शक्तियों के परस्पर संयोजन से मानव जीवन संतुलित और भौतिक जगत में क्रियाशील हो सकता है। गायत्री साधना को इसी रूप में सम्पन्न करने से साधक भोग और मोक्ष दोनो की प्राप्ति के लिए उन्मुख हो सकता है।

यद्यपि गायत्री साधना के नाम पर गायत्री यज्ञ का प्रचलन रहा है किन्तु जब गायत्री साधना से सम्बन्धित यज्ञ किया जाय तब साधक को यज्ञ सम्बन्धी सारे तथ्य ज्ञात होने आवश्यक हैं। यज्ञ की वेदी, यज्ञ का कुण्ड, अग्नि स्थापन, पृथ्वी किन दिनों में रजस्वला होती है, कब निद्रा मग्न होती है, अग्नि का स्वरूप कैसा हो, अग्नि का नाम क्या हो, अग्नि का आह्वान कैसे हो - जैसे अनेक पक्ष ज्ञात होने नितांत आवश्यक होते हैं अन्यथा यज्ञ कुण्ड में आहुति डाल देने से ही यज्ञ सम्पन्न नहीं हो जाता। इसके स्थान पर साधना की पद्धति पूर्णतः प्रामाणिक, सरल और इस रूप में रचित होती है जिससे आम साधक भी लाभ प्राप्त कर सके। इस वर्ष गायत्री जयन्ती के अवसर पर मां भगवती गायत्री की इसी साधना का विवरण पाठकों के लाभार्थ स्पष्ट किया जा रहा है।

शास्त्रों में उल्लिखित है जिस मंत्र में जितने अक्षर होते हैं उसके उतने लाख मंत्र जप करने से ही एक अनुष्ठान पूर्ण होता है। गायत्री मंत्र में २४ अक्षर होने के कारण इसके २४ लाख मंत्र जप करने से एक अनुष्ठान की पूर्ति मानी जाती है जो अपने- आप में एक दुःसाध्य कार्य है और साधक को विभिन्न नियमों का विशेष ध्यान रखना आवश्यक होता है, **किन्तु यदि साधक गायत्री जयन्ती**

के दिन इस विशिष्ट साधना को सम्पन्न करता है तो उसे सम्पूर्ण विधि विधान को सम्पन्न करने की आवश्यकता नहीं रहती अर्थात् उसे आवश्यक नहीं रहता कि वह २४ लाख मंत्र जप सम्पन्न करे क्योंकि प्रस्तुत साधना विधान मूलतः गायत्री साधना होते हुए भी देवी के त्रिगुणात्मिका स्वरूप की साधना है जिसके द्वारा जीवन की उपरोक्त छः शक्तियों को प्राप्त किया जा सकता है।

गायत्री जयन्ती के दिन साधक को सूर्योदय से बहुत पूर्व उठकर स्नानादि से शुद्ध होकर संध्या करनी चाहिए और यदि उसे संध्या - विधि न ज्ञात हो तो संक्षिप्त रूप में सूर्य- साधना सम्पन्न कर इस दिवस की साधना में प्रवृत्त होना चाहिए। सूर्य साधना के समान ही इस साधना में भी साधक श्वेत वस्त्र धारण कर पूर्वाभिमुख होकर बैठे और अपने सामने एक ताम्र पात्र में अथवा लाल वस्त्र पर **लघु सूर्य यन्त्र** स्थापित कर उसका पूजन कुंकुम एवं अक्षत से कर सूर्य मंत्र की एक माला मंत्र जप करे।

सूर्य मंत्र -

हां ह्रीं सः सूर्याय नमः

इसके पश्चात् भगवान सूर्य को अर्घ्य दें और मूल साधना को प्रारम्भ करें, अपने सामने सूर्य यंत्र के दाहिनी ओर ताम्र पात्र अथवा लाल वस्त्र पर **षट्शक्ति रूपा गायत्री यंत्र** स्थापित करे, जो मां भगवती गायत्री के उपरोक्त वर्णित छः शक्तियों के मंत्र से आबद्ध हो। इस यंत्र के समक्ष **"श्रीं" यंत्र, "ह्रीं" यंत्र** एवं **"क्लीं" यंत्र** भी स्थापित करें। जिससे मां भगवती गायत्री अपने सरस्वती, काली एवं लक्ष्मी तीनों स्वरूपों में वरदायक सिद्ध हों और दैहिक, दैविक व भौतिक ताप का समापन कर, सभी प्रकार से सम्पूर्ण पराविद्या की प्राप्ति कराने में सहायक हों। साधक मुख्य यंत्र एवं तीनों लघु यंत्रों का पंचोपचार पूजन करें एवं **मां भगवती गायत्री के प्राण-प्रतिष्ठित चित्र** के समक्ष घी का दीपक लगाएं और निम्न रूप से प्रार्थना करें —

प्रार्थना -

ह्रीं श्रीं क्लीं चेति रूपेभ्यस्त्रिभ्यो हि लोकपालिका
भासते सततं लोके गायत्री त्रिगुणात्मिका।।

प्रार्थना के उपरान्त साधक अपने नित्य प्रयोजन में लायी जाने वाली **रुद्राक्ष माला** से गायत्री मंत्र की एक माला मंत्र जप करे।

गायत्री मंत्र -

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात्।।

तदुपरान्त इस विशिष्ट भाग्योदयकारी और पूर्ण रूप से उन्नतिदायक साधना के मूल मंत्र की एक माला मंत्र जप **गायत्री माला** से करें। यह माला इस साधना की आधारभूत सामग्री है और इसके एक-एक मनके को सूर्य की तेजस्वी रश्मियों द्वारा इस प्रकार चैतन्य किया जाता है जिससे साधक को सम्पूर्ण जीवन में प्रखरता देने योग्य बन सके। साधक इस माला के द्वारा भविष्य में कोई भी शक्ति साधना सम्पन्न कर सकता है।

षट्शक्ति स्वरूपा गायत्री मंत्र -

।। ॐ भूस्वर्विदे भुंवः ।।

मंत्र जप के उपरान्त गायत्री माला को गले में धारण कर लें तथा शेष सामग्री को २४ घंटे तक पूजा स्थान में रखा रहने के बाद पवित्रता एवं सम्मान के साथ विसर्जित कर दें। इस साधना के फलस्वरूप साधक को विविध अनुभूतियां एवं कुण्डलिनी शक्ति में स्फुरण आदि की दशाएं प्राप्त होने लगती है और यदि साधक आगे के जीवन में भी संतुलित व आचार - विचार से युक्त रहकर गायत्री साधना में रत रहता है तो शीघ्र ही अपने जीवन में अनेक मनोवांछित सफलताएं प्राप्त कर सकता है।

जैन तंत्र से . . .

यक्षिणी

धन, यौवन, प्रभुता के साथ सिद्ध होती है

तंत्रों के मध्य जैन तंत्र का एक अलग ही स्थान है। अलग इस रूप में कि जैन तंत्र में वामाचार का दूर-दूर तक कोई स्थान नहीं है और यह सही अर्थों में तंत्र का प्रतिनिधित्व करता है। जैन तंत्र अपनी पद्धतियों से स्पष्ट करता है कि बिना तीक्ष्ण विद्याओं का अवलम्बन लिए अथवा किसी विकृति के भी वह सब कुछ अर्जित किया जा सकता है, जिसकी प्राप्ति जीवन के लिए आवश्यक होती है। ऐसी ही तंत्र की अनेक पद्धतियां जैन समाज में घुलमिल गयी हैं और भले ही वे न जानते हों किन्तु उनके सामान्य पूजन में भी बहुत कुछ ऐसा समाहित होता है जो वस्तुतः तंत्र की विद्या है। यही कारण है कि जैन समाज कभी भी हीन नहीं रहा, दरिद्री अथवा श्री हीन नहीं हुआ।

जैन तंत्र पद्धति ने अपनी विशिष्ट शैली के अन्तर्गत उन सभी विषयों को लिया, जिनको सामान्य तंत्र पद्धति के अन्तर्गत लिया जाता रहा है। धन, यौवन,

यह सत्य है कि यक्षिणी साधना का बल जैन तंत्र जैसी सौम्य पद्धति ने भी लिया. . .

क्योंकि यक्षिणी अपने गुणों और प्रभुता प्रदान करने की क्षमता में है ही इस प्रकार. . .

प्रभुता प्राप्त करने के लिए जैन तंत्र में जहां पद्मावती प्रयोग एवं साधना को प्रमुखता दी गयी वहीं यक्षिणी साधना के द्वारा इसे अर्जित करने में कोई न्यूनता नहीं समझी गयी। वास्तव में इस प्रकार से कोई न्यूनता होनी भी नहीं है, अंतर तो केवल दृष्टि का है, भावनाओं व चिन्तन का है। व्यक्ति अपने सामान्य जीवन में भी उस धन का उपयोग करता है, जो उसकी पत्नी अर्जित करके लाती है और गृहस्थी की गाड़ी को पति-पत्नी दोनों ही समान रूप से उत्तरदायी होते हुए मिल-जुल कर चलाते हैं। इसी का प्राचीन रूप यक्षिणी साधना कह सकते हैं, जहां व्यक्ति अपनी साधना के द्वारा एक विशिष्ट वर्ग की स्त्री से सम्बन्ध जोड़कर उसके साथ भार्यावत् जीवन व्यतीत करता हुआ, उसके द्वारा प्रदत्त धन-सम्पत्ति आदि का उपभोग करता था।

जैन तंत्र इस दृष्टि से कुछ भिन्न है क्योंकि इसमें भोग के स्थान पर उन स्थितियों की चर्चा प्रमुखता से की गयी है, जिनके द्वारा व्यक्ति को अर्थ लाभ प्रचुरता से हो सके, वह समाज में श्रेष्ठ व्यक्तित्व बन

जैन तंत्र की पद्धति भिन्न है इसमें भोग के स्थान पर अर्थ प्राप्ति को ही प्रमुखता दी गई है जो सौम्य साधकों के लिए अधिक उचित पद्धति है।

सके और उसके व्यक्तित्व से प्रभुता का, स्वामित्व का प्रादुर्भाव हो सके। यद्यपि प्रकट स्तर से इसमें भी मूल भावना वही है जो अन्य तंत्रों की रही है किन्तु इसकी पद्धति सौम्य है एवं विषय वस्तु के स्पष्टीकरण में एक आवरण है, क्योंकि यह तो नितांत सत्य है कि जब भी किसी इतर योनिवय की स्त्री सन्तुष्ट होती है एवं धन आदि से पूर्णता देती है, तो उसका व्यवहार प्रेमिका या भार्या सदृश्य ही होता है। भारतीय तंत्र में इसी बात को दृढ़ता से कहा गया है जो एक प्रकार से पूर्ण पौरुष के साथ अर्जित कर लेने वाली जैसी बात है। फिर भी जिन साधकों की सौम्य साधनाओं में रुचि हो, उनके लिए जैन तंत्र की पद्धति ही उचित रहती है क्योंकि इस रूप में उन्हें जीवन की अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति भली-भांति हो जाती है।

यक्षिणी साधनाओं के विषय में भ्रामक स्थितियों की चर्चा शास्त्रों में इस प्रकार की गयी है कि पाठक उनके 'आतंक' से मुक्त नहीं हो पाता। कुछ का विचार होता है कि उन्हें इसके लिए जंगल में या श्मशान में जाना पड़ेगा, कुछ का विचार होता है कि कहीं वह विकराल स्वरूप में तो प्रकट नहीं होगी, तथा **साधकों के एक बड़े वर्ग के मध्य यह भी धारणा फैली हुई है कि यक्षिणी सिद्ध होने पर व्यक्ति के यौवन के साथ खिलवाड़ कर अंत में उसे निचोड़ कर ही छोड़ती है। ये सभी धारणाएं मिथ्या हैं,** फिर भी जिन्हें कोई शंका शेष रह जाए, उनके प्रति उचित रहता है कि वे जैन तंत्र की पद्धति का मार्ग ग्रहण करें और स्वयं अनुभव करें कि केवल एक यक्षिणी साधना के माध्यम से ही किस प्रकार जीवन में धन, मान, यौवन प्राप्त किया जा सकता है।

जैन तंत्र की यक्षिणी साधना पद्धति की विशेषता है कि इसमें प्रत्यक्षीकरण अधिक बल न देते हुए इस तथ्य पर अधिक बल दिया गया है कि किस प्रकार उसके वरदायक प्रभाव द्वारा व्यक्ति के विघ्न- बाधा नाश होकर ऐश्वर्य का आगमन हो? इस रूप में यह एक पूर्ण प्रायोगिक व व्यावहारिक पद्धति है तथा

यक्षिणी साधना करने से पूर्व मन में कोई भी झिझक न हो। क्या अर्थ प्राप्ति हेतु लक्ष्मी साधना, वैचाक्षी साधना आदि सम्पन्न नहीं की जाती? यक्षिणी भी एक धन प्रदायक देवी ही है।

किस प्रकार व्यक्ति धन-सम्बन्धी अनेक साधनाएं करता है और केवल अपने उद्देश्य से ही सम्बन्धित रहता है। यह उसी श्रेणी की साधना है, इस साधना को ऐसे साधकों को करना उचित नहीं, जो प्रत्यक्षीकरण अथवा अनुभूति की अपेक्षा करते हों। दूसरे विपरीत, शांत, सौम्य एवं केवल मात्र जीवन को ऊंचा न उठाने वाले साधकों को ही इसमें भाग लेना चाहिए। इसमें आयु अथवा लिंग का अर्थात् स्त्री-पुरुष का भी कोई भेद नहीं है, न इस बात की कोई झिझक होनी चाहिए कि मैं यक्षिणी की साधना कर रहा हूं। जिस प्रकार धन की कामना के लिए लक्ष्मी साधना, वैचाक्षी साधना आदि की जाती है, जैन तंत्र की यक्षिणी साधना भी इसी भाव से की जाती है।

जैसा कि प्रारम्भ में कहा, जैन सम्प्रदाय ने यक्षिणी को एक देवी मात्र माना है, अतः इसी कारणवश इनमें यक्षिणियों के विभिन्न नाम नहीं मिलते हैं वरन् ये मूल रूप से यक्षिणी शक्ति की ही साधना करते हैं। **इसका एक गुह्य पक्ष यह है कि जहां अन्य पद्धतियों में किसी विशिष्ट यक्षिणी की साधना कर धन, रूप, तेज, वल, यौवन आदि का लाभ पृथकतः प्राप्त किया जाता है, वहीं इस पद्धति में सभी लाभों को एक साथ प्राप्त करने की क्रिया की जाती है।**

जैन पद्धति से यक्षिणी साधना करने का रहस्य मुझे अपने परिचित एक जैन मित्र के द्वारा मिला। उन्हें पैतृक परम्परा से कुछ ग्रंथ मिले थे, जिनको उन्होंने मुझे आत्मीयतावश एवं मेरी भारतीय साधनाओं में प्रबल रुचि को देखते हुए भेंट स्वरूप दिया था। यद्यपि उस ग्रंथ में बहुत कुछ स्पष्ट था किन्तु यक्षिणी साधना का विवरण पढ़कर मैं भी चौंका, क्योंकि उस ग्रंथ के पढ़ने से पूर्व मुझे आभास ही नहीं था कि जैन साधना पद्धति में भी यक्षिणी साधना समाहित होगी, किन्तु आबू में अभी भी एकांतवास कर रहे पूर्ण निष्ठावान एक प्रमुख जैन विद्वान ने न केवल मेरी इस दिशा में सहायता की वरन् इस साधना के सन्दर्भ में आने वाली एक विशिष्ट सामग्री रत्नसारला का परिचय भी कराया, जो केवल आबू के पर्वतों में ही उपलब्ध होती है। मैं इस साधना

आबू में आज भी एकांत वास कर रहे उन वयोवृद्ध जैन मुनि का मैं आभारी हूं जिन्होंने मेरा परिचय रत्नसारला से करवाया। साधनाएं ऐसे ही योगियों के द्वारा आज भी जीवित हैं।

को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने से पूर्व उनका मानसिक वंदन करना आवश्यक समझता हूं क्योंकि ऐसे ही अनेक ज्ञात-अज्ञात योगियों ने स्वयं को समाज के सामने न रखते हुए, जिस प्रकार से समाज के कष्टों के

निवारण हेतु साधनात्मक उपाय खोजे हैं, उसी का परिणाम है कि इस देश में अभी भी साधना की परम्पराएं लुप्त नहीं हो सकी हैं।

शुक्ल पक्ष के सोमवार को की जाने वाली इस साधना में दो मीटर लम्बे एवं दो मीटर चौड़े कपड़े की आवश्यकता प्राथमिक है, जो सिला न हो, मध्य में चावलों की एक बड़ी ढेरी बनाकर **यक्षिणी यंत्र** की प्रतिस्थापना कर उसके ऊपर रत्नसारला को भी स्थापित करें एवं **यक्षिणी माला** से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र-जप करें।

मंत्र

णमो णमो यक्षिणी सिद्धं णमो फट्

मंत्र-जप के काल में घी का अखण्ड दीपक लगा लेना आवश्यक माना गया है। यह साधना प्रायः एवं सायं दो बार करनी आवश्यक है अर्थात् यदि सुबह आठ बजे की हो तो रात्रि में आठ बजे पुनः करें या इसी प्रकार सुबह और सायं का समय समान ही हो। मंत्र-जप के पश्चात् रात्रि शयन वहीं करें। श्वेत सुगन्धित पुष्पों से कक्ष को सुसज्जित रखें और रात्रि में साधना के उपरान्त उन सभी विषयों का चिन्तन करें जो आपके मन की कामना हो। दूसरे दिन प्रातः रत्नसारला को छोड़ कर शेष सामग्री पवित्र जल में विसर्जित कर दें तथा रत्नसारला को सुरक्षित रख लें।

इसके पश्चात् आने वाले दिनों में अपने जीवन में हो रहे परिवर्तनों को स्वयं अनुभव कर आप खुद स्पष्ट हो सकेंगे कि किस प्रकार आपके जीवन में एक अनोखी शांति और सौजन्यता आ रही है। इस साधना एवं इसके प्रभावों की चर्चा न करें। ❁

जैन साबर तंत्र के अनुभूत प्रयोग

१. दुकान की बिक्री बढ़ाने हेतु

सात गोमती चक्र लेकर प्रत्येक गोमती चक्र पर तीन-तीन बार निम्न मंत्र पढ़कर (अर्थात् कुल २१ बार) उन्हें दुकान के चौखट के नीचे गाड़ दें तो सर्व ग्राहक आकर्षण प्रयोग सिद्ध हो जाता है।

मंत्र- **ॐ अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय स्वाहा**

यह प्रयोग शनिवार के अतिरिक्त अन्य किसी भी दिन सम्पन्न कर सकते हैं।

२. गृह कलह शांति हेतु

यदि एक **सुघाण** लेकर सोमवार की रात्रि में अपने सामने स्थापित कर लें तो घर में नित्य प्रति बना रहने वाला गृह कलह, विषाद और आपसी झगड़े समाप्त होते ही हैं।

मंत्र- **ॐ शांते शांते शांति प्रदे जगत जीव हित शांति करे ॐ ह्रीं भगवति शांते मम शांति कुरु कुरु शिवम कुरु कुरु निरुपद्रव कुरु कुरु सर्व भयं प्रशमय प्रशमय ॐ ह्रां ह्रीं हः शांते स्वाहा।।**

इस मंत्र का २१ बार जप करना पर्याप्त है।

३. कामिनी मोहिनी प्रयोग

अपनी मनोवांछित प्रेमिका को वश में करने का यह जैन तंत्र का बेहद प्रभावशाली मंत्र माना गया है। अन्य स्त्रियों की बात तो क्या साक्षात् देव पत्नियां भी इस मंत्र से प्रभावित हो उठती हैं। अपने समक्ष किसी भी बुधवार की रात्रि को १० बजे के पश्चात् **कामिनी कामेश्वर यंत्र** रखकर यदि **सफेद हकीक की माला** से एक माला मंत्र जप करें तो मनोवांछित स्त्री सम्मोहित होती ही है।

मंत्र - **ॐ सुगन्धवती सुगन्धवदना कामिनी कामेश्वराय स्वाहा "अमुक" स्त्री वशमानय वशमानय।।**

'अमुक' के स्थान मनोवांछित स्त्री का नाम लें।

४. शिरोशूल की समाप्ति हेतु

यदि किसी आघात अथवा अज्ञात कारण से किसी व्यक्ति के सिर में असह्य पीड़ा उत्पन्न हो गयी हो तो निम्न मंत्र से जल को २१ बार अभिमंत्रित करके पिलाने से तुरन्त आराम मिलता ही है।

मंत्र - **ॐ जः हः सः**

५. नजर दूर करने का प्रयोग

छोटे बच्चों को किसी ऐसी आपदा से बचाए रखने के लिए आवश्यक ही हो जाता है जैन मंत्र से अभिमंत्रित **एक विशिष्ट नजर निवारक ताबीज** निम्न मंत्र के उच्चारण के द्वारा धारण करा दें तथा जब-जब वे अस्वस्थ प्रतीत हों तब-तब इस मंत्र से अभिमंत्रित जल उनके ऊपर छिड़क दें।

मंत्र - **ॐ आत्म चक्षु पर चक्षु भूत चक्षु शाकिनी चक्षु डाकिनी चक्षु पिसुन चक्षु सर्व चक्षु ह्रीं फट् स्वाहा।।**

केन्द्र में उथल पुथल अवश्यम्भावी है!

बहुत कुछ घटित होगा इस वर्ष के उत्तरार्ध में, चुनौती से भरे माह, राष्ट्र के लिए भी और राष्ट्रीय नेतृत्व के लिए भी। सभी बातों का प्रामाणिक विवेचन श्री विजय कलाल की पूज्यपाद गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी से फोन पर हुई वार्ता पर आधारित . . .

- वर्ष का उत्तरार्ध पहले छह महीनों से भी ज्यादा तनाव पूर्ण
- आतंकवाद चरम सीमा पर
- केन्द्र व श्री शेषन में मतभेद गंभीरतम
- वर्ष के अंत में प्रधान मंत्री गंभीरतम संकटो में
- जातीय विद्वेष विस्फोटक कगार पर

श्री विजय कलाल देश के एक लब्ध प्रतिष्ठित पत्रकार होने के साथ - साथ विभिन्न विषयों में पर्याप्त ज्ञान रखने वाले व्यक्तित्व हैं जिनकी अध्यात्म में भी विशेष रूचि रही है और उनका ही प्रयास रहा जो वे समय-समय पर पूज्यपाद गुरुदेव का इन्टरव्यू लेने में समर्थ हो पाए हैं अन्यथा **पूज्य गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी** सहज इन्टरव्यू के लिए सहमत नहीं होते हैं। क्योंकि उनका मानना है कि अध्यात्म एक ऐसा क्षेत्र है जिनमें प्रचार माध्यमों के प्रति जितना सीमित रहा जाए उतना ही अपने मूल लक्ष्य की पूर्ति में सफलता प्राप्त होती है।

श्री विजय पिछले कई महीनों से पूज्य गुरुदेव से अनुरोध कर रहे थे कि वे देश में हो रहे व्यापक परिवर्तनों एवं भविष्य के विषय में अपनी समीक्षा दें क्योंकि पूज्यपाद गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी प्रख्यात ज्योतिषी होने के साथ - साथ अपने जीवन का एक प्रमुख भाग संन्यस्त जीवन में साधनात्मक रूप से व्यतीत करने के कारण इस प्रकार प्रज्ञासम्पन्न व्यक्तित्व हैं जिससे वे कई ऐसी घटनाओं को भी भांप लेते हैं जोकि अन्यथा ज्योतिषीय दृष्टि से आंकलन करके भी नहीं ज्ञात की जा सकती।

देश पिछले कुछ महीनों से विविध समस्याओं से एवं दवाओं से जूझ रहा है और इसके व्यापक प्रभाव हुए हैं। आज सामान्य जनता भी अपने भविष्य को लेकर अनिश्चित हो रही है क्योंकि यह स्पष्ट होता जा रहा है कि प्रत्येक राष्ट्रीय अथवा अन्तर्राष्ट्रीय घटना का परिणाम सामान्य जनता को ही सहना पड़ता है चाहे वह **गैट** की बात हो या **डंकल** प्रस्ताव की। आज ये सब विषय केवल राजनयिकों के मध्य तक सीमित रह जाने वाले विषय नहीं रह गए हैं और इन्हीं सब मुद्दों को केन्द्र में रखकर श्री विजय कलाल ने जिस प्रकार पूज्यपाद गुरुदेव से वार्तालाप कर राष्ट्र की भावी छवि को प्राप्त करने का प्रयास किया उसके लिए वे बधाई के पात्र हैं।

यद्यपि कुछ परिस्थितियों के कारण वे व्यक्तिगत रूप से पूज्यपाद गुरुदेव से नहीं मिल सके किन्तु उन्होंने फोन पर हुई वार्तालाप को जिस प्रकार टेप कर हमें प्रकाशन के लिए उपलब्ध कराया उसके लिए हम उनके आभारी हैं।

यह वार्ता इस अंक के प्रेस में जाने से कुछ ही दिन पूर्व २६ मई की रात में हुई। हम इस वार्तालाप के उन अंशों को संक्षेप में प्रस्तुत कर रहें हैं जिनके अन्तर्गत डॉ० श्रीमाली द्वारा महत्वपूर्ण भविष्यवाणियों का प्रकाशन हो सका।

श्री विजय कलाल : डॉ० श्रीमाली जी आप सर्वप्रथम क्या यह स्पष्ट करेंगे कि आप भेंटवार्ताओं से इतना अधिक बहिष्कार जैसा क्यों करते हैं जबकि आप देश के श्रेष्ठतम ज्योतिषी और पूर्व में भारतीय ज्योतिष सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष रह चुके हैं। क्या आप अनुभव नहीं करते कि आपके ज्ञान की आवश्यकता देश के लिए उपयोगी सिद्ध होगी?

डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली : आपका खेद स्वभाविक है किन्तु यह विषय इतना गम्भीर है और मैं समय के अभाव से इस प्रकार ग्रसित हूं कि इस पक्ष की ओर पर्याप्त ध्यान नहीं दे पा रहा हूं। **अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार** की विभिन्न गतिविधियों एवं मेरे शिष्यों की समस्याओं, साधनाओं में मार्गदर्शन देने में व्यस्त होने के कारण सचमुच मैंने इस क्षेत्र में पहले की अपेक्षा ध्यान देना कम कर दिया है किन्तु उपेक्षा नहीं की है और न मैं देश में हो रहे विभिन्न परिवर्तनों एवं भावी उथल - पुथल से अनभिज्ञ हूं।

श्री कलाल : देश अभी विभिन्न विषमताओं एवं विदेशी प्रस्तावों के दबाओं से होकर गुजरा जिससे राष्ट्रीय स्वभिमान ने अपने को आहत अनुभव किया। आप इसके बारे में क्या समालोचना करेंगे।

डॉ० श्रीमाली : मैं राजनीतिज्ञों की भांति मत प्रकट करने में विश्वास नहीं करता और इस विषय से भी अधिक महत्वपूर्ण तो वे विषय हैं जिनका प्रभाव देश पर और भी अधिक सघनता से पड़ने जा रहा है। मेरा आन्तरिक चिन्तन उन्हीं बिन्दुओं पर केन्द्रित है क्योंकि वे घटनाएं देश की आम जनता को सीधे प्रभावित करेंगी।

श्री कलाल : ऐसी कौन सी घटनाएं, ऐसे कौन से विषय हो सकते हैं? क्या ये राज्यों में राजनीतिक उथल- पुथल से सम्बन्धित घटनाएं हैं? आतंकवाद की समस्याएं हैं या केन्द्र का किसी राज्य से टकराव जैसी बात?

डॉ० श्रीमाली : आतंकवाद की समस्या देश की प्रमुख समस्या है ही और मैं यह भी स्पष्ट कर दूं कि अभी यह समस्या इतनी शीघ्र समाप्त होनी भी नहीं है क्योंकि देश के एक भाग में इसे नियन्त्रित किया जायेगा तो दूसरे भाग में उभरेगी। एक वर्ग का आतंकवाद समाप्त होगा तो कोई दूसरा वर्ग आगे आ जायेगा और यह खींचतान अभी लगभग तीन वर्षों तक चलती रहेगी। यद्यपि बयानबाजी और प्रचार माध्यमों के द्वारा जो भी स्थिति बने वह अलग बात है लेकिन इस सम्बन्ध में जो आन्तरिक स्थिति रहेगी मैंने वही स्पष्ट की है। जहां तक राज्यों की उथल- पुथल या केन्द्र का किसी राज्य से टकराव जैसी बात आपने कही, वह मेरी दृष्टि में महत्वपूर्ण नहीं है।

श्री कलाल : निश्चित रूप से आप कुछ और संकेत कर रहे हैं, कृपया इसे और स्पष्ट करेंगे?

डॉ० श्रीमाली : राजनीतिक पटल पर भविष्य में होने वाली जो घटना मुझे सर्वाधिक उद्वेलित कर रही है वह यह है कि अक्टूबर में श्री शेषन एवं केन्द्र सरकार के विवाद गम्भीरतम होकर टकराव की स्थिति में पहुंच जाएंगे। श्री शेषन की दो टूक, बेलाग वक्तव्य शैली एवं प्रतिबन्धों से केन्द्र सरकार अपना संतुलन खो देगी। मीडिया द्वारा भी उनकी छवि धूमिल करने का प्रयास किया जायेगा। यद्यपि श्री शेषन इस स्थिति से कठिनतापूर्ण ढंग से निकल आएंगे लेकिन स्वस्थ राजनीतिक वातावरण की दृष्टि से इसे उचित नहीं कहा जा सकता है सम्भवतः श्री शेषन इस घटना के बाद अपने पद से मुक्त भी होना चाहें।

अक्टूबर में शेषन और केन्द्रीय सरकार में भीषण टकराव

श्री कलाल : क्या यह घटना अर्थात् आपके शब्दों में 'टकराव' मध्यावधि चुनाव के सन्दर्भ में होगा?

डॉ० श्रीमाली : नहीं। यह प्रश्न मध्यावधि चुनाव को लेकर नहीं होगा वरन श्री शेषन के द्वारा विभिन्न आचार संहिताओं के पालन तथा प्रतिबन्ध पर बल दिए जाने पर उत्पन्न होगा। संवैधानिक रूप से उनके अधिकारों को सीमित करने के प्रतिक्रिया - स्वरूप ही होगा।

यूं भी मध्यावधि चुनाव की स्थिति कम से कम इस वर्ष तो नहीं बन रही, हालांकि कांग्रेस (आई) के अन्तर्विरोध चरम सीमा पर होंगे और प्रधान मंत्री श्री नरसिंहराव को आन्तरिक कलह के कारण दिसम्बर माह में प्रबल चुनौतियों का सामना करना होगा। एक प्रकार से विपक्षी दलों से भी ज्यादा अपने ही दल के वरिष्ठ सदस्यों के कारण यह उनकी अग्नि परीक्षा का काल होगा। यद्यपि वे इस अग्नि परीक्षा में खरे भी उतरेंगे।

विषय कई थे, राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय सभी पक्षों को समेटते हुए किन्तु डॉ० श्रीमाली जी ने सभी का सटीक और प्रामाणिक उत्तर प्रदान किया। इस भेंटवार्ता की अगली कड़ियों में हम उन सभी विषयों को समेट रहे हैं, चाहे वह आणविक क्षेत्र में भारत की प्रगति हो, विश्व युद्ध की बात हो या राष्ट्रों की नई मैत्री और टकराव जैसी बात हो।

अस्थि चर्म युक्त देह को ही गुरु नहीं कहते, अपितु इस देह में जो ज्ञान समाहित है, उसे 'गुरु' कहते हैं। इस ज्ञान-प्राप्ति के लिए उन्होंने जो तप और त्याग किया है, हम उन्हें नमन करते हैं, इस ऊर्ध्वमुखी ज्ञान-प्राप्ति से जो तेजस्विता प्राप्त हुई है, हम उसका अभिनन्दन करते हैं।

हमने ईश्वर को तो देखा नहीं, पर उसके सदृश्य गुरु को अवश्य देखा है, जो हमें पग-पग पर सावधान करता है, नित्य मार्गदर्शन देता है, विपत्तियों में धैर्य बंधाता है, कष्टों को सहन करने की क्षमता प्रदान करता है और मल-मूत्र से भरी देह को दिव्य आलोकित कर 'उस' ब्रह्म से लीन करने की सामर्थ्य प्रदान करता है, जो मानव का अन्तिम लक्ष्य है।

इसलिए शास्त्रों में 'गुरु' का महत्व सभी देवताओं से ऊंचा माना है, गुरु का पूजन सबसे पहले किया जाता है, गुरु की वन्दना ईश्वर से भी पूर्व शास्त्र सम्मत कही गयी है।

हमारे सुविज्ञ पाठकों की कामना थी कि हमने जहां पत्रिका के माध्यम से तांत्रोक्त गुरु पूजन की पद्धति स्पष्ट की है वहीं मांत्रोक्त गुरु पूजन की प्रामाणिक पद्धति भी स्पष्ट करें। उनके इसी आग्रह को ध्यान में रखते हुए गुरु पूर्णिमा के पावन माह में मांत्रोक्त पूजन की शास्त्रोक्त पद्धति प्रस्तुत की जा रही है जो गृहस्थ साधकों की जीवन चर्या के लिए सर्वाधिक अनुकूल तथा सदा -सदा से अनुगम्य रही है।

जिस प्रकार तांत्रोक्त गुरु पूजन में साधक को विशिष्ट सामग्रियों एवं यंत्र की आवश्यकता रहती है उसी प्रकार मांत्रोक्त साधना में साधक के पास ताम्र पत्र पर अंकित **गुरु यंत्र चित्र, स्फटिक** अथवा **रुद्राक्ष माला, गुरु चरण पादुका** एवं **सिद्धाश्रम गुटिका** की नितान्त आवश्यकता रहती है। मांत्रोक्त गुरु साधना में साधना सामग्री तांत्रोक्त पद्धति की अपेक्षा और भी अधिक

महत्वपूर्ण होती है क्योंकि तंत्र की पद्धति में साधक एक बार फिर भी किसी विशिष्ट सामग्री के अभाव की पूर्ति अपने तप बल से कर सकता है किन्तु मांत्रोक्त पद्धति में उस अभाव की पूर्ति केवल यंत्र ही करते हैं।

प्राथमिक पूजन एवं आसन शुद्धि करने के पश्चात् गुरु यंत्र का संक्षिप्त पूजन कर, सुगन्धित अगरबत्ती एवं घी के दीपक प्रज्ज्वलित कर निम्न प्रकार से यह विशिष्ट साधना प्रारम्भ करें एवं जिस क्रम में क्रियाएं शीर्षक रूप में दी गई हैं उन्हें उसी रूप में सम्पन्न करें।

सर्वप्रथम पूज्यपाद गुरुदेव का ध्यान करें।

श्री गुरु ध्यान

द्विदल कमलमध्ये बद्धसंवित्समुद्रं
धृतशिवमयगात्रं साधकानुग्रहार्थम्।
श्रुतिशिरसि विभान्तं बोधमार्तण्डमूर्तिं
शमित तिमिर शोकं श्रीगुरुं भावयामि।।
हृद्यंबुजे कर्णिकमध्यसंस्थं
सिंहासने संस्थितदिव्यमूर्तिम्।
ध्यायेद् गुरुं चन्द्रशिलाप्रकाशं
चित्पुस्तकाभीष्टवरं दधानम्।।
श्रीगुरुचरणेभ्यो नमः ध्यानं समर्पयामि।

आह्वान

ॐ स्वरूपनिरूपण हेतवे श्री गुरवे नमः।
ॐ स्वच्छप्रकाशविमर्श-हेतवे श्रीपरमगुरवे नमः।
ॐ स्वात्माराम पञ्जरविलीनतेजसे श्रीपरमेष्टि गुरवे नमः, आवाहयामि पूजयामि।

आसन

ॐ इदं विष्णुर् विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्।
समूढमस्य पा (गूं) सूरे स्वाहा।।
श्री गुरुचरणेभ्यो नमः आसनार्थे पुष्पं समर्पयामि।

चरणों में पुष्प चढ़ावें एवं सिद्धाश्रम गुटिका पर पूज्यपाद गुरुदेव के सूक्ष्म रूप में स्थापित होने की भावना दें।

पाद्य-स्नान

गुरु चरण पादुकाओं पर निम्न मंत्रोच्चार के साथ आचमनी से जल डालें एवं मंत्रोच्चार के पश्चात् पुनः आचमनी से जल अर्पित करें –

ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर् यजत्राः स्थिरैरंगै स्तुष्टुवा (गूं) सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः। स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः। स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः। स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।
श्री गुरुचरणेभ्यो नमः पाद्यं, अर्घ्यं, आचमनीयं, स्नानं च समर्पयामि। पुनः आचमनीयं जलं समर्पयामि।

गुरु चरण पादुकाओं को जल अर्पित करके अच्छी तरह से पोंछ दें व वस्त्र अर्पित करें।

वस्त्र

श्री गुरुचरणेभ्यो नमः वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि आचमनीयं समर्पयामि।

चन्दन-अक्षत

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।
ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्दितोमुक्षीय मामृतात्।।
श्रीगुरुचरणेभ्यो नमः चन्दनं अक्षतान् च समर्पयामि।

पुष्प

ॐ नमः शंभवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।।
श्री गुरुचरणेभ्यो नमः पुष्पं बिल्वपत्रं च समर्पयामि।

दीप

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा। सूर्योज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्च्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा। सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।
श्री गुरुचरणेभ्यो नमः दीपं दर्शयामि।

नैवेद्य

नैवेद्यप्रोक्षण– ॐ गुरुदेवाय विद्महे परब्रह्माय धीमहि तन्नो गुरु प्रचोदयात्।
ॐ नाभ्याऽआसीदन्तरिक्ष (गूं) शोर्ष्णोद्यौः समवर्तत। पद्भ्याम्भूमिर्दिशः श्रोत्रांस्तथा-लोकाँऽअकल्पयन्।
श्रीगुरुचरणेभ्यो नमः नैवेद्यं निवेदयामि नानाऋतुफलानि च समर्पयामि।

नीराजन

ॐ इद (गूं) हविः प्रजननम्मे अस्तु दशवीर (गूं) सर्वगण (गूं) स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि पशुशनि लोकसन्यभयसनिः। अग्निः प्रजांबहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त।
ॐ न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं नेमा विद्युतो भाति कुतोऽयगमग्निः। तमेव भांतमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति।

कर्पूरगौरं करुणावतारं
संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे
भवं भवानी सहितं नमामि।।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव।
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव।।
त्वमेव सर्वं मम देव देव।।

नीराजनं निर्मलदीप्तिमद्भिर्
दीपांकुरैरुज्ज्वलमुच्छ्रितैश्च।
घंटानिनादेन समर्पयामि
मृत्युंजयाय त्रिपुरान्तकाय।
श्रीगुरुचरणेभ्यो नमः नीराजनं दर्शयामि।

जल आरती

ॐ द्यौः शांतिरन्तरिक्ष (गूं) शांतिः पृथ्वी शांतिरापः शांतिरोषधयः शांतिः वनस्पतयः शांतिर्विश्वे देवाः शांतिर्ब्रह्मशांतिः सर्व (गूं) शांतिः शांतिरेव शांतिः सा मा शांतिरेधि।

पुष्पांजलि

ॐ न कर्मणा न प्रजयाघनेन त्यागैनैके अमृतत्वमानशुः।
परेण नाकं निहितं गुहायां विभ्राजते यद्यतयो विशन्ति।।
वेदान्तविज्ञान सुनिश्चितार्थाः संन्यासयोगाद् यतयः शुद्धसत्वाः
ते ब्रह्मलोकेषु परान्तकाले परामृताः परिमुच्यन्ति सर्वे।।
यो वेदाद्यौ स्वरः प्रोक्तो वेदान्ते च प्रतिष्ठितः।
तस्य प्रकृतिलीनस्य यः परः स महेश्वरः।।
ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो
विश्वतोबाहुरुतविश्वतस्पात। सम्बाहुभ्यां धमति
सम्पतत्रौर्द्यावाभूमि जनयन् देव एकः।।
नाना-सुगन्ध पुष्पाणि यथा कालोद्‌भवानि च।
पुष्पांजलिं मया दत्तं गृहाण गुरुनायक।।
श्रीगुरुचरणेभ्यो नमः मन्त्र-पुष्पांजलिं समर्पयामि।

नमस्कार-प्रार्थना-स्तुति

ॐ नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्त्रमूर्तये सहस्त्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्त्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्त्रकोटियुगधारिणे नमः।।
नमः कमलनाभाय नमस्ते जलशायिने
नमस्ते केशवानन्त वासुदेव नमोऽस्तु ते।।
वासनाद् वासुदेवस्य वासितं भुवनत्रयं
सर्वभूतनिवासोऽसि वासुदेव नमोऽस्तु ते।।
अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।
अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानान्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।।
गुरुः साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।
श्रुतिस्मृतिपुराणानामालयं करुणालयम्।
नमामि भगवत्पादं शंकरं लोकशंकरम्।।
शंकरं शंकराचार्यं केशवं बादरायणम्।
सूत्रभाष्यकृतौ वन्दे भगवन्तौ पुनः पुनः।

विशेषार्घ्य

ब्रह्मानन्दं परम सुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं
द्वंद्वातीतं गगन-सदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम्।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतं
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्‌गुरुं तं नमामि
श्रीगुरुचरणेभ्यो नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

समर्पण

देव-देव गुरुर्देव पूजां प्राप्य करोति यः।
त्राहि त्राहि कृपा सिन्धो पूजां पूर्णतरां कुरु।।
अनया पूजया श्रीगुरुः प्रीयन्ताम्।
ॐ तत्सद् ब्रह्मार्पणमस्तु।

अन्त में हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें कि हे प्रभु! यह सम्पूर्ण पूजन आप द्वारा प्रदत्त ज्ञान एवं आप द्वारा प्रदत्त बल एवं भावना के द्वारा ही सम्पूर्ण हुआ है आप मुझ अकिंचन पर कृपा बनाए रखें।

इस प्रकार साधक किसी भी गुरुवार को अथवा जब भी मन में उच्चकोटि की साधना करने की इच्छा हो गुरु सामीप्यता प्राप्त करने की भावना हो कुछ क्षण छल-प्रपंच से कटकर आध्यात्मिक अनुभूतियों में निमग्न होने की भावना हो तब - तब इस सम्पूर्ण पूजन को अवश्य सम्पन्न करें जिससे चित्त में निर्मलता आ सके तथा जीवन पवित्र, उदात्त एवं सुखी हो सके।

अंत में क्षमा प्रार्थना कर अपने स्थान को छोड़ें।

यदेतत्स्वच्छन्दं विहरणामकार्पण्यमशनं
सहार्यैः संवासः श्रुतमृशमैकव्रत फलम्।
मनो मन्दस्पन्दं बहिरषि चिरस्यापि विमृश
न जाने कस्यैधा परिणति रुदारस्य तपसः।।

स्वच्छंद, निर्भीक विहार करना, दीनता रहित भोजन करना, सत्पुरुषों का साथ, मन को शांति देने वाले शास्त्रों का उपशम- व्रतरूपी फलदायी शास्त्रों का श्रवण करना, सांसारिक भावों में मन की प्रवृत्ति का मंद होना आदि का चिरकाल तक विचार- विमर्श करने पर भी समझ में यह नहीं आता कि यह सब किस विशेष तपस्या का फल है।

सर्वाइकल स्पॉन्डलाइटिस एवं योग द्वारा उपचार

● स्वामी आत्मदर्शन सरस्वती

मैंने योग पद्धति द्वारा विभिन्न रोगों के निदान हेतु विभिन्न स्थानों पर योग-शिविरों का संचालन कर योग के सफल परिणामों का अनुभव किया है और दमा, डॉयबिटीज, ब्लड प्रेशर तथा अन्य प्रकार के रोगों से लोगों को छुटकारा पाते हुए देखा है। किसी भी चिकित्सा पद्धति के साथ योगाभ्यास का भी सहारा ले लिया जाये, तो सफलता की सम्भावनाएं निश्चित ही बढ़ जाती हैं, क्योंकि योग अपने-आप में ही पूर्ण विज्ञान है, जीवन को जीने की सम्पूर्ण शैली है तथा आध्यात्मिकता की पराकाष्टा है, जो जीवन के सभी पक्षों को प्रशस्त कर उच्चता की भाव-भूमि को स्पर्श कराता है।

आधुनिकीकरण का अभिशाप एक बहुत जानी-पहिचानी बीमारी के रूप में उभर कर सामने आ रहा है और बहुप्रचलित हो गया है, भीड़ में अधिकांश व्यक्ति CERVICAL SPONDLITIS DISESSE से पीड़ित गले में एक कॉलर जैसा पट्टा बांधे दिखाई दे ही जाते हैं। आधुनिक चिकित्सा पद्धति में इस रोग का निदान TRACTION विधि द्वारा किया जाता है, जो कुछ समय के लिए ही व्यक्ति को राहत दे पाता है और व्यक्ति पुनः उसी प्रकार से पीड़ा से कराहता ही रहता है। PAIN KILLERS द्वारा निरन्तर रोगी दर्द से राहत पाने का निष्फल प्रयास करता है परन्तु इस चिकित्सा द्वारा इसका निदान सम्भव नहीं हो पाता, ऐसे कई रोगी वर्षों तक इस पीड़ा को भोगते देखे जा चुके हैं।

धारणा -

यौगिक चिकित्सा पद्धति में इस रोग के कारणों पर विशेष बल दिया गया है, यदि कारण ज्ञात हो जाए तो किसी भी रोग का निदान सरलता पूर्वक किया जा सकता है।

१. रोगी की जीवनचर्या का अत्यधिक समय तनाव-ग्रस्त जीवन के दौर से गुजरते रहना, दैनिकचर्या का दोषपूर्ण होना अर्थात् रात में देर से सोना, दिन में देर से उठना।
२. अधिक समय तनाव पूर्ण जीवन व्यतीत करना।
३. अधिक समय कुर्सी या सोफे पर बैठकर समय व्यतीत करना।
४. अनियमित समय भोजन करना।
५. गलत तरीके से बैठने का अभ्यास।
६. शारीरिक व्यायाम या श्रम नहीं होना।

यह रोग अधिकांश कार्यालय या व्यवसायी वर्ग में ही अधिक पाया जाता है। इस रोग के निदान हेतु यौगिक चिकित्सा पद्धति ही एकमात्र अचूक इलाज सिद्ध हुआ है। योग के द्वारा मात्र कुछ दिनों में ही हमने रोगी को हंसते देखा है। रोग की पीड़ा के कारण रोगी दर्द से परेशान होकर मार्फिया का इंजेक्शन लेने हेतु डॉक्टर से आग्रह करता है और हाथ कटवाने तक के लिए तैयार हो जाता है।

ऐसी स्थिति में उपचार हेतु योग पद्धति शत-प्रतिशत सफल सिद्ध हुई है। योग का प्रभाव समस्त स्नायु तंत्र को प्रभावित कर रीढ़ की हड्डी में निहित तनावों को दूर करता है, जिसके कारण रोगी बहुत ही शीघ्र आराम महसूस करने लगता है।

रोग के लक्षण -

रोगी के मानसिक, शारीरिक तथा भावनात्मक तनावों से लगातार ग्रसित रहने के कारण, रीढ़ की हड्डी में निहित ३२ कशेरुकाओं के मध्य में स्थित नाड़ियों, धमनियों तथा शिराओं में सूजन आ जाने से दो कशेरुकाओं के बीच जो द्रव्य पदार्थ होता है उसमें कड़ापन आ जाता है और कशेरुकाओं की गति में अवरोध पैदा हो जाने से स्नायुओं, रक्तवाहिनियों पर दबाव पड़ने से जो गति सहज होनी चाहिए उसमें रुकावट आ जाता है, और यह रूकावट दर्द को जन्म देता **है। धीरे-धीरे यह** दर्द इतना अधिक बढ़ जाता

है कि वह रोगी की सहनशीलता से परे हो जाता है और रोगी आगे झुकने में, हाथ हिलाने-डुलाने में भी कष्ट का अनुभव कर बेचैन तथा तड़फने लगता है। धीरे-धीरे यह सूजन सतत् बढ़ने लगती है और यह पीड़ा हृदय तक पहुंच जाती है। इस असहनीय पीड़ा को नहीं सह पाने के कारण व्यक्ति दवाएं लेता हुआ भी हर समय भयभीत रहता है। इस प्रकार अधिकाधिक तनावों को बढ़ाता हुआ, यह रोग और अधिक बढ़ता जाता है। परिणाम स्वरूप डॉक्टर उस रोगी को TRACTION के बाद सामने न झुकने की सलाह देते हैं, जो कि सर्वथा प्रकृति के विपरीत है।

योग द्वारा उपचार

योग में सर्वप्रथम व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक तथा भावनात्मक स्थिति का अवलोकन किया जाता है। किसी भी प्रकार की स्थिति में सर्वप्रथम यह आवश्यक होता है कि तत्काल हीं शिथिलीकरण की अवस्था द्वारा व्यक्ति के तनावों को कम किया जाए क्योंकि प्रत्येक रोग की जड़ें तनावों से ही पोषित होती हैं, अतः रोगी को शवासन में लिटाकर शिथिल करने का अभ्यास कराया जाता है। उसे उस सीमा तक शिथिल करने का प्रयास किया जाता है जब तक कि उसकी गर्दन तथा पृष्ठ भाग पूरी तरह से विश्राम की स्थिति में न चला जाए। तत्पश्चात् हठ योग की क्रियाओं से धीरे-धीरे लिटा कर अथवा बिठाकर रोगी को पवन मुक्तासन के प्रारम्भिक अभ्यास कराए जाते हैं, जिससे कि हाथों के तनाव तथा गर्दन के पृष्ठ भाग के तनाव दूर होकर उसमें कड़ापन से लचीलापन आने लग जाए और रक्तवाहिनियों में रक्त का प्रवाह सुचारु रूप से होकर दो कशेरुकाओं के बीच का जो अवरोध है वह दूर हो सके तथा प्राण- शक्ति का बहाव तीव्रतर हो सके। जैसे-जैसे यह स्थिति व्यवस्थित होती है पीड़ा के कम होने से रोगी को आराम मिलने लगता है। कभी-कभी यह स्थिति दुःसाध्य भी हो जाती है, उस स्थिति में रोगी को धीरे-धीरे आसन से प्राणायाम, जिसमें प्राण विद्या द्वारा आज्ञा चक्र से प्राण संचय कर, पूर्ण वेग से प्राणों को उस पीड़ित अंग की ओर भेज कर प्राण प्रवाह को वेग के साथ बहा देने की क्रिया भी कराई जाती है, जिससे प्राणिक ऊर्जा बढ़कर, मानसिक तरंगों के तीव्र प्रवाह को संतुलित कर रोग के वेग को कम करने में सफलता प्राप्त होती ही है।

ध्यान के अभ्यास के द्वारा इस रोग को सदैव के लिए समाप्त किया जा सकता है, क्योंकि ध्यान के अभ्यास में पद्मासन और रीढ़ की हड्डी को सीधा रखना ही होता है, अतः धीरे-धीरे स्नायु तंत्र शिथिल और व्यवस्थित होता है, जिससे रीढ़ की हड्डी में स्थित कशेरुकाओं के बीच का द्रव्य सरलता पूर्वक अपनी स्थिति ले लेता है और रक्तवाहिनियां भी शिथिल होने लगती हैं, जिससे सूजन हटती है और रोगी हल्कापन अनुभव करने लगता है और धीरे-धीरे रोग समाप्त हो जाता है।

षट्कर्म -

षट्कर्म की क्रियाओं नेति, धोति, कुंजन, लघु शंख प्रक्षालन की क्रियाओं द्वारा मुंह से गुदाद्वार तक का संस्थान शोधित किया जाता है, जिससे रक्त में निहित यूरिक अम्ल तथा अन्य विषाक्त तत्वों का शरीर से निष्कासन कर शरीर को लचीला और शुद्ध कर दिया जाता है, जिससे स्वतः ही रोग की सम्भावनाएं कम हो जाती हैं और रोगी आगे के जीवन में सहज ही सरल क्रियाएं कर अपने को स्वस्थ रखने में पूर्ण सफल हो जाता है।

योगाभ्यास के सरल रूप

उपरोक्त सभी अभ्यास व्यवहारिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक से ही सीख कर करना चाहिए, तभी सफलता प्राप्त की जा सकती है। इस प्रकार से इस कष्टप्रद रोग से योग द्वारा निश्चित ही छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

पवन मुक्तासन

१. सुखासन में पालथी मार कर बैठ जाएं। दोनों हाथ सामने कंधों की सीध में फैला दें। हाथ की उंगलियों को कस कर मुट्ठी बांध लें, फिर खोलें, इस प्रकार आठ-आठ बार करें।
२. तत्पश्चात् सुखासन में ही सामने हाथ फैला कर कलाई से हाथ को नीचे-ऊपर गति दें और इस प्रकार से आठ-आठ बार दोहराएं।
३. तत्पश्चात् मुट्ठी को कस कर बांधते हुए कलाई से गोल घुमाएं **clock wise** तथा **anticlockwise** आठ-आठ बार।
४. सुखासन में ही दोनों हाथों को सामने फैला कर कोहनी से (आठ बार) आगे पीछे करें।
५. सुखासन में ही हाथ पर कुछ रख कर कंधे गोलाई से घुमाएं **clockwise** तथा **anticlock wise** (आठ बार)
६. सुखासन में ही गर्दन को ढीला छोड़ते हुए आगे-पीछे, दायें-बायें (तीन बार) घुमाना। (उच्च रक्त चाप वाले न करें)
७. खड़े होकर दोनों हाथों को ऊपर की ओर फैला कर ऊपर की ओर खींचें।

सर्पासन- पेट के बल लेटकर सर्पाकार स्थिति में जाना। दोनों हाथ जमीन पर शरीर के समानान्तर रखते हुए नाभि तक का भाग ऊपर उठाना और १ मिनट तक इस अवस्था में रहना।

मकरासन - पेट के बल लेटकर, दोनों हाथों को ठोडी के नीचे लगाकर, गर्दन ऊपर कर, कोहनी पर हाथों को टिकाते हुए पेट तक ऊपर उठकर मात्र १ मिनट तक विश्राम करना।

शवासन- अंत में शवासन में शिथिलीकरण का अभ्यास कर आसन समाप्त करना चाहिए।

● हरिराम चौधरी
बस्ती

वीर साधना

जिस प्रकार मैंने सिद्ध की

●●●

वीर . . . यह नाम अपने-आप में सारे शरीर में एक हलचल मचा देने वाला, रोम-रोम को अनोखी ऊर्जा से भर देने वाला है, मानो कोई तेज अपने भीतर तक जाकर समा गया हो और उसके सामने समस्त विश्व बौना दिखने लग गया हो।

वीर साधना प्रत्येक वह साधक अपने जीवन में सम्पन्न करता ही है जिसे आगे बढ़ने की कामना हो, साधनाओं को पूर्णता से सिद्ध करने का हौंसला हो। प्रत्यक्ष अनुभूति पर आधारित एक प्रामाणिक साधना पद्धति के विवरण से युक्त लेख . . .

●●●

मुझे हमेशा से **'वीर'** शब्द इसी प्रकार लगता रहा ज्यों कोई भूली - बिसरी कड़ी हो. . . और जब मन ने साधना करने की ठान ही ली तो छोटी-मोटी साधनाओं में आनन्द ही कहां? अन्य साधनाएं तो जीवन-यापन की साधनाएं हैं, जीवन की समस्याएं सुलझाने की युक्तियां हैं। साधना का वास्तविक आनन्द तो कुछ और ही होता है, जो पौरुष का आनन्द होता है। जब किसी अलौकिक बल से रोम-रोम में यौवन की चमक लहराने लगती है और वक्षस्थल में कुछ मीठी खुमारी सा भर जाता है, आंखों में चमक उतर आती है और चाल मदमस्त हाथी सी हो जाती है।

ऐसे साधक को फिर साधना जगत में छोटी-मोटी साधनाएं करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। क्योंकि जहां इस प्रकार का पौरुष होता है, जीवन जीने का उत्साह लहरा रहा होता है वहां तो साधनाएं-सिद्धियां खुद ब खुद आकर खड़ी हो जाती हैं। साधना जगत में सिद्धि को स्त्री स्वरूप माना गया है, जो पौरुष से स्वयमेव वशीभूत होकर और मोहित होकर साधक के चारों ओर मंडराने लग जाती है। वीर साधना ऐसी ही साधना है।

पूर्वजन्म की स्मृतियों से मुझे कुछ आभास होता था। लेकिन ज्ञान नहीं था कि मैं इसे किस प्रकार सम्पन्न करूं। और एक विलक्षण तेज के साथ-साथ, पौरुष को रग-रग में उतारने के साथ-साथ ऐसा सुरक्षा चक्र भी प्राप्त करूं, जिससे जीवन भर के लिए निश्चिंतता बन सके। मैंने अनेक साधना ग्रंथ पढ़े, साधुओं, योगियों और जानकार लोगों से मिला लेकिन मुझे तृप्ति नहीं मिली। जिस

प्रकार से उनके अटपटे विवरण मुझे मिलते थे उससे तो वितृष्णा और भी बढ़ती चली गई। कहीं श्मशान में मुर्दे पर बैठकर मंत्र-जप, तो कहीं भक्ष्य-अभक्ष्य खाकर सर्वथा अघोर पद्धति से मंत्र-जप, तो कहीं वाम मार्गीय बन्धनों से आबद्ध होकर साधनारत होने का विधान, अजीबोगरीब वस्तुओं का संग्रह कर उनको यंत्र के रूप में प्रयुक्त करने का निर्देश . . . जबकि **वीर साधना तो पूर्णरूप से सौम्य साधना रही है, जिसे सिद्ध कर श्री हनुमान 'महावीर' कहलाए और जिसे परोक्ष-अपरोक्ष रूप से प्रत्येक संन्यासी ने सिद्ध करके अपने जीवन को निश्चिन्तता दी है।** मेरा मन उद्विग्न रहा करता था कि तभी मुझे संयोगवश पत्रिका के एक पुराने अंक में इसका विवरण पढ़ने का अवसर मिला। विवरण क्या मिला, मानो मेरी टूटी कड़ी ही जुड़ गई, एक ही क्षण में पूर्ण तृप्ति मिल गई। मैं जो कुछ खोज रहा था वही सब कुछ उन पन्नों पर मिल गया। मेरा मन एक प्रकार से नृत्य कर उठा।

साधना-जगत के ज्ञाता ही इस आनन्द को समझ सकते हैं, जिन्हें प्रवेश करने के बाद जीवन-यापन की साधनाओं से ऊपर उठकर वेग और पौरुष की साधनाओं को अपनाने का मौका मिला हो, जिन्होंने अद्वितीय व्यक्तित्व बनने की ठान लिया हो और निश्चय कर ली हो, कि मुझे हर हाल में अपने घिसे-पिटे जीवन से मुक्ति प्राप्त कर एक चिंगारी बनना ही है, ऐसा कुछ करना ही है जिससे मेरे स्वयं के अस्तित्व की सार्थकता हो सके और जीवन की यात्रा किन्हीं संयोगों पर आधारित न होकर मेरे नियंत्रण में हो। मेरे जीवन की घटनाएं मेरे द्वारा ही संचालित हो सकें, जो जीवन में रास्ते के पत्थर की तरह नियति की ठोकर खाकर इधर से उधर लुढ़क जाता है वह दृढ़ चट्टान जैसा बन सके।

पूज्य गुरुदेव द्वारा अत्यन्त सरल शब्दों में बिना किसी विद्वता-प्रदर्शन अथवा जटिल उद्धरण के वीर साधना विवरण एवं रहस्य पत्रिका के पन्नों पर जिस प्रकार उतार दिया गया था, उससे बाध्य होकर यह चिन्तन मन में उपजता ही था कि इस प्रकार से तो साक्षात् शिव ही ज्ञान को वितरित कर सकते हैं। जबकि किसी उच्चकोटि के साधु-संन्यासी के पास भी यदि ऐसी विद्या हो, तो वे उसे अपने प्रियतम शिष्य के अतिरिक्त किसी को देते ही नहीं हैं, वह भी जीवन के अन्तिम क्षणों में। क्योंकि जिसने वीर को सिद्ध कर लिया उसके लिए असम्भव रह भी क्या गया?

वायु को बांध देना, अग्नि को शीतल कर देना, हजारों किलोमीटर दूर पड़ी वस्तु को अपने पास मंगा लेना, मनोवांछित पदार्थ शून्य से प्राप्त कर लेना और हजारों-हजारों शत्रुओं के बीच में भी बेधड़क विचरण करना, एक प्रकार से प्रकृति के किसी भी व्यापार में अपना हस्तक्षेप कर उसे प्रभावित कर देना, वीर साधना से ही तो सम्भव होता है। और **जिसने वीर साधना सिद्ध कर ली वह केवल एक या दो को ही नहीं हजारों की भीड़ को यों नियंत्रित कर लेता है मानो वे जीवित मनुष्य न होकर उसके सामने खड़ा भेड़ों का कोई झुंड हो।** इसी से यह विद्या इतनी गोपनीय रही, क्योंकि इसका पूर्ण प्रभाव यदि एकाएक किसी को प्राप्त हो जाए तो वह शक्ति के मद में चूर होकर पता नहीं क्या कुछ घटित कर दे। दूसरी ओर इस साधना के व्यावहारिक और सीमित उपयोग भी हैं। इसकी दैनिक जीवन में भी महत्ता है, जिससे साधक अपने जीवन में निर्भीक बन सके, स्वच्छन्द भाव से जी सके, और पूर्ण पौरुषवान बनकर अपने जीवन के सभी सुखोपभोग कर सके।

लेकिन जो साधना सारे विश्व को चुनौती देने की साधना हो, क्या वह स्वयं में एक चुनौती नहीं है? वीर साधना सिद्ध होने पर जितनी रक्षाकारक और फलदायक है प्रारम्भ में वह उतनी ही चुनौती पूर्ण भी है, क्योंकि यह दमखम से भरे साधकों के जीवन की घटना होती है। जिन्हें जोखिम उठाने से भय लगता हो यह साधना उनके लिए नहीं रची गई है। मुझे जिस समय यह साधना प्राप्त हुई उस समय मैं अपने जीवन

में शत्रु-बाधा से बुरी तरह प्रताड़ित हो चला था और स्थिति यहां तक पहुंच गई थी कि किसी पल कहीं भी जीवन समाप्त किया जा सकता था। लेकिन मैंने भी दृढ़ता से ठान लिया था कि यदि जीवन को समाप्त होना ही है तो क्यों न संघर्ष के द्वारा समाप्त हो। यही मनोदशा मुझे वीर साधना की ओर केवल प्रबलता से आकृष्ट ही नहीं कर ले गई वरन् मुझे खींच कर ही ले गई।

पत्रिका में साधना पक्ष के संदर्भ में केवल इतना ही दिया गया था कि आप पत्रिका कार्यालय को पत्र लिखें और आपको घर बैठे 'वीर साधना' की सारी सामग्री व प्रयोग विधि पत्रिका का एक सदस्य बनाने पर उपहार स्वरूप प्राप्त होगी। मैंने ऐसा ही किया और सारी साधना विधि प्राप्त कर नियत समय पर साधना प्रारम्भ की। मुझे आज तक याद है कि साधना के लिए संकल्प करने और साधना प्रारम्भ करने के बीच की जो घटना मैंने ऊपर दो पंक्तियों में लिख दी है, उस काल में इतना अधिक संघर्ष और चुनौती झेलनी पड़ी थी, किन्तु दृढ़ संकल्प और हठ के आगे बाधाएं निरस्त होती चली गईं। धन की समस्या, स्वास्थ्य की समस्या, धमकियों और प्रताड़ना की कशमकश के बाद भी मैं जब साधना में बैठा, तो साधना प्रारम्भ करते ही एक दबाव सा मन में छा गया कि मैं यह साधना छोड़ दूं, इन सब से कुछ नहीं होने वाला है और इन दबावों से निपटने में मुझे अत्यधिक मानसिक बल संजोना पड़ा। मैं जितना ही इन विचारों को दबाता उतना ही वे मेरे मन-मस्तिष्क पर और छाते चले जाते, किन्तु मेरा मंत्र-जप चलता रहा, अन्तिम माला मंत्र-जप करने तक स्थिति यहां तक आ गई कि मानसिक दबाव के साथ ही साथ सारे वातावरण में एक अनोखी सी हलचल, पदचाप की स्पष्ट ध्वनि, तीव्र घृणा और भय की तरंगों के साथ-साथ कोई भयावह काली आकृति चारों ओर मंडराने लग गई, पीड़ा से सारा शरीर ऐंठने लगा और लगने लगा कि सारे सुरक्षा चक्र खिंचे होने के बाद भी यह आकृति आघात कर ही देगी।

वायु के तीव्र झोंकों से कमरे के किवाड़ अपना सिर पटकते से लग रहे थे और तीव्र चलती हवा सांय- सांय की ध्वनि के साथ एक विलाप जैसा वातावरण में उत्पन्न कर रही थी, मानो सम्पूर्ण प्रकृति ही इन उपायों के द्वारा विरोध पर उतर आई थी। दीपक हवा के झोंके से बुझ गया और उस नीरवता में, एकान्त कक्ष में साधनारत मैं इतने दबावों को सहन न कर पाने के कारण अचेत प्राय: हो गया। पीड़ा की अधिकता से ऐसा लग रहा था मानो मेरी आंतें तक उबल कर मुख के मार्ग से निकल जायेंगी। पुतलियां ऊपर चढ़ी जा रही थीं और हाथ-पांव ऐंठने के साथ-साथ, मुख सूखते-सूखते कब मैं निष्प्राण हो गया, कुछ याद ही नहीं

वीर साधना : जिस प्रकार मैंने सिद्ध की

आज कई वर्षों बाद पूज्य गुरुदेव से आज्ञा प्राप्त कर मैं उस विधान को भी स्पष्ट कर रहा हूं जिसके द्वारा मैंने वीर का पूर्ण प्रत्यक्षीकरण कर उसकी सिद्धि प्राप्त की थी। पत्रिका कार्यालय से मिले विवरण के अनुसार मैंने कृष्ण पक्ष के मंगलवार को काले वस्त्र पहिन कर, ऊनी आसन पर बैठकर दक्षिण मुख होकर, अपने सामने लोहे की एक थाली में सिन्दूर से त्रिशूल बनाकर, उस पर **वीर प्रत्यक्ष सिद्धि यंत्र** स्थापित कर उसके चारों ओर **५२ काले हकीक के दाने,** भैरवों के प्रतीक के रूप में रखे थे, क्योंकि वीर साधना मूल रूप से भैरव साधना से ही तो अनुप्राणित है। प्रत्येक दाने का पूजन सिंदूर और अक्षत से करने के पश्चात् मूल यंत्र का पूजन भी केवल सिंदूर और अक्षत से किया था, लाल फूल चढ़ाए थे और भगवान शिव को साक्षी मानकर इस साधना में प्रवृत्त हुआ था। **काले हकीक की माला** से मैंने जिस मूल मंत्र का जप किया था वह इस प्रकार था।

मंत्र

ॐ वीराय महावीराय हुं ह्रौं हस्हस्ह्रौं फट्

उपरोक्त मंत्र की ५१ माला मंत्र जप करना था। तेल का दीया लगाना अनिवार्य था और भुने वेसन में मधु मिश्रित कर नैवेद्य रूप में रखना भी अनिवार्य था। मंत्र जप की पूर्णता पर सभी स्थानों से सिंदूर लेकर अपने माथे पर तिलक करने का भी विधान था, यद्यपि मैं यह अन्तिम क्रिया तो नहीं कर पाया था, किन्तु गुरु-कृपा, गुरु-बल से मुझे फिर भी पूर्ण सिद्धि मिली।

मंत्र-जप के उपरान्त सभी सामग्री को विसर्जित कर देना था।

केवल एक साधना विशेष के रूप में ही नहीं वरन् दैनिक जीवन में भी मैंने अनुभव किया है कि वीर की सिद्धि एक ऐसी सौम्य सिद्धि है, जिसके माध्यम से साधक सरल, सात्विक जीवन व्यतीत करता हुआ अपने-आप को आगे जिन भी साधनाओं में ले जाना चाहे तीव्रता से ले जा सकता है।

रहा। बस एक विचित्र सी भारी परछाई चारों ओर दिखाई पड़ने लग गई थी . . .

प्रातःकाल रहा होगा जब मेरी आंख खुली। यंत्र-चित्र आदि साधना-सामग्री यथावत् रखी थी। बस मधु मिश्रित वह नैवेद्य (जो मैंने अलग रख रखा था वही) नहीं था। मैं समझ नहीं सका कि उसका क्या हुआ, लेकिन रात की अपेक्षा मैं अपने अन्दर एक विचित्र सा तेज और बल समाया हुआ पा रहा था, एक विचित्र सी रहस्यमयता मुझे अपने आस-पास मंडराती लग रही थी, जो भयास्पद कदापि नहीं थी।

जिसने वीर ही सिद्ध कर लिया फिर उसके लिए शेष रह भी क्या गया? कौन सी साधना, कौन सा रहस्य उसके लिए दुर्गम रह गया?

संयोगवश इसी घटना के दूसरे ही दिन मुझे अचानक अपने नगर के ही एक वरिष्ठ गुरु भ्राता द्वारा कुछ आवश्यक संदेश लेकर जोधपुर जाने का अवसर निकल आया और मुझे एकाएक रोमान्च हो उठा कि मैं जोधपुर में डॉ० श्रीमाली जी से मिलकर, इन अनुभवों को बताकर आगे के विषय में और भी कुछ जान सकूंगा, तब तक मेरा उनसे साक्षात् नहीं हुआ था और जिन गुरु भ्राता की मैंने ऊपर चर्चा की, उन्होंने ही मुझे अपनी ओर से पत्रिका सदस्य बना दिया था। मैंने किसी दीक्षा आदि के बिना ही यह वीर साधना सम्पन्न कर ली थी।

किन्तु जोधपुर जाने की प्रसन्नता के साथ-साथ मुझे चिंता भी व्याप्त हो गई, क्योंकि उन दिनों शत्रुओं की प्रताड़ना इतनी अधिक बढ़ चुकी थी जिससे मैं इतनी लम्बी यात्रा करने में अपने-आप को समर्थ नहीं पा रहा था। इसके अतिरिक्त मेरे पास एक बड़ी धनराशि भी थी, जो उन गुरु भ्राता ने पत्रिका के सदस्यता अभियान के अन्तर्गत सदस्यों से प्राप्त की थी और समय के अभाव के कारण वे उसका ड्राफ्ट नहीं बनवा सके थे। मुझे पत्रिका कार्यालय में उस धनराशि को नकद ही सौंप देना था। मैं संकोचवश कि कहीं मेरा उपहास न बने, इस कारण-वश बिना कुछ कहे ही उस धन राशि को स्वीकार कर चिंता में डूबा हुआ अपने नगर से लखनऊ तक आ गया, जहां से मरुधर एक्सप्रेस पकड़ कर मुझे जोधपुर तक जाना था।

अचानक जाने की योजना बनने के कारण रिजर्वेशन मिलने की कोई भी सम्भावना नहीं थी और रही-सही कसर स्टेशन पर भीड़ देख कर समाप्त हो गई। सीमान्त प्रदेश पर कुछ विशेष हलचल होने के कारण अनेक सैनिकों की छुट्टियां रद्द कर दी गई थीं और उस दिन की मरुधर एक्सप्रेस में अधिकांश बोगियाँ सेना के जवानों की ही दिख रही थीं। मैं चिंतातुर सा इधर से उधर भटकता रहा, अन्त में एक बोगी में जाकर बस बैठने भर जगह प्राप्त कर सका।

थोड़ी ही देर बीती होगी कि मेरे सामने वाली बर्थ पर लेटे एक लड़के को उसके मित्रगण ढूंढते हुए आए और उसे अपने साथ दूसरी बोगी में ले गए। जाते-जाते उसने वह स्थान मुझे दे दिया। मैंने संतोष की सांस ली। कम-से-कम मेरी यह चिन्ता तो घटी कि इतनी भीड़-भाड़ में कहीं कोई मेरा धन (जो मैंने इधर-उधर की जेबों में ठूंस रखा था) उस पर कोई हाथ साफ न कर दे। गाड़ी ने प्लेटफार्म छोड़ा और तब मैंने अपने आस-पास के वातावरण को परखना चाहा, भीड़-भाड़ से भरी उस बोगी में मेरे सामने वाली बर्थ पर प्रायः पांच फीट की लम्बाई वाला एक २०-२२ वर्ष का लड़का अधलेटा सा गौर से मेरी ओर देख रहा था। शक्ल-सूरत से वह तराई के इलाके का लग रहा था और एक प्रकार से कुरूप ही कहा जा सकता था। उसका कृशकाय शरीर, गहरा काला रंग और विचित्र प्रकार से भिंचा हुआ चेहरा उसको वीभत्स बना रहा था, जिससे उसी ओर अधिक देर तक देखना कठिन लग रहा था।

मैंने उधर से अपनी निगाहें हटाकर सोचा कि भोजन कर लूं और निश्चिंत होकर कुछ देर सो जाऊं। भोजन प्रारम्भ किया ही था कि मैंने देखा वही लड़का अत्यन्त तृष्णा के साथ मेरे भोजन की ओर देख रहा है। मैंने यूं ही पूछ लिया क्या भोजन करोगे? और उसने ललक कर तेजी के साथ जो मेरे सामने हाथ फैलाये, तो एक क्षण में ही मुझे वह घटना कौंध गयी, जब मैंने दो दिन पूर्व ही वीर साधना करते समय अचेत होते-होते कुछ देखा था।

वायु के तीव्र झोंको से किवाड़ अपना सिर पटक रहे थे और हवा के झोंके सुराखों में फंसकर वीभत्स विलाप की ध्वनि ही सारे वातावरण में गूंज रहे थे . . . .
कि अचानक. . .

. . . यूं ही तो तभी एक साये ने मेरे समक्ष उपस्थित होकर इसी

प्रकार हाथ बढ़ाये थे और मैंने उसे समस्त नैवेद्य सौंप दिया था। मैंने कनखियों से देखा . . . हूबहू वही शक्ल, केवल लम्बाई-चौड़ाई में परिवर्तन था। अचेतावस्था में मैंने जो घटना देखी थी और साधना के दूसरे दिन सुबह उठने पर जिसको विस्मृत कर दिया था, वही क्षण मेरे सामने कौंध उठे, रोम-रोम भय से कांप उठा, उसकी तीक्ष्ण दृष्टि से आग ही आग निकल रही थी, मानो जो भी सामने आया उसको वह झुलसा कर रख देगा, सचमुच उसकी ओर देखना तक भारी पड़ रहा था, वार्तालाप की कौन कहे।

ये तो मैंने पत्रिका में पढ़ा था कि वीर सिद्ध होने पर प्रतिक्षण साथ रहता ही है किन्तु इस प्रकार मूर्तरूप में, साक्षात् और प्रकट . . . यह एक असम्भव लगने वाली बात थी, लेकिन जो मेरे सामने प्रत्यक्ष थी उस पर अविश्वास भी कैसे करता। मैंने कुछ क्षण बाद चतुराई से फिर उसकी ओर देखना चाहा, तो पाया कि उसकी सतर्क दृष्टि और कठोर मुखमुद्रा ज्यों कि त्यों स्थिर बनी है। उसके सारे शरीर में एक विचित्र प्रकार की चपलता और विद्युत भरी कौंध छटपटा रही थी, मानो संकेत हुआ नहीं कि उसने झपट कर कुछ घटित कर दिया।

फिर तो आगे की घटना के विषय में अधिक कुछ कहने को शेष रह ही नहीं जाता। मेरी उस रात में कई-कई बार चौंक कर आंख खुली और हर बार मैंने पाया कि वह उसी प्रकार सतर्क और चौकन्ना बना मेरी ओर देख रहा है। यद्यपि उसके हाव-भाव में एक प्रकार की उपेक्षा जैसी थी, किन्तु मेरा मन मुझसे कह रहा था कि यह वास्तव में मेरी सुरक्षा में इस प्रकार सजग बैठा है। मैं एक प्रकार से निश्चिंत होकर अपनी पूरी रात्रि निर्विघ्न अनुभव कर सका।

प्रातः उठने पर जब मैंने उससे जानना चाहा कि वह कहां जा रहा है, तो उसने एक सामान्य सा उत्तर दिया कि उसके एक परिचित जोधपुर में रहते हैं, जिनके माध्यम से वह नौकरी ढूंढने जोधपुर जा रहा है। मैंने स्पष्ट अनुभव किया कि वार्तालाप की चेष्टाओं से वह बचना चाह रहा था और प्रातःकाल होने पर वह मुंह मोड़ कर दूसरी ओर सोता रहा। रात्रि में जब मेड़ता रोड स्टेशन पार हो गया तब वह जागा और अपनी ओर से ही बात छेड़ी की तुम्हें कहां तक जाना है। मैंने उससे कहा कि मुझे हाईकोर्ट कॉलोनी (पूज्यपाद गुरुदेव का निवास स्थान) तो उसने भी कहा, मुझे आपके साथ चलना होगा, मुझे वहीं बगल में पंचवटी कॉलोनी तक जाना है। और यह कहकर उसने पूरी यात्रा के मध्य पहली बार अपने कुरूप चेहरे पर ऊबड़-खाबड़ दांतों को झलकाते हुए भोंडी सी मुस्कराहट स्पष्ट की।

. . . और आश्चर्य जोधपुर जंक्शन से एक स्टेशन पूर्व वह उठा और गेट तक गया तथा जंक्शन पर उतरने के समय जब मैंने देखा, तो मानो वह वायु में विलीन हो गया था या जमीन में समा गया था, कुछ समझ में ही नहीं आया। मुझे कोई भी शंका नहीं रह गई थी और न फिर मैंने उचित समझा कि पूज्य गुरुदेव से इस विषय में कुछ निवेदन करूं, क्योंकि इससे अधिक साधना की सफलता और क्या हो सकती थी। पूछता तो मैं तब जब मुझे कोई शंका शेष रह गई होती।

फिर मैंने आगे बढ़ कर अन्य साधनाओं में भी उत्साह पूर्वक भाग लिया और अनुभव किया कि साधनाएं सत्य होती हैं, पूर्ण प्रामाणिक होती हैं और मनोवांछित सिद्धि का प्रत्यक्षीकरण भी सम्भव होता ही है।

मेरा अनुभव यह है कि साधनाएं सफल होने के बाद उस रूप में प्रत्यक्ष नहीं होतीं जिस रूप में साधक की कल्पना होती है, वरन् वे देव स्वरूप होने के कारण अपने ही ढंग से प्रकट होती हैं और आवश्यकता विशेष होने पर ही साधक की क्षमता के अनुरूप अपना वास्तविक स्वरूप अथवा छद्म स्वरूप दिखा जाती हैं, फलप्रद तो वे प्रत्येक रूप में ही होती हैं।

❋

. . . हां यूं ही तो! यूं ही तो हाथ बढ़ाए थे उसने भी! जो कुछ अचेतावस्था में देख और भूल गया वही सब कुछ एक झटके में आंखों के सामने तैर गया, एक ही पल में सब कुछ स्पष्ट हो गया।

मुझे कोई भी शंका नही रह गयी थी और इसी कारणवश मैं पूज्य गुरुदेव के समक्ष कुछ भी नहीं बोल सका।

पूछता तो तब जब मन में कोई भ्रम शेष रह गया होता।

(पृष्ठ २२ का शेष भाग)

चारों ओर से स्वतः दिव्य प्रकाश की व्यवस्था सामने झील के किनारे हजारों योगी साधु और संन्यासी भगवत श्री के दर्शन करने के लिए जिनके चहरों पर तपस्या के प्रभाव से एक अद्वितीय आभा दृष्टिगोचर हो रही थी।

महर्षि वशिष्ट, याज्ञवलक्य, भृगु, कृपाचार्य, विश्वामित्र, स्वामी विद्युतानन्द, बहन निरूपमा, परम हंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी पूज्य श्री के आसन की चारों ओर प्रतीक्षा में रत. . .

हो रही थी, सामने सिद्धयोगा झील का नीला पारदर्शी जल भव्य प्रतीत हो रहा था, उसकी लहरों पर कुछ साधिकाएं और साधक स्नान करते हुये एवं नावों में विचरण करते हुएं आह्लादित थे, पूर्वीय पार्श्व पर बहुत बड़ा मंच विद्यमान था, चारों तरफ से स्वतः दिव्य रोशनी की व्यवस्था थी, सामने झील के किनारे हजारों योगी, साधु और संन्यासी भगवत् श्री के दर्शन करने के लिये बैठे हुए थे, तपस्या के प्रभाव से उनके चेहरों पर एक अद्वितीय आभा दृष्टिगोचर हो रही थी, सभी की जटाएं पीछे लहरा रही थी, काषाय वस्त्र पहने वे सभी दिव्यदूत से प्रतीत हो रहे थे, एक तरफ सैकड़ों साधिकाएं उत्तम वस्त्रों में बैठी हुई थी, जिनके पुष्ट शरीर से एक ऐसी ज्योति, एक ऐसा प्रकाश प्रस्फुटित हो रहा था, जो इस धरती पर सम्भव ही न था, मंच पर उच्चकोटि के महायोगी, ऋषि एवं साधक अपने-अपने आसनों पर विद्यमान थे, **स्वामी सच्चिदानन्द जी के दाहिनी ओर महर्षि वशिष्ट, याज्ञवल्क्य, भृगु, कृपाचार्य, विश्वामित्र आदि सुशोभित थे, बायें पार्श्व में स्वामी विद्युतानन्द, महायोगी अजानन्द, स्वामी अखण्डानन्द, वहिन निरूपमा, योगीराज वहिन दिव्या, स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी, योगी सत्यानन्द जी आदि विद्यमान थे,** बीच का आसन खाली था, जहां योगीराज सच्चिदानन्द जी आने ही वाले थे, आज के इस महत्वपूर्ण अवसर पर मेनका और उर्वशी जैसी अप्सराएं भी स्वेच्छा से विद्यमान थी, जो कि स्वस्ति वाचन, नृत्य आयोजित करने के लिये आतुर थी, सिद्धाश्रम की परम्परा है, महोत्सव से पहले वाग्देवी तथा स्वस्ति वाचन नृत्य के द्वारा सम्पन्न किया जाय, छहों साधक जिनका दिव्यपात होना था, नीचे की पंक्ति में बैठे हुए थे, सामान्य लोक से जाने के बाद 'सिद्ध योगा' झील में स्नान करने से उनका यौवन लौट आया था, शरीर पर एक अपूर्व कान्ति और दिव्यता अनुभव हो रही थी, आंखों में शांति एवं प्रसन्नता के भाव दृष्टिगोचर हो रहे थे, पीछे जटा फहरा रही थी, और सारा शरीर दिव्यता से ओत-प्रोत था, दोनों बहिनों ने भी काषाय साड़ी धारण कर रखी थी, शरीर अद्वितीय सुन्दरता और प्रकाश से ज्योत्स्नित था, आंखों में एक अपूर्व चमक और शांति की हिलोर थी, जिसमें सब कुछ समा जाने के लिये आतुर था।

तभी हलचल सी हुई, सामने से सवेग महायोगी सिद्धाश्रम के संचालक **स्वामी सच्चिदानन्द जी** आ रहे थे, जिनके साथ सात-आठ योगी भी थे, उन्नत ललाट, गौर वर्ण तथा अपूर्व आभा से महायोगी वास्तव में ही एक अद्वितीय तपस्वी एवं आदि ऋषिवत् प्रतीत हो रहे थे, ऐसा लग रहा था कि जैसे ऋग्वेदकालीन ऋषि हमारे सामने आ रहे हो, चेहरे के चारों ओर व्याप्त प्रभामण्डल से सारा वातावरण पवित्र और दिव्य वन रहा था, महायोगी आकर मध्य में अपने आसन पर बैठ गये, अन्य योगी और तपस्वी भी यथास्थान बैठ गये, महायोगी ने अपने शांत करुण नेत्रों से समस्त सिद्धाश्रम के साधकों और तपस्वियों को देखा, उन छहों साधकों को देखा जो आज सिद्धाश्रम के अभिन्न अंग बनने जा रहे थे, उन साधिकाओं और तपस्विनियों की ओर देखा जिन्होंने साधना के बल पर उस स्थिति को प्राप्त किया था, जो सही अर्थों में मातृत्व, नारित्व और दिव्यत्व कहलाता था।

सबसे पहले **स्वामी प्रणीतानन्द जी** ने उठकर उन छहों साधकों का परिचय कराया, जो आज दिव्यपात प्राप्त करने जा रहे थे, ये सभी अपनी योग्यता, साधना एवं गुरु भक्ति के द्वारा इस स्तर तक पहुंच सके थे, इनमें एक साधक बैंगलौर से, एक बहिन गुजरात से, दो बंगाल, एक हिमालय प्रदेश तथा एक बहिन ब्रिटेन की थी, ये छहों साधक अपने जीवन में ही इस स्तर तक पहुंच सके थे, यह वास्तव में ही उनके लिये सौभाग्य की बात थी, सिद्धाश्रम प्रांतों एवं धर्मों के कठघरे में आबद्ध नहीं है, संकीर्णता का यहां कोई स्थान नहीं है, सभी साधक-साधिकायें यहां उन्मुक्त है, भय रहित है, संकीर्णताओं से दूर है, जिन गुरुओं के सानिध्य में साधनाएं सम्पन्न कर ये सभी साधक सिद्धाश्रम तक पहुंच सके थे, और पहुंचने के बाद दिव्यपात सहन करने की सामर्थ्य और स्तर प्राप्त कर सके थे, उन गुरुओं की अभ्यर्थना की गई, साधकों को बताया गया कि दिव्यपात जीवन की सर्वोच्च उपलब्धि है, और फिर यह तो परम सौभाग्य है, कि यह दिव्य पात सिद्धाश्रम की धरती पर सिद्धयोगा झील के किनारे **परम योगी स्वामी सच्चिदानन्द जी** के सान्निध्य में सम्पन्न होने जा रहा है, इससे बड़ा सौभाग्य और क्या हो सकता है?

फिर परम योगी स्वामी

> **संसार की अद्वितीय अनिन्द्र सुन्दरी मेनका अपनी चपल मुद्राओं द्वारा उस सिद्ध नृत्य को करने के लिए उठ खड़ी हुई जो भारतीय परम्परा अनुसार आवश्यक माना गया है।**
>
> **मंगल ध्वनि, मंगल नृत्य, नेत्रों और हांथों के मुद्राओं से इतना सजीव प्रस्तुति करण साधक और योगी धन्य - धन्य कह उठे... ऐसा अपूर्व नृत्य देखना तो बिरले योगियों के जीवन की घटना होती है...**

सच्चिदानन्द जी की अनुमति लेकर **किंकर स्वामी** ने इन छहों साधकों का सातों समुद्रों तथा एक सौ आठ पवित्र नदियों के जल से प्रोक्षण किया, सिद्धयोगा झील के जल से परिमार्जन किया, जिससे कि उनका शरीर रोग, वृद्धता, मृत्यु से रहित होकर दिव्यता को प्राप्त हो सके, तत्पश्चात् **महायोगी विज्ञानानन्द जी** ने उन छहों साधकों को पहनने के लिये "सिद्ध-वस्त्र" भेंट किये जो काषाय होते हुए भी उच्चकोटि के मंत्रों से आपूर्य थे, **भगवत्पाद शंकराचार्य** ने मृगचर्म भेंट किये और **महर्षि वशिष्ठ** ने उन्हें दिव्यदण्ड दिया, जो कि वीतरागिता का प्रतीक है **बहिन मदालसा** ने परम्परानुसार इन छहों के बालों में दिव्य गंध प्रवाहित की, और **स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी** ने अष्ट गंध से इन छहों साधकों के ललाट में तिलक कर आशीर्वाद दिया जिससे कि वे जीवन में पूर्ण ब्रह्मत्व प्राप्त कर सके।

प्रारम्भिक क्रिया सम्पन्न होने के बाद छहों साधकों को मात्र पांच-पांच मिनट का समय दिया गया जिससे कि वे अपने मन के विचारों, अपने गुरु और साधनाक्रम के बारे में विचार प्रस्तुत कर सके, इसके बाद **महर्षि गोविन्दपादाचार्य** (भगवत्पाद स्वामी शंकराचार्य जी के गुरु) ने इन छहों साधकों के हाथों में दिव्य जल देकर संकल्प सम्पन्न कराया कि वे अपने जीवन में भारतीय साधनाओं के उच्च आदर्शों की रक्षा, करने में प्रयत्नशील बने रहें।

संकल्प के बाद **त्रिजटा अघोरी** ने उनके पूरे शरीर को विशेष कवच मंत्र से सुरक्षित किया, जिससे कि उनके शरीर पर किसी प्रकार का कोई वेग प्रवहित न हो सके, सामान्य जनलोक में रहने पर भी उन पर किसी भी प्रकार के तंत्र या प्रयोग का प्रभाव व्याप्त न हो सके, फिर **स्वामी गुणातीतानन्द जी** ने उन्हें अमृतपान कराया जो कि स्थायित्व तथा अमरत्व से युक्त था, इन सब क्रियाओं में साधक अत्यधिक रुचि और आह्लाद के साथ भाग ले रहे थे, वास्तव में ही उनके चेहरे इस तथ्य को स्पष्ट कर रहे थे, कि उन्होंने सही अर्थों में जीवन जीया है, इस माटी की काया को दिव्य काया बनाया है, सशरीर सिद्धाश्रम में गुरु-कृपा से प्रवेश पा सके हैं और उन्हीं की कृपा से आज इस स्तर तक पहुंच सके हैं जो एक अद्वितीय महोत्सव-**दिव्यपात महोत्सव**-में भाग लेने में सफल हो सके हैं।

प्रारम्भिक क्रियाएं सम्पन्न करने के बाद **महर्षि याज्ञवल्क्य** ने विघ्न विनायक भगवान गणपति का आह्वान किया, जिससे कि वे सशरीर वहां विद्यमान रहकर इस महोत्सव की पूर्णता में सहायक हो, देवताओं-देवियों और सभी ज्ञात-अज्ञात योगियों और तपस्वियों का वेदोक्त घोष के साथ आह्वान किया कि वे वहां उपस्थित हों और अपनी उपस्थिति से समारोह को दिव्यता प्रदान करें, तत्पश्चात् भगवती महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती का आह्वान करने के साथ-साथ गायत्री का भी आह्वान कर उनसे प्रार्थना की गई कि वे विद्यमान होकर इन साधकों को पवित्रता और दिव्यता प्रदान करें, वस्तुतः यह केवल परम्परा-निर्वाह ही नहीं था, अपितु जिन-जिन देवताओं व देवियों का मंत्रों द्वारा आह्वान करते थे, वे स्वयं प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित होकर अपनी दिव्यता से पूरे सिद्धाश्रम को आलोकित ज्योत्स्नित कर रही थी।

गणपति प्रार्थना एवं भगवती गायत्री की उपस्थिति के बाद परम्परानुसार अद्वितीय अनिन्द्य सुन्दरी अप्सरा मेनका ने मंगल वाद्यों के साथ 'सिद्ध नृत्य' प्रारम्भ किया जो कि परम्परानुसार आवश्यक माना गया है, हमारे भारतीय धार्मिक एवं साधनात्मक कृत्यों के पूर्व मंगल वाद्य, मंगल-ध्वनि एवं मंगल नृत्य प्रस्तुत करने का प्रावधान है, इसी परम्परा के अनुसार मेनका ने यह नृत्य प्रारम्भ किया, संसार की अद्वितीय अनिन्द्य सुन्दरी के चपल नृत्य ने एक अपूर्व समां चारों ओर व्याप्त कर दिया जिसकी कोई तुलना ही नहीं हो सकती उसने नेत्रों और हाथों की मुद्राओं के माध्यम से सिद्ध नृत्य को इतनी सजीवता के साथ प्रस्तुत किया कि उपस्थित सभी योगी एवं साधक धन्य-धन्य कह उठे, एक अजीब और अपूर्व दृश्य था, एक अलौकिक वातावरण था, एक अनिवर्चनीय समां था, कल्पना करें कि सिद्धाश्रम की दिव्य भूमि, सिद्धयोगा झील के किनारे देवताओं और योगियों, ऋषियों और ब्रह्मवेत्ताओं के सामने हजारों योगी एवं साधक बैठे हों, चारों तरफ पवित्रता का वातावरण हो, जिन योगियों को इस जीवन में देखना ही सम्भव न हो, जिन देवताओं की साधना जीवन भर करने पर भी दर्शन सम्भव न हों, उनकी उपस्थिति में ऐसा अपूर्व नृत्य वही देख सकता है, जो सही अर्थों में साधक होता

है, जो सही अर्थों में शिष्य होता है, जिस पर गुरुदेव की कृपा होती है, और जो अपने गुरु की कृपा से सिद्धाश्रम में जाने का दृढ़ संकल्प लिये हुये होता है।

लगभग पैंतालीस मिनट तक यह नृत्य चलता रहा और इस पैंतालीस मिनट में मेनका ने मुद्राओं एवं चेहरे की भाव-भंगिमाओं के माध्यम से ऋग्वेदकालीन ऋषियों से आज तक की साधनाओं का जो जीवन्त चित्रण प्रस्तुत किया वह अपने-आप में अपूर्व एवं अद्वितीय था, सिद्धाश्रम की धरती का कण-कण इस नृत्य से अभिभूत होकर साधु-साधु कह उठा।

नृत्य के बाद छहों साधकों द्वारा आत्मपूजन एवं गुरु-पूजन विधि सम्पन्न कराई गई। छहों साधकों ने अपने-अपने गुरुओं के चरणों में अपने-आपको समर्पित करते हुए अश्रुपूरित आंखों से कृतज्ञता ज्ञापित की, कि उनकी कृपा से वे आज साधना के उस स्तर तक पहुंच सके हैं, जो दिव्यपात क्रिया कहलाती है, गुरुओं ने उनके सिरों पर वात्सल्य पूर्ण हाथ फेर कर आशीर्वाद दिया कि वे अपने जीवन में पूर्णत्व प्राप्ति कर सकें, और चिन्ता, भय-रहित, विपत्तियों, आलोचनाओं तथा बाधाओं का सामना करते हुये अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हो सकें।

अन्त में परम पूज्य योगीराज स्वामी सच्चिदानन्द जी उठ खड़े हुए, ऐसा लगा कि जैसे पूरा हिमालय पवित्रता के साथ उस स्थान पर उठ खड़ा हुआ हो, उपस्थित सभी साधकों और तपस्वियों के चेहरे आह्लाद से दीपित हो उठे, स्वामीजी ने सभी को आशीर्वचन कहते हुये कहा कि सिद्धाश्रम की एक परम्परा है, एक मर्यादा और नियमबद्धता है, अत्यधिक परिश्रम करने पर ही साधक अपने गुरु का प्रिय बन सकता है, और उच्चकोटि की साधनाओं में भाग लेकर सफलता प्राप्त कर सकता है, इन छहों साधकों ने जिस निष्ठा और एकाग्रता के साथ साधना कर जिन भाव-भूमियों को छुआ है, वे सराहनीय है, मैं इन सभी को आशीर्वाद देता हूं कि ये अपने जीवन में ब्रह्मत्व प्राप्ति कर चिरयौवनमय रहते हुये मृत्यु पर विजय प्राप्त कर सकें, अमृतत्व प्राप्त कर अनिर्वचनीय ज्योति प्राप्त कर सकें।

एक साधक बैंगलोर से एक बहन गुजरात से, दो बंगाल के एक हिमालय प्रदेश से तथा एक बहन ब्रिटेन से ये छः साधक अपने जीवन में ही इस स्तर तक पहुंच सके।

धन्य हैं वे साधक जो ऐसे दिव्य पात के अधिकारी बने और धन्य है ऐसी माताएं जिनके पुत्र साधना के बल पर इस स्तर पर पहुंच कर अपने जीवन को पूर्णत्व दे सके।

उपस्थित समुदाय शांत और दत्तचित्त होकर उस युग पुरुष की वाणी सुन रहा था, जिनका सारा शरीर तपस्या से आलोकित था, जिनके नेत्रों से अमृतत्व और स्नेह का प्रवाह सभी अनुभव कर रहे थे, जिनके शीतल पूर्णत्व प्राप्त आशीर्वाद के तले यह भारतवर्ष और विश्व मानवीय आदर्शों से आपूरित् होकर गतिशील है।

छहों साधकों को अपने स्थान पर खड़ा होने के लिये कहा गया, दिव्य पात क्रिया से पूर्व योगीराज ने अमृत बिन्दुओं से उन्हें सन्निहित किया और फिर उन्हें कहा गया कि वे नेत्रों के माध्यम से दिव्यपात को अपने पूरे शरीर में और अन्तर में समाहित करें, देखते ही देखते भगवत्पाद योगीश्रेष्ठ स्वामी सच्चिदानन्द जी का सारा शरीर ब्रह्मत्व तेज से आपूर्यमाण हो उठा, ताम्बे के समान ललाई लिये हुए उनका शरीर ब्रह्मत्व तेज से जगमगा उठा, आंखों से एक ऐसा प्रवाह प्रवाहित होने लगा जिसे शब्दों में बांधना सम्भव नहीं है, उस प्रवाह के वेग को जब उन छहों साधकों ने अपने शरीर और अन्तर में समाहित किया तो उनका शरीर भी ताम्बे के समान लालिमामय हो उठा, जैसे कि पूर्व में अरुणोदय हुआ हो, रोम-रोम खड़े होकर रोमांचित हो उठे, चेहरे से एक अपूर्व आभा झलकने लगी, सिर के चारों और आभामण्डल सा बन गया, और ऐसा प्रतीत हुआ कि वे छः साधक नहीं अपितु छः तपस्या के समग्र पुंज बन गये, दिव्य पात प्रवाह से उनका सारा शरीर रोमांचित हो उठा, नृत्यमय होकर गतिशील उठा, स्फुरण युक्त ज्योत्स्नित हो उठा, ऐसा लगा कि जैसे उन्हें साक्षात् ब्रह्मत्व प्राप्त हो गया हो।

मात्र साधक ही नहीं उपस्थित समस्त साधु, संन्यासी योगी, साधक - साधिकायें इस अपूर्व वेग से रोमांचित हो उठे, धरती का कण-कण नर्तन करने लगा, सिद्ध योगा झील की लहरें उठ-उठ कर थिरकने लगी, ऐसा लगा कि जैसे पूरा ब्रह्माण्ड एक अपूर्व आभा से ज्योत्स्नित हो उठा, और वायु पुलक, थिरक, रोमांच एवं नृत्य से आह्लादित हो उठी।

वस्तुतः वह दृश्य वह बिम्ब, वह घटना, इतिहास का एक आलेख बन कर रह गई, धन्य हैं, वे योगी और साधक जो अपने जीवन में इस अपूर्व और अद्वितीय सामारोह के भागीदार हो सके। ऐसी ही माताएं धन्य हैं जिनके पुत्र साधना के बल पर इस स्तर तक पहुंच कर अपने जीवन को पूर्णत्व देने में समर्थ हो सकते हैं।

फोन : ०११-७१८२२४८
फैक्स : ०११-७१८६७००

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान

३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-११००३४

दिनांक :

यह प्रपत्र आपके लिए हमारी तरफ से सहयोग हेतु

आप गुरुदेव के **शिष्य/साधक** या **पत्रिका के पाठक** हैं, हमें आप पर गर्व है। हम समय - समय पर आपको सहयोग देना चाहते हैं, मार्ग दर्शन करना चाहते हैं और आपकी प्रत्येक समस्या में भागीदार बनना चाहते हैं, इसके लिए जरूरी है कि आप साफ - साफ हिन्दी में निम्न प्रपत्र भरकर (पत्रिका से सावधानी पूर्वक फाड़कर अलग कर दें) लिफाफे में रखकर उसे भली प्रकार से चिपका दें, और उस पर एक रुपये का डाक टिकट लगा दें व उस पर पता लिखें—

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान
''गुरुधाम''
३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा,
नई दिल्ली - ३४

और इस लिफाफे को आज ही डाक में डाल दें. . . अभी

---

१. **पूरा नाम** : ....

२. **वर्तमान पद (व्यवसाय/अधिकारी-पूरा विवरण)** : ...., उम्र: ....
....
....

३. **पत्रिका सदस्य संख्या (यदि हैं तो)** : ....

४. **शिक्षा** : ....

५. **परिवार - पत्नी का नाम** : ....
पुत्रों की संख्या : ....
पुत्रियों की संख्या : ....

६. **दीक्षा - आपने अब तक कौन-कौन सी दीक्षाएं ली हैं।**

....

....

७. **साधनाएं - जो आपने की, और उस सम्बन्ध में अनुभव -**

....

....

८. **'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान'** पत्रिका आपको कैसी लगी, आप उसमें और किन - किन विषयों पर लेख चाहते हैं अपने सुझाव स्पष्ट लिखें—

....

....

९. **पूरा पता :**

....

....

१०. **टेलीफोन** (शहर के कोड नम्बर सहित)
यदि स्वयं के पास न हो तो किसी मित्र या पड़ोसी का टेलीफोन नं. : . . . .

११. **आपकी समस्याएं** (जो वर्तमान में हो, और जिनका आप तुरन्त समाधान चाहते हैं।)

....

....

१२. **आप हम से क्या सहयोग चाहते हैं –**

....

....

१३. **किन्हीं तीन मित्रों या सम्बन्धियों के नाम व पूरे पते** (चाहे भारत में कहीं भी रहते हों)

(१) ....

....

(२) ....

....

(३) ....

....

हस्ताक्षर

पत्रिका का पुनर्प्रकाशन ज्ञान तो सतत् परम्परा है

ज्ञान का प्रवाह सतत् होता है। ज्ञान कभी प्राचीन अथवा व्यर्थ नहीं होता और इसका प्रमाण यह है कि पिछले वर्ष में सदस्य बने हमारे नवीन पाठक पत्रिका के प्रतिमाह नए अंक के साथ-साथ प्राचीन प्रतियों के लिए लालायित हो चुके हैं।

पत्रिका पाठकों के अत्यधिक आग्रह, कार्यालय में उनके द्वारा मिलने वाले अनगिनत पत्रों और रुचि को ध्यान में रख कर निर्णय लिया गया कि . . .

आपकी यह पत्रिका यों तो पिछले १४ वर्षों से निरन्तर प्रकाशित हो रही है। सभी दबावों, आलोचनाओं, प्रतिस्पर्धा . . . लेकिन उसके बाद भी आपके स्नेह और आत्मीयता के फलस्वरूप हमें यह बात कहने में कोई भी संकोच नहीं है क्योंकि जहां हमें इस बात का गर्व और संतोष है कि इसके माध्यम से हमारे ऋषियों-मुनियों के तथा पूज्यपाद गुरुदेव के साधनात्मक ज्ञान का प्रकाशन हो रहा है।

किसी पत्रिका की केवल प्रसार संख्या से ही पाठक वर्ग की अभिरुचि का यथार्थ निर्णय नहीं किया जा सकता। वरन् पाठक अपने पत्रों द्वारा जब अपनी मनो-भावनाओं से परिचित कराते हैं तभी सही स्थिति समझी जा सकती है।

जैसा कि हमने प्रारम्भ में ही वर्णित किया कि पत्रिका का प्रकाशन तो निरन्तर १४ वर्षों से हो रहा है किन्तु **जनवरी १९८१** से प्रारम्भ हुई यह पत्रिका **दिसम्बर १९९२** तक केवल वार्षिक सदस्यों के मध्य ही सीमित थी और उन्हीं वार्षिक सदस्यों के सुझाव पर इसे जनवरी १९९३ से सार्वजनिक करने का अर्थात् बुक स्टाल पर रखने का निर्णय लिया गया।

हमारा प्रथम विशेषांक **जनवरी १९९३** का **गोपनीय तंत्र विशेषांक** देखते ही देखते बुक स्टालों पर समाप्त हो गया। स्थिति यह रही कि तीन बार री-प्रिन्ट कराने के बाद भी आज इसकी कोई प्रति उपलब्ध नहीं है।

यद्यपि जनवरी एवं फरवरी १९९३ की प्रतियों को हम कुछ तकनीकी विवशताओं के कारण अभी उपलब्ध कराने में असमर्थ हैं किन्तु **मार्च १९९३ से दिसम्बर १९९३ तक की प्रतियों को पुनः मुद्रित कराकर वितरित करने का प्रयास मूर्तरूप ले चुका है।** ये सभी अंक भी अपनी उपलब्धि और विशेषता के कारण अनुपलब्ध हो गए थे।

पाठकों को हम इन पंक्तियों के माध्यम से इन अंकों की सीमित झलकी देने का प्रयास कर रहे हैं।

- मार्च १९९३ का अंक भारत की महत्वपूर्ण विद्या **साबर विद्या** पर आधारित **साबर विशेषांक** था जिसमें साबर साधनाओं के और विशेषकर मुस्लिम साबर साधनाओं के ऐसे रहस्य प्रस्तुत किए गए थे जो सर्वथा अप्रकाशित थे।
- मार्च के विशेषांक के बाद **अप्रैल का अंक** आधारित था साधना की आधार भूमि मंत्र पर अर्थात् मंत्र शक्ति विशेषांक। इस अंक का सर्वाधिक चर्चित लेख था डॉ० एन्ड्रयू ब्रूच से लिया इन्टरव्यू— एक मंत्र जो हजार परमाणु बमों से भी ज्यादा विस्फोटक है।
- केवल विशेषांक शब्द दे देने से ही किसी अंक की सार्थकता

नहीं होती। यह चुनौती प्रबलता से हमारे समक्ष आई जब **मई अंक** को **कुण्डलिनी जागरण विशेषांक** के रूप में प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया। इस एक अंक में कुण्डलिनी के परिचय से लेकर उसके जागरण की विभिन्न विधियों का समावेश करने से यह अंक सदा-सदा के लिए संग्रहणीय अंक बन गया है।

- **जून** के महीने में **सम्मोहन विशेषांक** को प्रकाशित किया गया जो इस प्रकार सफल सिद्ध हुआ कि हम तीसरी बार के मुद्रण में इसको आपको उपलब्ध करा पा रहे हैं।

सम्मोहन क्या होता है? इसकी जीवन में क्या आवश्यकता है, क्या साधनाओं में भी सम्मोहन विद्या के प्रयोग के द्वारा सफलता मिल सकती है, सम्मोहन से शरीर को पूर्ण रूपेण निरोग बनाते हुए इसे आकर्षक और चुम्बकीय बनाने की सफल साधनाएं कौन सी रही हैं— यही सब बातें इसको अपार लोकप्रिय बना गईं। साथ ही **भूगर्भ सिद्धि, अन्नपूर्णा साधना, शशिदेव्य अप्सरा साधना, जीवन में अप्सरा साधनाएं क्यों आवश्यक हैं?** जैसे विशिष्ट लेख इसकी विषय वस्तु में और भी अधिक वृद्धि करने में समर्थ थे।

- जुलाई माह में सद्गुरु विशेषांक जीवन को पूर्णता से प्रदर्शित करने का अंक था। इसी अंक में प्रकाशित **गर्भस्थ शिशु को शिक्षण, पुष्पदेहा अप्सरा, परकाया प्रवेश साधना, रति प्रिया साधना** इसकी ऐसी विशेषताएं थी जब समाज के सामने हम यह स्पष्ट कर सके कि जीवन में आध्यात्मिकता जितनी आवश्यक है, भोग और सौन्दर्य भी उतना ही अधिक आवश्यक ही नहीं, जीवन का अभिन्न अंग भी है।
- इसी बात को और भी अधिक सरलता से प्रदर्शित करने के लिए **अगस्त** में **योग से सौन्दर्य विशेषांक** की प्रस्तुति की गई। **अनंग रति नमस्कार, अब कोई पुरुष नपुंसक नहीं रह सकता, जब महर्षि विश्वामित्र ने उर्वशी को दीक्षा दी, प्रिय वल्लभा किन्नरी,** अथवा **प्रिय वश्य साधना** जैसे लेख इस अंक की विशेषताएं थीं।
- सितम्बर में प्रकाशित **गोपनीय विद्या रहस्य रोमांच विशेषांक** के माध्यम से पाठकों के समक्ष नया पक्ष प्रकाशित हुआ। जहां इस गम्भीर विषय को साधकों की सत्य अनुभूतियों पर आधरित घटनाओं के माध्यम से सरसता देते हुए विभिन्न कथाएं वर्णित की गई थीं वहीं **भूत मुक्ति के उपाय, मृत आत्माओं से सम्पर्क** जैसे विषयों पर साधनात्मक हल प्रस्तुत किए गए। क्या भूतों का अस्तित्व होता है? **क्या पूर्व जन्म के सम्बन्धों का प्रभाव इस जन्म पर भी पड़ता है? भूतनी मेरी पत्नी बनी, अघोरियों के साथ एक सप्ताह, एवं जहां घर का कामकाज भूत करते थे** इत्यादि लेख पाठकों के बीच चर्चा का विषय बने रहे।
- **अक्टूबर** का अंक मां भगवती महालक्ष्मी को समर्पित **'महालक्ष्मी विशेषांक'** था जिनकी कृपा के बिना कोई भी पूर्णता प्राप्त नहीं कर सकता। इस विशेषांक का सर्वाधिक महत्वपूर्ण लेख था **महालक्ष्मी के १०८ सिद्ध सफल प्रयोग** नये पाठक आज भी जब किसी पुराने पाठक के घर में इस अंक को देखते हैं तो उसे देखकर संजोने के लिए लालायित हो उठते हैं, क्योंकि उसमें वर्णित साधनाएं ही इस प्रकार की हैं जिन्हें पूरे जीवन भर प्रयोग किया जा सकता है। नवीन पाठक भी अब इस अंक को प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि इसकी पुनर्मुद्रित प्रतियां उपलब्ध हो गई हैं।
- **नवम्बर** का अंक **अलौकिक विशेषांक** एक प्रकार से पाठकों के ही आग्रह का परिणाम था। सितम्बर में रहस्य रोमान्च विशेषांक से प्रभावित होकर उनका आग्रह अत्यधिक बढ़ गया था कि हम उन्हें इससे सम्बन्धित और भी अधिक सामग्री उपलब्ध कराए। **चिन्त्य साधना, सिद्धाश्रम की दिव्यआत्माएं, मृत आत्माओं का आह्वान, पारदेश्वरी दुर्गा, जब बगलामुखी को मैंने अपने शरीर में धारण किया, जब मैंने मरघट चण्डी सिद्ध की,** अपने शीर्षक के अनुकूल अत्यन्त सारगर्भित लेख थे।
- **दिसम्बर** का **आयुर्वेद विशेषांक** और आयुर्वेद के ही सहयोगी अंगों के रूप में मंत्र चिकित्सा, तंत्र चिकित्सा, रत्न चिकित्सा, तिब्वती चिकित्सा, दिव्य सूर्यत्व साधना, इत्यादि पक्षों को समाहित करता हुआ था।

इस लघु वर्णन में पत्रिका के सम्पूर्ण स्वरूप को स्पष्ट नहीं किया जा सकता। हमने अपने स्थायी स्तम्भों की चर्चा तो की ही नहीं जो अपनी प्रामाणिकता में सदैव खरे उतरे हैं।

यही हमारा उद्देश्य है कि हमारे सम्माननीय पाठक अपने दैनिक जीवन में लाभान्वित हो सकें, साधनाओं के जगत से जुड़ सकें, और साधनाओं के ज्ञान के रूप में पत्रिका के प्राचीन अंकों को समय रहते संजो सकें, क्योंकि साधनात्मक ज्ञान कभी पुराना होता ही नहीं।

पत्रिका पाठकों को पत्रिका परिवार ने इस विषय में विशेष छूट देने का निर्णय लिया है। यद्यपि पाठक अपनी इच्छा एवं रुचि के अनुसार कोई एक विशेषांक भी प्राप्त कर सकते हैं किन्तु उचित होगा वे सभी दस अंको के सेट को प्राप्त करें। दस अंकों के सम्पूर्ण सेट का रियायती मूल्य केवल १२०/- रु० ही निर्धारित किया गया है तथा भेजने में होने वाले डाक व्यय को भी संस्था ही वहन करेगी। इसके स्थान पर यदि पाठक कोई एक अंक प्राप्त करना चाहते हैं तो वह उन्हें १५/- रु० (डाक खर्च सहित वी० पी० पी० से भेजने की व्यवस्था की जाएगी।

नवनिधि प्राप्त करने की एक साधना है
तारा साधना

लक्ष्मी साधना की पूर्णता लक्ष्मी से महालक्ष्मी तक की यात्रा है जब वे अपनी नौ कलाओं के साथ-साथ आकर साधक के जीवन में समाहित हो . . . विभूति, नम्रता, कांति, तुष्टि, कीर्ति, सिद्धि, पुष्टि, सृष्टि, व ऋद्धि नौ कलाएं होती हैं लक्ष्मी की, और इनकी संयुक्त साधना का नाम है . . . 'तारा साधना' महाविद्याओं के क्रम में दूसरी महत्वपूर्ण साधना भगवती महाकाली का ही नील लोहित स्वरूप . . .

सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त जल से निकले श्वेत कमल पर विराजमान खड्ग, कैंची, मुण्डवा, नील कमल को हाथ में लिए कंठ हार आदि विविध आभूषणों से युक्त सर्पों से वेष्टित पीली जटाओं वाली मस्तक पर अक्षोम्य को धारण करने वाली ही भगवती तारा हैं'— तारा के इस ध्यान से ही स्पष्ट है कि वे इस प्रकार से काली के समान ही उग्र स्वरूपा प्रचण्ड देवी हैं।

जिस प्रकार से बंगाल में महाकाली की महिमा व अराधना हैं। उसी प्रकार से विहार व बंगाल के सीमावर्ती प्रदेश में तारा की आराधना व साधना की परम्परा रही है।

एक अन्तर्कथा के अनुसार तारा वास्तव में काली का ही स्वरूप हैं। बिहार में ही सहरसा जिले के महिसी ग्राम में उग्र तारा का सिद्ध पीठ विद्यमान है जो वास्वत में काली का ही स्वरूप है। पश्चिम बंगाल के रामपुर रेलवे स्टेशन से पांच किलोमीटर दूर स्थापित है तारा का वह भारत प्रसिद्ध पीठ जिसके आराध्य बामाखेपा अपने अनन्य प्रेम और परमहंस रामकृष्ण के समान ही मां तारा के प्रति अनुरक्त होने के कारण लोक ख्याति में अमर हैं।

भगवती तारा अखिल ब्रह्माण्ड में व्याप्त सूर्य शक्ति का ही हिरण्यमय रूप हैं और उनकी फैली हुई पीली जटाएं प्रतीक हैं कि वे सूर्य की ही शक्ति हैं। सूर्य की शक्ति होने के कारण ही उनके सिद्ध साधक के लिए इस जगत में असम्भव जैसा कुछ है ही नहीं, इसी से कहा जाता है कि भगवती तारा के सिद्ध साधक को नित्य प्रति अपने सिरहाने दो तोला स्वर्ण पड़ा मिलता है और सिद्ध साधकों का भी यही कहना है कि उन्हें अपने जीवन में इस बात का पूर्ण अनुभव प्राप्त हुए हैं। कहते हैं तारा का सिद्ध साधक जिस क्षण भी जितने धन की कामना करता है तत्क्षण उसके पास गुप्त रूप से वह धन उपलब्ध हो ही जाता है।

मैंने अपने जीवन में एक ऐसे ही सिद्ध साधक को देखा है कि वे जिस क्षण जितने धन की कामना करते हैं उसी क्षण उनकी जेब में उतना धन उपस्थित होता ही है। लेकिन सिद्ध साधक की एक मर्यादा होती है और **वास्तव में भगवती तारा की यह सिद्धी मिलती भी ऐसे साधक को है जो साधना का सार्वजनिककरण कर उसका प्रदर्शन कर देवी की मर्यादा पर आघात नहीं करता।**

ब्रह्मयामल तंत्र में तारा साधना के सम्बन्ध में अत्यन्त प्रशंसा की गई है जिसको सिद्ध करने से राज्य भय समाप्त

विशेष
तंत्र रक्षा
कवच
जब जीवन में विष घुल जाता है और
समस्याओं के हल सही नहीं सूझते
यदि
किसी के द्वारा तंत्र प्रयोग
करवा दिया जाए तो. . .
विशेष तंत्र रक्षा कवच
संस्थान के योग्यतम विद्वानों के निर्देशन में कर्मकाण्ड के श्रेष्ठ ब्राह्मणों द्वारा मंत्र सिद्ध रक्षा कवच के रूप में उपलब्ध कराने का लोकहितार्थ प्रयास
(न्यौछावर - .११०००/- मात्र)
जो वास्तव में अनुष्ठान का व्यय मात्र ही है।
❊ कर्जे से पीछा छूट ही न रहा हो
❊ शत्रु संकट, प्राण संकट घेरे ही रहते हों
❊ पत्नी के साथ गर्भपात की स्थिति बनना
❊ विवाह में बात बन - बनकर बिगड़ जाए
❊ घर या किसी निर्माण कार्य में बात न बन पाना
❊ ऐसा रोग जो डॉक्टरों की समझ में भी न आ रहा हो
❊ निरन्तर बीमार बने रहना और शरीर सूखता जाना
❊ वार - बार ट्रांसफर की कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा हो
या अधिकारी अनायास विपरीत बने रहते हों
रोजमर्रा
की समस्याओं
का
विश्वसनीय
निवारण
गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव,
पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४,
फोन: ०११-७१८२२४८,फेक्स-०११-७१८६७००
मंत्र शक्ति केन्द्र,
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर (राज.),फोन-०२९१-३२२०६
या फिर झगड़े झंझटों में वार- बार फंस जाना, मुकदमें बाजी, जैसी बातों
के पीछे गम्भीर तांत्रिक प्रयोग छुपे होते हैं।
तंत्र की सैकड़ों पद्धतियां हैं. . .
उनमें से किस तरीके से प्रयोग कराया गया है,
उसे समाप्त कर सही उपाय देने का ही कार्य करता है
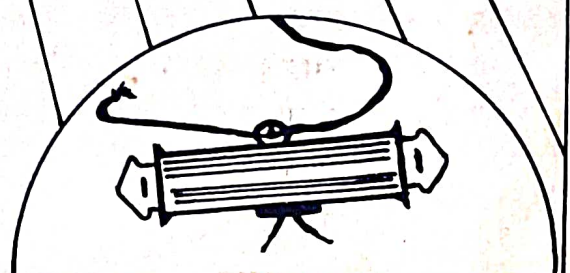
हो जाता है सम्पूर्ण रूप से धन की प्राप्ति होती है और साधक के घर में लक्ष्मी भी अपनी सभी कलाओं को लेकर निश्चित रूप से निवास करती है। लक्ष्मी की नौ कलायें प्राप्त करना लक्ष्मी साधना से सम्भव ही नहीं, इसके लिये तो साधक को निश्चित रूप से करनी पड़ती है भगवती तारा की साधना।

इन्हीं नौ कलाओं में छुपी है जीवन की सम्पूर्णता इन्हीं नौ कलाओं में छुपा है भगवती महालक्ष्मी का जाज्वल्य मान स्वरूप। **ऐसे सिद्ध साधक को तो भैरव के समान बल प्राप्त होता है और यक्षिणियां उसकी दासी बन जाती है जिनके माध्यम से वह संसार का कोई भी कार्य करने में असमर्थ रहता ही नहीं।**

भगवती तारा के अनन्य उपासकों में महर्षि वशिष्ठ जैसे उच्चकोटि के ऋषि रहे हैं, और उन्हीं के द्वारा संसार के समक्ष यह पद्धति स्पष्ट हुई जिसे आगमोक्त पद्धति कहा जाता है। इसके पूर्व उन्होंने वैदिक रूप से साधना की थी किन्तु उन्हें सफलता नहीं प्राप्त हुई और तब उन्होंने मूल मंत्र को ही श्रापित कर दिया जिसका उद्धार बाद में ब्रह्मा द्वारा सम्भव हुआ। भगवती तारा का मूल मंत्र तो केवल 'हीं त्रीं हुं' ही था लेकिन ब्रह्मा द्वारा उद्धार करने के उपरान्त त्रीं के स्थान पर सकार योग कर उसे 'स्त्रीं' किया गया और तब से तारा का मंत्र हुआ **''ऐं ओं हीं स्त्रीं हुं फट्''**।। जिसमें 'हीं स्त्रीं हुं' का महत्व ही सर्वाधिक है।

''तारयति अज्ञानान्धतमसः समुद्धरति भक्तान् यः सा तारा''
– तारण करने वाली और अज्ञान रूपी अंधकार से ज्ञान के प्रकाश में लाने वाली देवी ही तारा है।

प्रस्तुत विधि तारा साधना की केवल मंत्र जप की प्रचलित विधियों के विपरित एक ऐसी विशिष्ट विधि है जिसमें न्यास पूर्वक साधक अपनी देह में तारा का समाहितीकरण कर लेता है। सामान्यतः केवल ध्यान कर अथवा चिन्तन कर भगवती तारा के अत्यन्त प्रकाशमान स्वरूप को साधक अपने हृदय में धारण नहीं कर सकता और इसी के निराकरण के लिए महर्षि वशिष्ठ के द्वारा जो न्यास पद्धति प्रचलित की गई उसका महत्व आज तक निर्विवाद है।

इस साधना में तारा महायंत्र के साथ-साथ महाशंख एवं अष्ट गंध का विशेष महत्व है तथा जिस माला से मंत्र-जप किया गया उसका स्फटिक का होना आवश्यक है। साधक इस साधना में विधि पूर्वक आसन इत्यादि ग्रहण कर साधना कक्ष में बैठे तथा निम्न ढंग से न्यास सम्पन्न करे। न्यास करने का तात्पर्य होता है सम्बन्धित मंत्र को पढ़कर शरीर के विभिन्न अंगों को स्पर्श करना जिसके माध्यम से उसके शरीर में देवी अथवा देवता का स्थापन हो जिससे वह स्वयं देवमय बन साधना में प्रवृत्त हो सके।

हीं स्त्रीं हुं : अं आं इं ईं उं ऊं ऋं लृं एं ऐं ओं औं अं अः तारायै नमः ब्रह्म रन्ध्रे
हीं स्त्रीं हुं : कं खं गं घं ङं उग्रायै नमः ललाटे
हीं स्त्रीं हुं : घं छं जं झं महोग्रायै नमः भ्रूमध्ये।
हीं स्त्रीं हुं : टं ठं डं ढं णं वज्रायै नमः कण्ठ गह्वरे
हीं स्त्रीं हुं : तं थं दं धं नं काल्यै नमः हृदये
हीं स्त्रीं हुं : पं फं बं भं मं सरस्वत्यै नमः नाभौ
हीं स्त्रीं हुं : यं रं लं वं कामेश्वर्यै नमः लिंगे
हीं स्त्रीं हुं : शं षं सं हं क्षं चामुण्डायै नमः मूलाधारे

यह न्यास केवल तारा का शरीर में स्थापन ही नहीं वरन् मंत्रों का ऐसा संयोजन है जिससे साधक के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं और वह

सूर्य की शक्ति ही तो , पीली फैली लटें, सर्पों का आभूषण, कैंची, पाश से सुशोभित ।

. . . क्योंकि जहां है 'सृष्टि' का प्रभाव, वही तो है सृजन किसी भी तत्व का . . .

पूर्ण शुद्ध चैतन्य बन साधना में शीघ्र ही सफलता प्राप्त कर लेता है। उसके उपरान्त, यद्यपि तारा की मूल साधना में तो केवल ताम्रपत्र पर अंकित तारा महाविद्या के यंत्र एवं चित्र की आवश्यकता पढ़ती है लेकिन जब उनकी साधना विशिष्ट फल की प्राप्ति के लिए की जा रही हो तब कुछ यंत्र अतिरिक्त रूप से भी आवश्यक हो जाते हैं। एक ऐसा ही यंत्र है **महाशंख**। महाशंख केवल लक्ष्मी का ही प्रतीक नहीं सरस्वती का भी प्रतीक है और भगवती तारा भी अपने त्रिगुणात्मक स्वरूप में लक्ष्मी, काली एवं नील सरस्वती के रूप में पूजनीय है। इस मंत्र के अन्त में प्रयुक्त **'फट्'** शब्द उनके उग्रतम स्वरूप उग्र तारा का द्योतक है और **"ऐं"** उनके सरस्वती होने का सूचक। इस प्रकार से कई तेजस्वी पुञ्जों को अपने में समाहित किए हुए भगवती तारा यदि पूर्वी भारत में लोकमाल्य बन बैठी हैं तो आश्चर्य ही क्या!

उपरोक्त न्यास के उपरान्त साधक महाशंख का पूजन अष्ट गंध से करे और सम्मान पूर्वक उसे पुष्प पंखुड़ियों अथवा चावल पर स्थापति कर, स्फटिक माला से निम्न मंत्र की ११ माला अथवा २१ माला मंत्र जप करे—

मंत्र

।।ऐं ओं ह्रीं स्त्रीं हुं फट्।।

कोई भी महाविद्या साधना तभी फलदायक होती है जब उसे आन्तरिकता पूर्वक निरन्तर किया जाए, क्योंकि भगवती जगदम्बा के किसी भी स्वरूप को एक दिन में ही अपने शरीर में स्थापित नहीं किया जा सकता इसके लिए तो लम्बा क्रम अपनाना ही पड़ता है। किन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं कि साधक को एक लम्बे काल तक प्रतीक्षा भी करनी पड़ेगी या टकटकी बांध कर सफलता की राह देखनी होगी **वास्तव में देवी अथवा देवता मनुष्य से भी ज्यादा आतुर होते हैं अपनी कृपा का फल देने के लिए। और ठीक यही बात भगवती तारा के साथ भी है।**

साधक साधना के उपरान्त महाशंख को सम्मान पूर्वक अपनी तिजोरी में रख दे और नित्यप्रति उसका दर्शन करने के बाद ही अपने जीवन के अन्य कार्यों को करे।

यही जीवन में नवनिधि साधना का रहस्य है और जिसे नवनिधि की सिद्धि मिल जाती है सृष्टि द्वारा सहज ही ज्ञात हो जाता है जीवन में वह दुर्लभ रहस्य जो पदार्थ परिवर्तन का रहस्य है और फिर दो तोला स्वर्ण तो क्या वह अपनी इच्छानुकूल कुछ भी निर्माण करने में पूर्ण सक्षम हो जाता है।

(पृष्ठ१६ का शेष भाग)

रखना साधना में सिद्धि का एक नियत उपाय माना गया है। शुक्रवार की रात्रि में घी अथवा तेल का दीपक लगाकर साधक अपने समक्ष तिलोत्तमा अप्सरा यंत्र स्थापित कर, चंद्रप्रिया जड़ी पर त्राटक करते हुए अप्सरा माला से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र-जप करे—

मंत्र

आवे आवे चिन्ते चिन्तावे
अपसरा प्रत्यक्ष हुए मेरो कह्यो
कारज करे, हुकम बजावे, न करे
तो राजा अनंग पाल की दुहाई।
सबद साचा पिण्ड काचाफुरो मंत्र
ईश्वरो वाचा ॐ हुं फट्

मंत्र-जप के उपरान्त चन्द्रप्रिया जड़ी को पीले कपड़े के साथ अपनी दाहिनी भुजा पर इस प्रकार बांधना है, जिससे कि वह शरीर से निरन्तर स्पर्श करती रहे और बिना आसन अथवा दीपक आदि के औपचारिकता निभाए, नित्य रात्रि में अथवा जब भी समय मिले उपरोक्त मंत्र की एक माला मंत्र-जप कर लेना पर्याप्त है। इस प्रकार साधक को शनैः शनैः पहले तो एक बिम्ब के रूप में और बाद में पूर्ण नारी शरीर के रूप में अप्सरा का प्रत्यक्षीकरण सम्भव होता है, जो जीवन-पर्यन्त, उसके सुखद साहचर्य की प्रतीक होती है। साधक जिस प्रकार अपनी प्रेमिका से व्यवहार करता है उसी प्रकार अप्सरा से भी वार्तालाप हंसी, मजाक आदि कर सकता है। इस साधना में प्रयुक्त तिलोत्तमा अप्सरा यंत्र व अप्सरा माला को संभाल कर रख लेना चाहिए तथा समय-समय पर पूर्ण विधि-विधान से साधना को पुनः सम्पन्न कर लेना चाहिए। इससे जो न्यूनताएं आ जाती हैं अथवा वातावरण आदि के दोष के कारण जो प्रत्यक्षीकरण में बाधा आने लगती है, उसका निराकरण सम्भव होता है।

साबर मंत्रों द्वारा अप्सरा साधना की यह विधि पूर्णतः परिक्षित है जिन साधकों ने इसे सम्पन्न किया है, उन्होंने ऐसे समस्त सुखों और वैभव को प्राप्त किया है, जिसकी धारणा और कामना उनके मन में होती है।

गुरो र्मध्ये स्थिता माता, मातृमध्ये स्थितो गुरुः।
गुरुर्माता नमस्तेऽस्तु, मातृगुरुं नमाम्यहम्।।

आत्म-गुरु-श्री गुरुदेव

मानव -जीवन घटनाओं की श्रृंखला से आबद्ध है। प्रत्येक घटना अपने आप में अतिमहत्वपूर्ण होती है। ध्यान करने पर ही यह ज्ञात हो पाता है कि घटनाएं व्यक्ति को जीवन की सत्यता एवं वास्तविकता को जानने हेतु बाध्य करती हैं। पूज्यपाद श्री गुरुदेव ने ''शिवशक्ति साधना शिविर'', वैद्यनाथ धाम--देवघर, (बिहार) में इन्हीं घटनाओं के विश्लेषण के क्रम में साधकों को सम्बोधित करते हुए अन्तर्मुखी होकर आन्तरिक गुरु से साक्षात्कार एवं पेहचानने की प्रक्रियाओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद भी पथ-प्रदर्शन एवं लक्ष्य की प्राप्ति तक साथ देने का आशीर्वाद भी दिया। उन्होंने बार-बार जोर देते हुए कहा- 'तुम्हारे भीतर एक और **''तुम''** है, उसे पहचानो।'

तत्क्षण साधकों की उत्कण्ठा प्रश्न में परिणत हो गयी। **कैसे, कहां, कब तक और क्या यह सम्भव है?**

इस प्रश्न की पृष्ठभूमि में हमारी अज्ञानता एवं 'अहं' की महान भूमिका है, क्योंकि यही अज्ञानता हमारे समस्त कार्य-कलापों का नियन्ता, निर्णायक एवं सूत्रधार है। जीवन भर मनुष्य धन, प्रतिष्ठा, यश, कीर्ति, सुख, सुविधाएं एवं सगे-सम्बन्धियों में सन्तोष खोजता वृद्धावस्था को प्राप्त हो जाता है और तब उसे अहसास होता है कि ये सभी मृग-मरीचिकाएं थीं। उनमें कहां है सच्चे आनन्द का कण भर भी आभास? कारण, खोज ही जब अस्थायी थी तो आनन्द भी वही मिलेगा- ''बोये पेड़ बबूल का आम कहां से खाय'' रूप, यौवन, दोस्त, धन एवं अन्यान्य सभी सुविधाओं के रहते हुए भी आपको एक अभाव हमेशा खटकता है। वृद्धावस्था और मृत्यु का नंगा नृत्य आपको विचलित कर देता है। कभी-कभी तो आप इसे सजीव सत्य समझ अपनी आंखें बन्द कर लेते हैं। यहीं से प्रारम्भ होता है गुरु एवं आन्तरिक गुरु की खोज तथा दिव्य प्रकाश

स्वरूप पथ-प्रदर्शक पूज्यपाद श्री गुरुदेव की आवश्यकता। कारण— हम आज तक जिस विश्व को स्थिर एवं जिन वस्तुओं में आनन्द खोज रहे थे, वह मात्र इन्द्रजाल था। प्रकृति हमेशा गतिशील एवं परिवर्तनशील है। सृष्टि, पालन और संहार इसका कठोर नियम तथा प्रबल प्रक्रियाएं हैं, जिसमें न कोई अपवाद है और न कोई परिवर्तन ही सम्भव है।

इसे समझने एवं खोजने का मात्र एक ही सूत्र है, जो अपने-आप में पूर्ण, अनन्त, अनादि एवं नित्य है और वह है श्री गुरुदेव के शब्दों में मनुष्य के अन्दर ही अवस्थित उसका 'आत्म-गुरु'। हम अपनी अज्ञानता एवं भ्रम के चलते, पास रहते हुए भी उनसे काफी दूर और अलग हो गए हैं। सच्चे आनन्द का साधना-सूत्र ही खो बैठे हैं। उनके अनुसार वही वास्तविक एवं सच्चे आनन्द का केन्द्र बिन्दु है, जो आप में ही अन्तर्निहित है, न कि वे वस्तुएं जिनमें आप आज तक आनन्द खोज रहे थे। वह केन्द्र बिन्दु अर्थात् आन्तरिक गुरु चिल्ला-चिल्ला कर आपका ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करना चाहता है एवं अन्तर्मुखी होकर अपनी ओर देखने को कहता है, ताकि आप एक झलक में ही सच्चे आनन्द का अनुभव प्राप्त कर सकें और सत्य से आपका साक्षात्कार हो सके।

आपको सन्देह अवश्य होगा। आपके समक्ष समस्याएं भी उठ सकती हैं। क्या यह सच है? क्या इसे प्राप्त किया जा सकता है? यह आन्तरिक गुरु क्या है? **अगर अन्दर ही गुरु है तो बाहरी गुरु की क्या आवश्यकता है? इसी मोड़ पर आवश्यकता है सद्गुरु की, जो उस घनीभूत, अन्धकारमय, संकीर्ण खाइयों से भरे, लम्बे, कंटकाकीर्ण और तलवार की धार जैसे पथ को आपकी उंगली पकड़कर पार करा सके।** कारण, हमें या आपको तो लक्ष्य का भी ज्ञान नहीं है। परमहंस गुरुदेव श्री निखिलेश्वरानन्द जी महाराज इस पथ को मुस्कराते हुए पार कर, लक्ष्य तक पहुंच चुके हैं, और हमें भी वे ललकारते हुए दावे के साथ वहां चलने को प्रोत्साहित कर रहे हैं। **''तांत्रिक सिद्धियां''** नामक पुस्तक की भूमिका में इसकी एक छोटी सी झलक है और अग्नि-परीक्षा का साधारण परिचय। उस पथ का पथिक बनने के लिए आपको अवश्य ही आवश्यकता है बुद्धि, विवेक, अनुभव और समर्पण के भावना की। तर्क वहां गौण हो जाता है। कारण— पावन, पवित्र एवं पारलौकिक जीवन-पथ का यही सशक्त संबल है। सांसारिक एवं भौतिकवादी दृष्टिकोण के कारण संतुष्ट होकर अगर आप कहीं उन हाथों में फंस गए, जिसकी पहुंच ज्ञान अथवा अनुभव, आपसे ही मिलती-जुलती हो, तो अंजाम भी ऊंचे गुरु एवं अंधे चेले जैसा होगा, संतोष की सीमा भी वही होगी। आनन्द की अनुभूति भी वैसी ही होगी। सड़क छाप गुरु के साये में आप सदानन्द तो बन जायेंगे किन्तु परमानन्द नहीं। क्योंकि इसके विपरित ज्ञानी गुरु के अनुसार यह जीवन अहर्निश सीखने की प्रक्रिया है और उस ज्ञान की खोज में खोये रहना ही इसकी पहली पहचान है। उसमें भौतिक सदानन्द का समावेश सम्भव ही नहीं हो सकता अर्थात् जिस प्रकार शिक्षक के बिना विज्ञान, कला अथवा गणित आदि का ज्ञान प्राप्त करना सम्भव नहीं है, उसी प्रकार गुरु के बिना आध्यात्मिक जगत में प्रवेश करना भी असम्भव है।

आन्तरिक गुरु के रहते हुए भी अन्य गुरु की आवश्यकता को जान लेना भी आवश्यक है क्योंकि हमें तो आन्तरिक गुरु के अस्तित्व पर ही सन्देह है।

आत्म गुरु का स्वर भी सुन ही कितने लोग पाते हैं?

इसी क्रम में, जैसा कि ऊपर कहा गया है, आन्तरिक गुरु के रहते अन्य गुरु की आवश्यकता को भी हमें जान लेना आवश्यक है। इस बिन्दु पर आप गम्भीरता से सोचें। सर्वप्रथम तो आपको आन्तरिक गुरु के अस्तित्व पर ही सन्देह है और हम में से कौन ऐसे हैं, जो उस गुरु को पहचानने, सुनने अथवा अनुसरण करने का दावा कर सकते हैं। इसका उत्तर नकारात्मक मानना उचित होगा। कारण— मनुष्य का मानसिक जगत, कोलाहल पूर्ण अभिलाषाएं, उत्कट उत्कंठाएं, असीम इच्छाएं एवं अनेक आवश्यकताओं से भरा है और क्या उसका वह मस्तिष्क आत्म-गुरु का मौन निमंत्रण अथवा मधुर शब्दों का श्रवण कर पायेगा? कहावत वही होगी, जैसा कि कोई व्यक्ति किसी बहरे से उस बन्द कमरे में बात करना चाहता हो, जहां कि अनेक वाद्य यंत्रों अर्थात् 'ऑरकेस्ट्रा पार्टी' का कर्ण भेदी झंकार हो रहा हो। इसके लिए उसे उन वाद्य यंत्रों को बन्द करना होगा। उसी प्रकार उस गुरु से सम्पर्क के लिए, उनके मधुमय शब्दों को सुनने के लिए एवं उनके विराट रूप को पहचानने के लिए हमें भी अपने मस्तिष्क के उन बाह्य एवं भौतिक सभी दरवाजों को बन्द कर देना होगा, परन्तु इसमें सफलता मिलने के बावजूद भी प्रतिक्षण क्रोध, लोभ, मद एवं मोह आदि से परिपूर्ण एवं पल-पल प्राप्त होने वाले अनुभवों का क्या होगा? जिसे हम जितनी शक्ति से दबाना चाहेंगे, वह उतनी ही दुगुनी शक्ति से उछल पड़ेगा, अतः इन दरवाजों को बन्द करने तथा आन्तरिक कोलाहल को नियंत्रण में करने के लिए सद्गुरु की आवश्यकता पड़ती है। ऐसे सद्गुरु जिन का मानसिक, शारीरिक एवं बौद्धिक शक्तियों पर प्रभुत्व है और वे ही हमारे एवं

आत्म-गुरु के बीच संयोजक अथवा सम्पर्क-सूत्र का कार्य करते हैं। श्री गुरुदेव इसके लिए सक्षम ही नहीं अपितु सर्वशक्तिमान भी हैं। अनेक शिविर उनके अपार शक्ति, अद्‌भुत शौर्य एवं अलौकिक क्षमता के साक्षी हैं, जहां उन्होंने साधकों को शक्तिपात एवं दीक्षा के माध्यम से इस सम्पर्क को सत्य प्रमाणित किया। वर्तमान ही नहीं पूर्वजन्म के भी अभूतपूर्व एवं सजीव संस्मरणों से साक्षात्कार कराया, जो सद्‌गुरु के बिना कतई सम्भव नहीं।

देवघर के शिविर में भी जब श्री गुरुदेव अपने गुरुदेव श्री सच्चिदानन्द जी महाराज का आह्वान कर रहे थे तो उनकी आंखों में आंसू छलक पड़े। साधकों की हजारों आंखें उन पर केन्द्रित हो गईं, मनोभाव को भांपते उन्हें देर न लगी। व्याख्या करते हुए उन्होंने स्पष्ट किया कि गुरु बनने के लिए पहले अच्छा शिष्य बनना नितान्त आवश्यक है। अपने जीवन की समस्त साधनाओं में **अनेक कठिनाइयों, दर्दों, अपमान, आघात एवं कठोर से कठोर परीक्षाओं से गुजरते हुए दम्भरहित होकर विनम्र होना ही सफल शिष्य की विशेषता है।** करुणा, विनम्रता की सहचरी है और अश्रु उसका परिचय। इन्हीं अश्रुकणों के माध्यम से गुरु को स्मरण किया जा सकता है। इसके समर्पण द्वारा ही उनसे सम्पर्क होता है और यही सत्य है। श्रवण, कीर्तन, स्मरण, वन्दना, चरण-स्पर्श, गुरु-सेवा, पूजन, ध्यान और आत्मनिवेदन ही सम्पर्क का सर्वोत्तम एवं सर्वोपरि साधन है।

वस्तुतः उनके द्वारा की गई यह व्याख्या पूर्णतः पार्थिव एवं सांसारिक सीमा के अन्तर्गत गुरु-शिष्य के सम्बन्ध में थी, न कि सिद्धाश्रम के उस प्रकाश-स्तम्भ के रूप में, जिससे समस्त सिद्धाश्रम ही नहीं, अपितु अखिल ब्रह्माण्ड का कण-कण आलोकित हो रहा है। सान्निध्य होने पर आप स्वयं ही स्वीकार करेंगे कि शारीरिक रूप से **वे हम लोगों के बीच परमहंस श्रीमाली जी अवश्य हैं, परन्तु उनका सूक्ष्म एवं अध्यात्म स्वरूप सर्वदा अज्ञात जगत में भ्रमण कर रहा होता है। हम लोगों ने उन्हें विवश कर रखा है, आवश्यकता हमारी है उनकी नहीं।** निःस्वार्थ भावनाओं के चलते

गुरु बनने के लिए पहले अच्छा शिष्य बनना आवश्यक है। अनेक कठिनाईयों दर्दों, अपमान, आघात एवं कठोर से कठोर परीक्षाओं से गुजरते हुए दंभ रहित होकर विनम्र रहना ही सफल शिष्य की विशेषता है।

उनकी इच्छाएं लुप्त हो चुकी हैं। कोई लक्ष्य भी उनके लिए शेष नहीं रह गया। इसका ज्वलन्त उदाहरण है उनकी मर्माहत एवं हृदय विदारक उद्‌घोषणा, जो कभी-कभी उनके होठों पर आ जाती है। प्रतिक्रिया स्वरूप साधकों के हृदय की संवेदनाओं को शब्दों में नहीं बांधा जा सकता और प्रदर्शन तो साधारण व्यक्ति के अनुभव से परे है। कारण, 'लोचनाभ्याम् विहिनस्य दर्पणं किं करिष्यते।' **हम अपनी इन आंखों से उन्हें सांसारिक एवं भौतिक कार्य-कलापों में व्यस्त एवं लीन अवश्य देखते हैं, परन्तु यह निर्विवाद सत्य है कि उनकी ये सभी क्रियाएं उनकी माया है। यह उनकी अपनी विशेषता है कि उन सभी कार्य-कलापों से लगाव रहते हुए भी, एक दर्शक की भांति वे बाहर रहकर उसका अवलोकन करते हैं, सब में रहते हुए भी किसी में नहीं हैं।**

इसलिए गुरु को साक्षात् तत्व स्वरूप कहा गया है। गुरु साधना की अपेक्षाअन्य कोई तपस्या की क्रिया नहीं, गुरुपद ही श्रेष्ठ एवं पूज्य है। गुरु वाक्य ही मंत्र और गुरु-कृपा ही मुक्ति है। हमारे प्राण— गुरु के प्राण और हमारा शरीर ही गुरु का मन्दिर है। गुरु ही प्रेम, पवित्रता, शान्ति और बुद्धि का प्रतीक है, जो प्यार से शिष्य के अन्दर आवरण युक्त छिपे हुए सद्‌गुणों और शक्तियों को प्रकाशित कर उसे बाहर निकालता है। उसी के सहारे शिष्य लक्ष्य की ओर अग्रसर होता है। गुरु त्रिकालदर्शी होता है, उनके अनन्त ज्ञान की सीमा, स्थान एवं समय से परे होती है। दैविक शक्तियां छाया की तरह सदैव उनके साथ रहती हैं, जिसके फलस्वरूप उनका विचार अचूक और निर्णय भी दृढ़ होता है। **गुरु को अपने शिष्य पर आने वाले संकटों का पूर्वाभास हो जाता है और सान्निध्यता के फलस्वरूप वे शिष्य को बहुत पहले ही सावधान एवं सतर्क कर देते हैं।** इस प्रकार गुरु हमारी व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक कठिनाइयों में रक्षा तो करते ही हैं, साथ-साथ उनकी अदृश्य एवं अज्ञात शक्तियां हमारे जीवन में बुराइयों को पनपने से रोकती रहती हैं। स्वस्थ हो या अस्वस्थ, धनी हो या निर्धन, जवान हो या वृद्ध, सुखी हो या दुःखी प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में ऐसा समय अवश्य आता है, जब वह निराश होकर असंतोष का अनुभव करते हुए जीवन को शून्य समझने लगता है। गुरु ही इस शून्य को परिपूर्ण कर भर देता है।

इसलिए प्राचीन काल से ही जीवन के हर क्षेत्र में चाहे वह भौतिक हो या आध्यात्मिक, गुरु को ही सफलता का साधन माना गया है, जिसका साक्षी केवल धार्मिक एवं पौराणिक ग्रंथ ही नहीं बल्कि प्रत्येक युग का इतिहास है। 'प्रत्यक्षं किं प्रमाणं च' अर्थात् आप अगर प्रत्यक्ष देखने की लालसा रखते हैं, तो श्री गुरुदेव की मूर्ति का ध्यान कर, आंखें बन्द कर आजमा सकते हैं।

● **वेदानन्द झा**
वरिष्ठ लोक अभियोजक,
देवघर

राशिफल

मेष - सामान्य किन्तु हलचलों से भरा माह रहेगा। अनेक समस्याएं उत्पन्न होंगी किन्तु उनके समुचित समाधान भी प्राप्त होते जाएंगे। गृहस्थ पक्ष से सहयोग की न्यूनता रहेगी। अतिथियों का आगमन बना रहेगा। किसी मनोवांछित व्यक्ति से भेंट की सुखद स्थितियां बनेगी। रोग एवं मानसिक पीड़ा की अधिकता रहेगी। शत्रु पक्ष हताश होगा। आर्थिक विषयों में हड़बड़ी से निर्णय न लें। धन नियोजित करने की दृष्टि से यह माह श्रेष्ठ नहीं कहा जा सकता। माह का अंत तीव्र परिवर्तनों से भरा सिद्ध होगा। इस माह की ५, १७ एवं २३ तारीख को विशेष अनुकूलता रहेगी, अतः इन दिवसों का उपयोग मनोवांछित कार्य हेतु अवश्य करें।

वृषभ - स्वभाव में आयी खिन्नता दूर होगी। दृढ़ता एवं संकल्प निर्वाह की प्रवृत्ति बलवती होगी। कर्मठता का विकास होगा तथा कार्य क्षेत्र में अनुकूलताएं भी मिलेंगी। निर्माण कार्यों में तीव्रता आएगी। पत्नी से विचारों में मतभेद बना रहेगा। सन्तान सुख श्रेष्ठ रहेगा। शत्रुपक्ष की गतिविधियां चलती रहेंगी। आय के साधन प्रबल होंगे। मित्र वर्ग लाभदायक सिद्ध होगा। धन नियोजित करने की दृष्टि से इस माह को अनुकूल नहीं कहा जा सकता। दिनांक २, ३, १५, २१ विशेष अनुकूल रहेंगी। राज्यपक्ष से विवाद से बचें। यात्राएं अनुकूल सिद्ध होंगी।

मिथुन - पारिवारिक समस्याओं की अधिकता रहेगी। स्वयं का स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहेगा। माह के तृतीय सप्ताह में तीव्र मानसिक तनाव अथवा नर्वस ब्रेक डाउन जैसी स्थिति उत्पन्न हो सकती है अतः सावधान रहें। यात्राएं अनुकूल एवं पूर्ण लाभदायक रहेंगी। कार्यालय में चला आ रहा तनाव दूर होगा। व्यवसायी वर्ग के लिए यह माह कठिन है। शत्रु पक्ष समझौते के लिए स्वयं पहल करेगा। बिखरी हुई मनः स्थिति के कारण अनेक महत्वपूर्ण अवसर हाथ से निकल जाने की सम्भावना है। दिनांक १, ७, २१, ३० इस माह की विशेष अनुकूल तिथियां हैं। मित्रवर्ग पर आवश्यकता से अधिक विश्वास न करें।

कर्क - कार्यों की अधिकता रहेगी। किसी गुप्त चिन्ता का अंत होगा। आवश्यक कार्यवश यात्राओं की अधिकता रहेगी। जीवन साथी से विचारों में तालमेल रहेगा। पारिवारिक सुख एवं आमोद-प्रमोद के क्षण उपस्थित होते रहेंगे। धनागम श्रेष्ठ रहेगा। जमापूंजी में वृद्धि के भी संकेत हैं। स्वास्थ्य की सामान्य सी उतार-चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है। मन में शांति रहेगी। आध्यात्मिक एवं धार्मिक कार्यों में विशेष रुचि बढ़ेगी। राज्यपक्ष से सम्बन्ध विशेष मधुर होंगे। दिनांक ३, ७, २५ का सदुपयोग करें। प्रेम-प्रसंगों में अनुकूलता आयेगी।

सिंह - व्यवसाय में पार्टनरों के साथ मतभेद प्रबल होंगे। पूरा माह व्यवसाय सम्बन्धी तनावों से भरा होगा। आय की स्थिति अच्छी रहेगी। गुप्त धन का निर्माण अवश्य करें जिसकी भविष्य में महत्ता स्पष्ट होगी। विश्वासघात की सम्भावनाएं प्रबल हैं अतः अपने भेद स्पष्ट न करें। परिवार की ओर से पूर्ण सहयोग रहेगा। शत्रुवर्ग शांत रहेगा। यात्राओं को करने में अरुचि का सामना करना पड़ेगा। धार्मिक एवं आध्यात्मिक कार्यों से मन उचाट रहेगा। मन में व्यवहारिकता का ही जोर रहेगा। राज्यपक्ष से बाधाएं प्राप्त हो सकती हैं। प्रेम-प्रसंगों में तनाव सम्भव।

कन्या - विचारों में ढुलमुल बनी रहेगी। उचित निर्णय शक्ति का अभाव कुछ अप्रिय स्थिति भी उत्पन्न कर सकता है। जायदाद सम्बन्धी बंटवारे का प्रश्न सामने आएगा। गुप्त धन का व्यय होगा। पारिवारिक सदस्यों से उपेक्षा प्राप्त होगी। शरीर में पीड़ा बनी रह सकती है। रिश्तेदारों व पड़ोसियों से सम्बन्धों में तनाव आएगा। जिम्मेदारियां बढ़ेंगी। कलह के वातावरण से बचें। शत्रु पक्ष शांत रहेगा किन्तु विरोधियों द्वारा व्यंग बाणों का सामना करना पड़ सकता है। आगामी समय के लिए इस माह ही विशेष योजनाएं निर्मित कर लें। धन को शेयर आदि में नियोजित करने की दृष्टि से श्रेष्ठ व अनुकूल माह।

तुला - मन में हताशा रहेगी। कोई गुप्त विचार मन में प्रबल रहेगा। योजनाएं असफल होंगी तथा अर्थोपार्जन हेतु किए गए प्रयास पूर्ण लाभ नहीं देंगे। यद्यपि धन को नियोजित करने की दृष्टि से, अर्थोपार्जन की दृष्टि से तथा नवीन योजनाएं बनाने की दृष्टि से यह माह वर्ष का श्रेष्ठतम माह है, अतः मनोमालिन्य का त्याग कर इस काल का सदुपयोग करें। कुछ विशेष कार्य अभी एक या दो माह और लम्बित रह सकते हैं। परिवार का सहयोग व आत्मीयता प्राप्त होगी। जीवन-साथी द्वारा पूर्ण सहयोग रहेगा। मित्रों का व्यवहार मन में खेद उत्पन्न कर सकता है। राज्य पक्ष व शत्रु पक्ष से स्थिति सामान्य ही रहेगी।

वृश्चिक - धनागम की दृष्टि से अनुकूल माह। कहीं से गुप्त धन अथवा आकस्मिक धन प्राप्ति की प्रबल सम्भावनाएं हैं। पारिवारिक दृष्टि एवं संतान-सुख की दृष्टि से भी यह माह अनुकूल रहेगा। मन में क्रोध बना रह सकता है जिसके द्वारा हानि भी हो सकती है अतः इस दृष्टि से सावधान रहें। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह माह उन लोगों के लिए विशेष सतर्कता रखने का है जिन्हें ब्लडप्रेशर की बीमारी हो। व्यवसायी वर्ग के लिए भी यह माह खरीद-फरोख्त की दृष्टि से तनाव पूर्ण है। बड़ी धनराशि एवं एकमुश्त कहीं धन लगाने से बचें।

धनु - मन में उत्फुल्लता रहेगी। नवीन विचार सूझेंगे। किसी बड़ी योजना का निर्माण कर सकते हैं, जिसकी पूर्ति हेतु आवश्यक साधन भी उपलब्ध होंगे। प्रेम-प्रसंगों में अनुकूलता रहेगी। मनोरंजक व कलापूर्ण कार्यों की अधिकता रहेगी। पारिवारिक सुख श्रेष्ठ रहेगा। धन की स्थिति सामान्य से कुछ ही श्रेष्ठ रहेगी। यात्राएं लाभदायक व मनोरंजक रहेंगी। कार्यों में आ रही बाधा व अड़चनें दूर होंगी। कार्यालय में सहयोगियों से विचारों में तालमेल रहेगा। सम्पूर्ण रूप से एक श्रेष्ठ माह।

मकर - किसी विजय को लेकर अत्यधिक उत्साह में रहेंगे। शत्रु परास्त होंगे। तथा भविष्य में भी वे विरोध करने योग्य नहीं रह जाएंगे। समाज में सम्मान बढ़ेगा। व्यवसायी वर्ग को विभिन्न समस्याओं से छुटकारा मिलेगा। अधीनस्थ वर्ग से सौजन्य बढ़ेगा। धन की स्थिति बहुत प्रबल नहीं कही जा सकती किन्तु उत्तरोत्तर विकास की ओर ही अग्रसर रहेगी। स्वास्थ्य में सुधार होगा। पारिवारिक सहयोग एवं परिवार के संग समय व्यतीत करने का अवसर दोनों ही उपलब्ध होंगे। यात्राएं मध्यम फलदायक ही रहेंगी।

कुंभ - विरोधी पूरे माह कुचक्र रचते ही रहेंगे। प्रबल कूटनीति से कार्य लें अन्यथा हानि होने की सम्भावनाएं हैं। व्यापार में उतार-चढ़ाव देखना पड़ सकता है। अपनी साख के प्रति सतर्क रहें। गुप्त धन प्राप्ति की भी सम्भावनाएं हैं। आय की स्थिति सामान्य ही रहेगी। विरोधों के बाद भी मनोबल बना रहेगा। राज्यपक्ष सहयोगी सिद्ध होगा। मित्र वर्ग, रिश्तेदार तथा सहयोगी भी अनुकूल रहेंगे। संकट निवारण हेतु हनुमान साधना लाभप्रद रहेगी। स्वास्थ्य सुदृढ़ रहेगा। परिवार के संग प्रसन्नता के अवसर कम ही उपलब्ध हो पायेंगे।

मीन - मन में उत्साह रहेगा। किसी गुप्त चिंता का अंत होगा। किसी मनोवांछित उद्देश्य में भी सफलता मिलेगी। जीवन-साथी का पूर्ण सहयोग रहेगा। स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव एवं मानसिक दौर्बल्य का सामना करना पड़ सकता है। आर्थिक स्थिति ज्यों की त्यों रहेगी। शत्रु हताश होंगे। मित्र वर्ग एवं कार्यालय में सहयोगी पूर्ण रूप से आत्मीयता पूर्ण व्यवहार करेंगे। पारिवारिक पक्ष से किञ्चित खेद का सामना करना पड़ सकता है। राज्यपक्ष से चली आ रही उलझनें समाप्त होंगी।

व्रत पर्व एवं त्यौहार

०२.०७.९४	आषाढ़ कृष्ण ९	सिद्धाश्रम जयन्ती
०४.०७.९४	आषाढ़ कृष्ण ११	योगिनी एकादशी
०८.०७.९४	**आषाढ़ अमावस्या**	**निश्चित सिद्धि दिवस**
१०.०७.९४	आषाढ़ शुक्ल द्वितीया	जगन्नाथ दिवस
१७.०७.९४	आषाढ़ शुक्ल नवमी	केतु सिद्धि दिवस
२२.०७.९४	**आषाढ़ पूर्णिमा**	**गुरु पूर्णिमा**
२३.०७.९४	श्रावण कृष्ण प्रतिप्रदा	शून्य सिद्धि दिवस
२७.०७.९४	श्रावण कृष्ण पंचमी	महालक्ष्मी जयन्ती
२९.०७.९४	श्रावण कृष्ण पक्ष ७	सर्वार्थ सिद्धि योग
०१.०८.९४	श्रावण कृष्ण पक्ष ९	श्रावण सोमवार (दूसरा)
०३.०८.९४	श्रावण कृष्ण पक्ष ११	कामदा एकासी
०७.०८.९४	श्रावण कृष्ण पक्ष ३०	हरीयाली अमावस्या
०८.०८.९४	श्रावण शुक्ल पक्ष १	श्रावण सोमवार (तीसरा)
१०.०८.९४	श्रावण शुक्ल पक्ष ३,४	सुवर्ण गौरी व्रत, विनयायक चतुर्थी व्रत
१३.०८.९४	श्रावण शुक्ल पक्ष ७	तुलसी जयन्ती, सर्वार्थ सिद्धि योग
१५.०८.९४	श्रावण शुक्ल पक्ष ९	श्रावण सोमवार (चौथा)
१७.०८.९४	श्रावण शुक्ल पक्ष ११	पवित्रा एकादसी
२१.०८.९४	श्रावण शुक्ल पक्ष १५	रक्षा बन्धन, श्री गायत्री जयन्ती,
२४.०८.९४	भाद्रपद कृ. पक्ष ३	कजली तीज व्रत, बगुला चतुर्थी
२९.०८.९४	भाद्रपद कृ. पक्ष ८	जन्माष्टमी

ऐसे भी छलकी है चांदनी

जब गुरु पूर्णिमा के पर्व का माह हो और आपके घर में गुरु वचनों के रिमझिम बोल बरस रहे हों

ऑडियो कैसेट

गुरु बिन ज्ञान कहां से पाऊं

ज्ञान के आधार पूज्यपाद गुरुदेव के स्वयं के साधनात्मक जीवन का आधार लेकर पूज्य गुरुदेव की वाणी में ही रचा गया एक अनमोल कैसेट ही नहीं अनमोल ग्रंथ भी. . .

शक्तिपात दीक्षा

क्या होता है चैतन्यता का प्रवाह, कैसे सद्गुरु अपनी तपस्या के अंश को अपने शिष्य में उतार देते हैं। गुरु-पूर्णिमा जैसे शक्तिपात प्राप्त करने के दुर्लभ पर्व के पूर्व अवश्य ही श्रवण किया जाने वाला महत्वपूर्ण कैसेट।

शिव सूत्र

गुरु-पूर्णिमा के उपरान्त प्रारम्भ हो रहे श्रावण माह को सफल बनाने के लिए, भगवान शिव की साधना में सफलता पाने के अद्वितीय सूत्र, शीघ्र प्रसन्न होने वाले देव जिनकी साधना प्रत्येक स्त्री और पुरुष के लिए आवश्यक है।

स्वर्ण प्रिया लक्ष्मी साधना

मां भगवती महालक्ष्मी का सर्वाधिक ऐश्वर्यशाली रूप है स्वर्णप्रिया और उनके इसी स्वरूप की साधना का सरल वर्णन प्रस्तुत कर रहा है यह कैसेट। लक्ष्मी साधनाओं के क्रम में एक संग्रहणीय कैसेट।

ऑडियो-प्रति कैसेट- ३०/-

वीडियो कैसेट

वीडियो-प्रति कैसेट - २००/-

हिप्नोटिज्म रहस्य

साधना की व्यवहारिक पद्धति है हिप्नोटिज्म। ग्रहण करने में एवं प्रभाव में सदैव अचूक और जब इसके रहस्य प्रत्यक्ष माध्यम से उपलब्ध हो रहे हों आपके चक्षुओं के समक्ष पूज्यपाद गुरुदेव के द्वारा ही।

साधना सिद्धि एवं सफलता

सामान्य माह ही नहीं, यह तो माह ही विशिष्ट है। पहले गुरु पूर्णिमा पर्व से पूर्व का अवसर, और फिर श्रावण माह, एक - एक क्षण जीने का और साधना में सफलता प्राप्त करने का अवसर है। जिन्हें और भी अधिक स्पष्ट कर देगा यह वीडियो कैसेट।

शिव साधना

गुरु गीता

सम्पर्क

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.) फोन : ०२९१-३२२०६
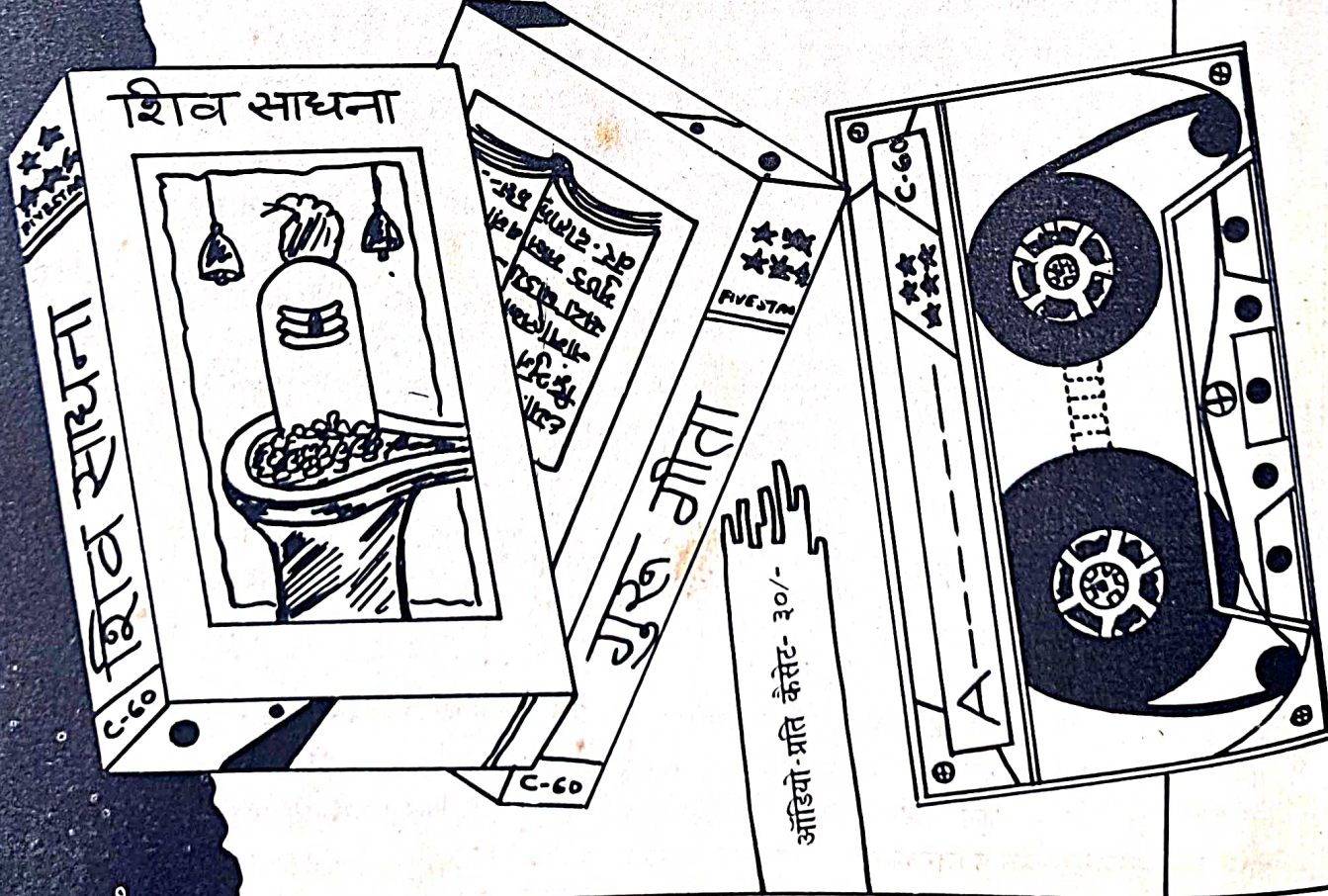
गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४, फोन : ०११-७१८२२४८, फेक्स : ०११-७१८६७००

लक्ष्मी प्राप्ति के छः आखेटक प्रयोग

केवल 'लक्ष्मी' शब्द का उच्चारण करने से ही जीवन में लक्ष्मी की प्राप्ति सम्भव नहीं होती, कुछ सामान्य क्रियाएं भी आवश्यक हो ही जाती हैं . . .

और फिर ये प्रयोग तो जटिल या लम्बे समय तक चलने वाली साधनाएं भी नहीं सरलतम 'आखेटक प्रयोग' हैं, यदि फिर भी कोई इनका लाभ न ले सके तो इसमें शास्त्रकारों का क्या दोष . . .

जीवन में न तो लक्ष्मी के महत्व को नकारा जा सकता है, न साधनाओं को किन्तु साधनाओं के इस विशाल जगत में अकस्मात् प्रवेश कर कुछ प्राप्त करने की लालसा रखने के स्थान पर उचित यह रहता है कि लघु प्रयोग सम्पन्न कर अपने जीवन को एक व्यवस्थित ढंग दे दिया जाए।

जब व्यक्ति लक्ष्मी के प्रति चिन्तन युक्त होता है तभी वास्तव में वह जीवन की सम्पूर्णता की ओर भी चिन्तनयुक्त होता है क्योंकि जो लक्ष्मी की साधना करेगा, लक्ष्मी का चिन्तन करेगा वह केवल धन तक ही सीमित नहीं रहेगा वरन् आगे बढ़कर जीवन के अनेक पक्षों को अपनाने की क्रिया करेगा।

जीवन के विविध पक्षों में से चुनकर हम इस बार लक्ष्मी साधना के अन्तर्गत छः महत्वपूर्ण स्थितियों— व्यापार वृद्धि, ऋण मुक्ति, गृहस्थ सुख, रोग मुक्ति, विजय लक्ष्मी सिद्धि एवं मनोवांछित कार्य सिद्धि को लेते हुए पाठकों के लाभार्थ साधना जगत की श्रेष्ठतम विद्या आखेटक पद्धति के प्रयोग प्रस्तुत कर रहे हैं।

१. व्यापार वृद्धि हेतु आखेटक प्रयोग

यदि कोई साधक व्यापार वृद्धि के प्रयासों को करने से पूर्व अपने व्यापार स्थल को एक सुरक्षा चक्र में बांध दे तो उसकी समस्या का साठ प्रतिशत से भी अधिक हल तो इसी प्रकार से हो जाता है। क्योंकि एक व्यापारी को ज्ञात-अज्ञात रूप से अपने प्रतिद्वंदियों, ईर्ष्या रखने वाले पार्टनर अथवा रिश्तेदारों से घात-प्रतिघात सहने ही पड़ते हैं जिनकी कोई सीमा ही नहीं होती। तब सामान्य पूजन से नहीं वरन् तीव्र निवारक प्रयोगों के द्वारा स्थिति को नियंत्रित करना पड़ता है। अतः यदि समय रहते ही व्यवसायी बन्धु निवारक उपाय कर लें तो इसी में श्रेष्ठता है। इस निवारक आखेटक प्रयोग को सम्पन्न करने के लिए आवश्यक है कि किसी भी मंगलवार की रात्रि में अपनी दुकान को भीतर से बंद कर लाल वस्त्र बिछा कर बैठ जाएं और सामने लाल वस्त्र पर ही लाल रंग से रंगे चावलों की ढेरी पर **एक बिल्ली की नाल** रखकर तेल का दीपक लगा लें तथा **मूंगे की माला** से निम्न मंत्र की तीन माला मंत्र जप करें—

व्यापार वृद्धि मंत्र

ॐ श्रीं ह्रीं व्यापार लक्ष्म्यै ह्रीं श्रीं फट्।।

मंत्र जप के बाद बिल्ली की नाल को सुरक्षित रख लें और जिस चावल की ढेरी पर उसे रखा था वे चावल के दाने पूरी दुकान में व कुछ दुकान के बाहर भी बिखेर दें इससे एक सुरक्षा-चक्र निर्मित हो जाता है, साथ ही यदि कोई तंत्र प्रयोग किया अथवा कराया गया होता है तो वह भी समाप्त हो जाता है। यदि सम्भव हो तो साधक उस रात्रि में अपनी दुकान पर ही विश्राम करे और सुबह लोगों की भीड़ आने से पहले कुछ धनराशि के साथ बिल्ली की नाल व माला दुकान के सामने या किसी चौराहे पर रख दे। व्यापार वृद्धि का यह सरलतम् और प्रत्येक बार कसौटी पर खरा उतरा सिद्ध अनुभूत प्रयोग है।

२. ऋण मुक्ति हेतु आखेटक प्रयोग

ऋण पुरुष के लिए मृत्यु के समान है लेकिन यह भी सत्य है कि व्यक्ति जीवन में विवशताओं के अधीन होकर ऋण के चक्रव्यूह में फंस जाता है। जहां खुद के भरण-पोषण की बात हो तो व्यक्ति एक बार शायद कोई समझौता भी कर ले लेकिन जहां उसके साथ घर-परिवार की जिम्मेदारी जुड़ी होती है वहां तो वह कतरा कर भी नहीं निकल सकता है और यह भी सत्य है कि ऋण की बाधा व्याप्त रहने पर फिर वह सामान्य रूप से जाती भी नहीं। यदि सामान्य रूप से ऋण की समस्या हल हो सकती अर्थात् व्यक्ति के पास धनागम का स्थायी स्रोत होता तो वह प्रारम्भ से ही इस चक्रव्यूह में क्यों फंसता? और तब तक एक उपाय शेष रह जाता है कि व्यक्ति को आकस्मिक धन की प्राप्ति हो सके जिससे वह ऋण-मुक्त होता हुआ अपना खोया सम्मान प्राप्त कर जीवन यापन कर सके।

आखेटक प्रयोग . . . अर्थात् एक बार में ही सफलता प्राप्त कर लेने की क्रिया, जो नाथ योगियों के ही एक विशिष्ट वर्ग द्वारा रचे गए, तीक्ष्ण एवं तुरन्त फलदायक. . .

प्रस्तुत ऋण मुक्ति प्रयोग वास्तव में आकस्मिक धन प्राप्ति प्रयोग ही है और इस हेतु आखेटक पद्धति में बहुत सरल विधान स्पष्ट किया गया है। **ऋण बाधा निवारण यंत्र (ताबीज)** प्राप्त कर उसे अपने सामने रख किसी भी रात्रि में **मूंगे की माला** से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप करें। किन्तु यह आवश्यक है कि समस्त सामग्री आकस्मिक धन प्राप्ति प्रयोग द्वारा सम्पुटित एवं मंत्र बद्ध भी हो।

ऋण मुक्ति मंत्र (आकस्मिक धन प्राप्ति मंत्र)

ॐ श्रीं ऐश्वर्य लक्ष्म्यै ह्रीं नमः

मंत्र जप के उपरान्त तावीज को धारण कर लें तथा माला को विसर्जित कर दें इस प्रकार प्रयोग सम्पन्न करने पर शीघ्र ही स्वप्न आदि के माध्यम से व्यक्ति को आकस्मिक धन प्राप्ति का कोई न कोई उपाय सूझता ही है अथवा इस प्रयोग के माध्यम से गुप्त धन की प्राप्ति भी सम्भव होती है।

३. पूर्ण गृहस्थ सुख हेतु आखेटक प्रयोग

पूर्ण गृहस्थ सुख भी लक्ष्मी का ही एक स्वरूप है क्योंकि घर ही व्यक्ति का आश्रय स्थल होता है। व्यक्ति अपने कर्मक्षेत्र में जिस ऊर्जा से गतिशील होता है उसका मूल उसका घर-परिवार ही होता है। यह घर-परिवार की पूर्णता अनेक पक्षों से मिलकर बनती है जिनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण होता है कि क्या व्यक्ति के घर में पारस्परिक मेल-मिलाप और प्रेम है अथवा नहीं? इस बात के अभाव में व्यक्ति का जीवन नरक तुल्य ही हो जाता है क्योंकि सारे समाज से, बाहरी वातावरण की कटुताओं से थक कर व्यक्ति अपने घर में ही चैन लेना चाहता है और वहां भी उसे यदि मन के अनुकूल सुख चैन, शान्ति न मिले तो उसका मन टूट जाता है। गृहस्थ जीवन में धन, सम्मान, पुत्र, पौत्र आदि के साथ प्राथमिक आवश्यकता इसी कलह-निवारण की होती है जिससे व्यक्ति को उन्नति के लिए उचित आधार मिल सके। साथ ही यदि घर पर कोई तांत्रिक प्रयोग किया गया हो तो वह भी समाप्त हो सके।

पूर्ण गृहस्थ सुख पाने के इच्छुक व्यक्तियों को इसके लिए एक छोटा सा प्रयोग अवश्य कर लेना चाहिए। पूर्ण पारिवारिक सुख की आधारभूता लक्ष्मी ज्येष्ठा लक्ष्मी है और किसी भी सोमवार को ज्येष्ठा लक्ष्मी से सम्बन्धित एक लघु प्रयोग करने से व्यक्ति को निश्चित ही मनोवांछित सुख-सौभाग्य प्राप्त होता है। साधक को चाहिए कि वह ताम्रपत्र पर अंकित **ज्येष्ठा लक्ष्मी यंत्र** प्राप्त कर उसे अपने सामने रखे और चौदह **क्षीरोद्भवों** द्वारा उसका पूजन करे तथा मूल ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र की एक माला मंत्र जप **कमल गट्टे की माला** से करे। इस प्रयोग को पति-पत्नी एक ही साधना सामग्री से कर सकते हैं और उचित रहता है कि पति-पत्नी दोनों संयुक्त रूप से इस साधना को सम्पन्न करें।

गृहस्थ सुख मंत्र

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं सौभाग्य लक्ष्म्यै श्रीं ह्रीं फट्

मंत्र जप के उपरान्त १४ क्षीरोद्भवों को सम्भाल कर रख लें ज्येष्ठा लक्ष्मी यंत्र को पूजा स्थान में स्थापित कर दें। १४ क्षीरोद्भव १४ रत्नों के प्रतीक हैं। कमलगट्टे की माला को यंत्र पर चढ़ा दें और भविष्य में उसका प्रयोग अन्य साधना में न करें।

४. रोग मुक्ति हेतु आखेटक प्रयोग

जीवन की सबसे बड़ी सम्पदा स्वास्थ्य ही मानी गई है और जिन्हें ईश्वर की ओर से यह सौगात मिली हो उन्हें देखकर ही इसकी महत्ता समझी जा सकती है। किसी स्वस्थ व्यक्ति की खिलखिलाती हंसी और जीवन के सभी सुखों को भोगने की क्षमता देखकर ही समझा जा सकता है कि मुक्त जीवन का क्या आनन्द और चैतन्यता होती है। यह प्रयोग मूल रूप से सिद्ध लक्ष्मी के विशिष्ट वरदायक स्वरूप को लेकर रचा गया प्रयोग है जिसमें सिद्ध लक्ष्मी की ही साधना इस प्रकार से की जाती है कि व्यक्ति दैहिक, दैविक और भौतिक बाधाओं से सर्वथा मुक्त होकर जीवन के चारों

पुरुषार्थ प्राप्त कर सके।

सिद्ध लक्ष्मी यंत्र, रोग मुक्ति गुटिका, चार सिद्धिफल एवं हकीक की सफेद माला इस साधना की आवश्यक सामग्री है, जो रोग मुक्ति मंत्रों द्वारा सिद्ध हो। किसी भी बुधवार की प्रातः अपने सामने समस्त सामग्री रख सभी का कुंकुम-अक्षत से पूजन करें एवं निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप करें। यदि किसी विशेष रोग से पीड़ित हों तो मंत्र जप से पूर्व मन में संकल्प करें कि मैं 'अमुक' रोग से मुक्त होने के लिए यह प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूं।

साबर मंत्रों के समान ही तीक्ष्ण एवं लाभप्रद, साबर मंत्रों के समान ही जीवन के विविध पक्षों को समेटते हुए . . .

रोग मुक्ति-मंत्र

ॐ हीं हीं हीं फट्

मंत्र-जप के उपरान्त सभी सामग्री एक सफेद वस्त्र में बांधकर सुरक्षित रख लें और अगले वर्ष ठीक उसी दिन उसे विसर्जित कर दें। कई साधक इस प्रयोग को प्रत्येक वर्ष नई साधना सामग्री के साथ पुनः-पुनः करके स्वयं को एवं अपने परिवार को निरन्तर रोग मुक्त बनाए रखते हैं।

५. विजय लक्ष्मी सिद्धि हेतु आखेटक प्रयोग

कहते हैं जिसको जीवन में विजय लक्ष्मी की सिद्धि मिल जाती है फिर वह जीवन में कहीं अटकता व उलझता नहीं है एक प्रकार से उसको जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विजय की प्राप्ति हेतु नये-नये मार्ग मिलते ही जाते हैं। विशेषकर राज्यपक्ष से निरन्तर सम्बन्धित होते रहने वाले व्यक्तियों के जीवन में विजय लक्ष्मी की पूर्ण सिद्धि होनी आवश्यक ही होती है। व्यापारी वर्ग, ठेकेदार, एवं विधि व्यवसाय से सम्बन्धित व्यक्ति इसी श्रेणी में आते हैं और इसकी पूर्ण सिद्धि हेतु केवल एक ही उपाय परीक्षित माना गया है जो इस आखेटक पद्धति में प्राप्त होता है। यों तो राज्य पक्ष की बाधाओं से मुक्ति प्राप्त करने की अन्य विधियां भी हैं किन्तु विजय लक्ष्मी पूर्ण रूप से सिद्धिप्रद होकर कदम-कदम पर मार्ग प्रशस्त करती चले, इस हेतु प्रस्तुत पद्धति ही सम्पूर्ण मानी गई है।

इस साधना में **अंगुष्ठ प्रमाण लघु शंख,** ताम्र पत्र पर अंकित **विजय लक्ष्मी यंत्र** आवश्यक सामग्री हैं। इन दोनों सामग्रियों को अपने पूजन में स्थापित कर साधक यदि **स्फटिक माला** से निम्न मंत्र की पांच माला जप कर लेता है तो उसे पूर्णरूप से श्री, सम्पन्नता और वैभव प्राप्त होने की क्रियाएं बनने लगती हैं तथा केवल राज्य पक्ष से ही नहीं वरन् दैनिक जीवन से सम्बन्धित अनेक पक्षों में भी लाभ मिलने लगता है।

राज्यलाभ-मंत्र

हीं श्रीं ऐं ऐं श्रीं हीं

साधना की पूर्णता के पश्चात् यंत्र एवं माला विसर्जित कर देनी चाहिए तथा दक्षिणावर्ती शंख को अपने पूजा स्थान में स्थापित कर लेना चाहिए। विशेष अवसरों पर साधक इसे पीले वस्त्र में लपेट कर अपने साथ भी ले जा सकते हैं।

६. मनोवांछित कार्य सिद्धि हेतु आखेटक प्रयोग

वस्तुतः यह प्रयोग आखेटक पद्धति का सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रयोग है क्योंकि जहां अन्य प्रयोग एक विषय विशेष से सम्बन्धित हैं वहीं इस प्रयोग के अन्तर्गत साधक अपनी मनोकामना की कोई भी वस्तु अथवा स्थिति प्राप्त कर सकता है। जीवन की सभी इच्छाओं को कदाचित् बांधना सम्भव नहीं होता। इसी कारणवश आखेटक पद्धति में इस दुर्लभ विधान की रचना की गई है। व्यक्ति की ऐसी कामना प्रेम से सम्बन्धित भी हो सकती है, मनोवांछित विवाह से सम्बन्धित भी हो सकती है अथवा यश, ऐश्वर्य, शत्रु नाश या किसी विशिष्ट कार्य को पूर्ण करने हेतु भी हो सकती है और व्यक्ति को चाहिए कि वह अपने मन की कामना को निःसंकोच रूप से इस प्रयोग के माध्यम से पूर्ण करे। इस साधना में जिस आवश्यक सामग्री की आवश्यकता पड़ती है उसे **मनोकामना शंख** की संज्ञा दी गई है, जो एक विशेष प्रकार का शंख होता है और समुद्र से प्राप्त होने के कारण लक्ष्मी का पूर्ण स्वरूप माना जाता है। किसी भी शुक्रवार की रात्रि में इस शंख को अपने सामने रखकर अपनी मनोवांछित कामना को कागज पर स्पष्ट रूप से लिखकर शंख के नीचे रख दें और **स्फटिक की माला** से निम्न मनोकामना मंत्र की एक माला मंत्र जप करें।

मनोकामना मंत्र

ॐ मांगल्य लक्ष्म्यैं सिद्धिं देहि देहिनमः

मंत्र-जप के उपरान्त जिस कागज पर अपनी मनोकामना लिखी थी उसे शंख के भीतर रखकर उसका मुख गीले आटे से बंद कर दें तथा उसे किसी सुरक्षित स्थान पर रख दें। जब मनोकामना पूर्ण हो जाए तो इस शंख को विसर्जित कर दें तथा किसी मंदिर में जाकर कुछ दक्षिणा आदि भेंट कर अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करें।

● डॉ० रामदास शर्मा, रायपुर, म० प्र०।

रामकृष्ण परमहंस की काली साधना
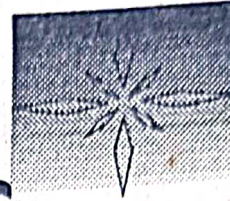
शक्ति के अजस्र स्त्रोत का नाम है काली। मूर्तियों और चित्रों में उन्हें जितना भयानक प्रदर्शित किया जाता है, वे सचमुच उतनी ही भयानक हैं, किन्तु यदि वे अपने भक्त पर प्रसन्न हो जाती हैं, तो उसे त्रैलोक्य का साम्राज्य भी दे सकती हैं और एक माता की तरह ही उसका निरन्तर पोषण करती हैं। पुराणों में पराशक्ति के नारी-रूप में आविर्भाव की अनेक रोचक और सुन्दर कथाएं वर्णित की गई हैं। काली के प्राकट्य की अत्यन्त ही रोमांचक कथा श्री दुर्गा सप्तशती में प्राप्त होती है। चण्ड-मुण्ड की असुर सेना जब पराशक्ति अंबिका से युद्ध के लिए सामने खड़ी थी—

''ततः कोपं चकारोच्चैरम्बिा का तानरीन् प्रति।
कोपेन चास्या वदनं मषोवर्णमभूतदा।।
भृकुटीकुटिलातस्या ललाटफलकाद्रुतम्।
काली करालवदना विनिष्क्रान्तासि पाश्निो।।
विचित्रखट्वांगधरा नरमाला विभूषणा।
द्वीपिचर्मपरिधाना शुष्कमांसातिभैरवा।
अतिविस्तारवदना जिव्हाललन भीषणा।
निमग्नारक्तनयना नादापूरितदिंमुखा।।
सा वेगेनाभिपतिता पातयन्ती महासुरान्।
सैन्ये तत्र सुरारीणामभक्षयत् तद्बलम्।।
(७१५-६)

- तब अंबिका ने उन शत्रुओं के प्रति बड़ा क्रोध किया। उस समय क्रोध के कारण उनका मुख काला पड़ गया, ललाट में भौहें टेढ़ी हो गयीं और वहां से त्वरित गति के साथ विकरालमुखी काली प्रकट हुईं, जो तलवार और पाश लिए हुए थीं। विचित्र खाट्वांग धारण किए और चीते के चर्म की साड़ी पहने वे नर-मुंडों की माला से विभूषित थीं। उनके शरीर का मांस सूख गया था, केवल हड्डियों का ढांचा था, जिससे वे अत्यंत भयंकर जान पड़ती थीं। उनका मुख बहुत विशाल था, जीभ लपलपाने के कारण वे और भी डरावनी प्रतीत होती थीं। उनकी आंखें भीतर की ओर धंसी हुई थीं। बड़े-बड़े दैत्यों का वध करती हुई कालिका देवी बड़े वेग से दैत्यों की उस सेना पर टूट पड़ीं और उन सबका भक्षण करने लगीं।

पराशक्ति के इस दुर्धर्ष अवतार की उपासना करना कोई साधारण काम नहीं है। कोई बिरला उपासक ही होता है, जो काली-साधना में तत्पर होता है और सफलता प्राप्त करता है। संसार

के ऐसे ही बिरले उपासकों में एक थे– स्वामी विवेकानन्द के गुरु "रामकृष्ण परमहंस जी"। रामकृष्ण परमहंस की सिद्धि जन्मजात थी। प्रमाणित दस्तावेज बतलाते हैं कि उनकी कुंडलिनी बाल्यावस्था में ही जाग्रत हो गई थी। यही कारण है कि वे जाने-अनजाने भाव में जो भी कृत्य करते थे, उसी से भगवान की पूजा हो जाती थी। कुंडलिनी जाग्रत साधकों के लिए कर्मकांड आवश्यक नहीं होता। पराशक्ति कुंडलिनी अपने साधकों की स्वतः सहायता करती है और सिद्धि के अवरुद्ध द्वारों को खोलती चलती है।

रामकृष्ण परमहंस जन्म से ही साधक थे, सिद्ध थे, इसमें दो मत हो ही नहीं सकते। दार्शनिक शब्दावली में परमहंस उसे कहते हैं, जिनके व्यवहार में "उन्माद" होता है, आवेश होता है, जिन्हें देह की सुधि नहीं होती, अपनी आत्मा के स्वरूप में जो सतत् लिप्त रहते हैं, मन तो इनका इतना भोला होता है, जैसे किसी शिशु का हो और हठ ऐसा कि माता से चाहे जो कार्य करवा ले।

परामबा शक्ति अनेक रूपों में रामकृष्ण परमहंस के सामने प्रकट हो चुकी थीं, होती रहती थीं और उनकी साधना के पथ को प्रशस्त करती थीं। कभी राधा के रूप में, अल्हड़ ग्वालिन की वेशभूषा में छम-छम नूपुर झनकाते हुए, हाथों में दूध का मटका थामे, पराशक्ति रामकृष्ण परमहंस के सामने प्रकट हुई थीं और अपने हाथों से उन्हें दूध पिलाया था। एकांत जंगल में, जहां किसी नारी के अस्तित्व होने की सम्भावना न हो, इस तरह के विचित्र दृश्य को आश्रम के सैकड़ों शिष्यों ने देखा होगा, किन्तु कोई यह नहीं पहचान सका कि ग्वालिन के वेश में स्वयं पराशक्ति हैं, जो अपने भूखे साधक को निर्धारित समय पर दूध प्रदान करने के लिए प्रकट हुई थीं। स्वयं रामकृष्ण परमहंस उसे नहीं पहचान पाए, जब तक दुग्धपान करते रहे। किन्तु जब वे जाने लगी थीं, परमहंस जी ने सचेत होकर पूछा था– "मां! मां! कौन हो तुम? जो इस बीहड़ वन में मुझ भूखे संन्यासी को दूध पिला रही थीं।" जैसे ओस में भीगे खूबसूरत फूल एक साथ खिलखिला पड़े हों, वह ग्वालिन बाला हंस पड़ी थी और अपने हाथों के कंगन खनखनाती बोल पड़ी थी– "स्वामी जी, तुमने मुझे पहचाना नहीं? मैं ही तो हूं तुम्हारी राधारानी, जिसे तुम समाधि की अवस्था में स्मरण कर रहे थे?" रामकृष्ण परमहंस को उसी क्षण से यह विश्वास हो गया था कि मां हर पग में, हर सांस में उनके साथ हैं।

प्रस्तुत सत्य-कथा यह सिद्ध करती है कि मातृशक्ति के रूप में पराशक्ति की आराधना करने वाले साधकों के शरीर का भरण-पोषण वह मां ही करती है, जिसने जगत को उत्पन्न किया है, उसे धारण करती है और अंत में संहार

काली : भवतारिणी

दस महाविद्याओं में प्रमुख और सर्वप्रथम महाविद्या मानी जाने वाली मां महाकाली ही हैं और ऐसा शास्त्रीय विधान है कि जब तक इनकी साधना न सम्पन्न कर ली जाए तब तक किसी अन्य साधना में सफलता मिलती ही नहीं महाविद्या साधनाओं के सन्दर्भ में और भी अधिक आवश्यक मानी जाती है।

महाकाली अपने स्वरूप में उग्रतम होते हुए भी सदा -सदा से गृहस्थों और तांत्रिकों की सामान्य रूप से आराध्या रही हैं। काल पर वश करने की आधार भूत साधना होने के कारण ये स्वतः ही भवतारिणी हैं और साधक के मनोरथ पूर्ण करने वाली हैं क्योंकि साधक जिन कारणों से अपने जीवन में असफल होता है उसका मूल कारण तो काल चक्र ही है।

परमहंस रामकृष्ण की परमाराध्या **मां काली इसी कारणवश उग्र होते हुए भी मातृस्वरूपा ही हैं और कोई भी गृहस्थ इनका पूजन सम्पन्न कर सहज भाव से अपने जीवन को उन्नति दे सकता है।** काली वाक् साधना का भी आधार हैं महाकवि कालीदास इन्हीं की आराधना कर कालीदास कहलाए।

यों तो महाकाली साधना की अनेक पद्धतियां है किन्तु सरलतम पद्धति में अष्ट भैरव एवं अष्ट भैरवी साधना के द्वारा इन्हें सिद्ध करना अधिक अनुकूल माना गया है। ये अष्ट भैरव हैं – **असितांग भैरव, रुरू भैरव, चण्ड भैरव, क्रोध भैरव, उन्मत्त भैरव, कपालि भैरव, भीषण भैरव, संहार भैरव।** एवं अष्ट भैरवियां – **श्री भैरवी, महाभैरवी, सिंह भैरवी, धूम्र भैरवी, भीम भैरवी, उन्मत्त भैरवी, वशीकरण भैरवी** एवं **मोहन भैरवी** है।

इनकी स्थापना **अष्ट भैरव** चक्र एवं **अष्ट भैरवी** चक्र द्वारा **महाकाली यंत्र** के चारों ओर कर प्रत्येक का पूजन सिन्दूर एवं लाल पुष्प से करके **रक्त माला** द्वारा निम्न काली मंत्र का जप करना पूर्ण सिद्धि दायक माना गया है।

मंत्र -

ॐ क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्वाहा।

मंत्र जप के उपरान्त महाकाली यंत्र को छोड़ कर शेष सामग्री विसर्जित कर दें।

करती है। काली के रूप में मातृ-शक्ति विध्वंस का जीवंत प्रतीक है। भूख-प्यास, आधि-व्याधि, महामारी, ध्वंस, नाश, अंधेरा, वन्हि, बाढ़, भूकम्प सब उसी के रूप हैं— उसकी सेना के गण हैं। पराशक्ति की इस रूप में भी रामकृष्ण परमहंस ने उपासना की थी, तब वे भाव-योग की साधना कर रहे थे। किसी सन्त ने निष्काम कर्म के सम्बन्ध में उन्हें कुछ समझा दिया था तो अपने स्वभाव की विचित्रता के अनुसार वे विलक्षण ही प्रयोग करने लगे थे। वे एक हथेली में मिट्टी और दूसरी हथेली में स्वर्ण-मुद्रा लेकर गंगा के तट पर बैठ जाया करते थे। पहले मिट्टी जल-धारा में छोड़ते थे और कहते थे— "यह मिट्टी है।" फिर दूसरी हथेली से स्वर्ण-मुद्रा प्रवाहित करते हुए कहते थे— "यह भी मिट्टी ही है।"

ऐसा विचित्र और रहस्यमय व्यक्तित्व था रामकृष्ण परमहंस का। उनके मन में काली की साधना करने की वृत्तिका जन्म होते ही वह मां की भयावह प्रतिमा के सामने बैठ जाते थे और कुछ क्षणों में ही भावार्त होकर रोने लगते थे— "मां! मां!! दर्शन दो! . . . दर्शन दो!! क्या आज भी मुझे लौटा दोगी?" सारी रात्रि जागते हुए वे मां को इसी तरह पुकारा करते थे। कभी क्रोधित होकर मातृ-प्रतिमा के मुखारविन्द को टकटकी बांध कर देखने लगते थे। (वैज्ञानिक भाषा में, मानो प्रतिमा के मुख पर त्राटक कर रहे हों) दांत किटकिटाते हुए परमहंस जी जब क्रोधित बालक की तरह फुंफकारते हुए काली से बातें करते थे, तब ऐसा लगता था, ध्वंस की देवी अपने इस हठी बालक के क्रोध का सम्मान करते हुए शांत और सौम्य बनी हुई हैं।

अर्धरात्रि का नीरव वातावरण, शायद अमावस्या की तिथि थी, सामने काली की भयावह प्रतिमा और भाव-योग में तल्लीन रामकृष्ण परमहंस। अखण्ड ज्योति के धीमे प्रकाश में और अंधकार में जैसे द्वन्द्व चल रहा था। उस महायोगी के अंतर्मानस में भी विभिन्न भाव-तरंगों का संघर्ष चल रहा था। "मां! . . . मां!! दर्शन दो!" शिशु जैसे हठ पकड़ता जा रहा था— "आज तो दर्शन करूंगा ही मां! मुझे अपने प्राणों का मोह नहीं! . . . मां! . . . आज तो प्रकट हो।" जैसे अपरिमित सागर में पछाड़ खाती लहरें और कोई तैरते हुए किनारे की तलाश में हों।

रावण पर विजय प्राप्त करने के लिए महाशक्ति की आराधना करते हुए भगवान श्रीराम के जो भाव थे, वैसे ही भाव थे रामकृष्ण परमहंस के भी। पराशक्ति ने राम के साथ एक खेल-खेला था। राम मंत्र जपते थे और ध्यानावस्था में हाथ बढ़ा कर सहस्र कमल-दल देवी की प्रतिमा पर अर्पित करते थे, जब अंतिम पुष्प था शेष, तब देवी साक्षात् प्रकट हुई और पूजा का वह फूल उठाकर अंतर्ध्यान हो गयीं। जब राम ने मंत्र-जप पूरा कर कमल-पुष्प के लिए हाथ बढ़ाया तो पुष्प गायब! प्रभु की आंखें खुल गईं। असिद्धि और सिद्धि का भीषण युद्ध। राम के अंतर्मानस ने कहा— "क्यों चिन्ता करते हो। माता कौशल्या तुम्हें राजीव-नयन कहती थीं। दो पुष्प शेष हैं अभी, एक अर्पित कर यह पुरश्चरण पूरा करो" तब जिस क्षण राम ने निश्चय किया कि अपनी एक आंख बाण से बेंधकर देवी पर अर्पित कर देंगे।

कुछ वैसे ही भाव से उद्वेलित हो कर रामकृष्ण परमहंस ने भी अपनी आंखें खोलीं। सामने देखा काली की मूर्ति। रक्तिम आंखें, लपलपाती जिह्वा, खड्ग, खप्पर और असुर-मुण्ड से बहती रक्त की धारा— "मां! मां!! दर्शन दे।" आर्त होकर उस भक्त ने पुकारा, फिर सहसा ही हाथ बढ़ाकर काली के हाथ का खड्ग छीन लिया।— "आज तो दर्शन करूंगा ही।" उस योगी ने जिस क्षण आवेशित होकर अपनी गर्दन काटने का निश्चय कर लिया, विद्युत की जैसी कौंध हुई और उसने देखा— सामने वह प्रत्यक्ष है, हाथ बढ़ाकर स्वामी जी का खड्गहस्त थाम लिया उसने। योगी की चेतना भौतिक संसार से विलुप्त होती गई। प्रलयकालीन गर्जना करते हुए उस मेघ-खंड की रस-धारा में स्नान करने के लिए समाधि ही उपयुक्त अवस्था हो सकती थी।

❋

"मैं तो मां का हूं"

. . . उनका समर्पित भाव इतना अधिक प्रबल हो गया था कि वे स्वयं को मां के शिशु के अतिरिक्त कुछ समझते ही नहीं थे कई बार तो ऐसा देखा गया कि वे बालक के समान कुछ पग चलते थे और लड़खड़ा कर गिर जाते थे कभी उनका वस्त्र खुल जाता था और उन्हें शिशु के समान कोई बोध नहीं रहता था।

ऐसी ही भावावस्था के दिनों में कभी कोई तथाकथित शास्त्री उनके पास आए और उनको भांति - भांति से उत्तेजित करने लगे कि स्वयं के विषय में कुछ बोलें, उन्होंने श्रीरामकृष्ण परमहंस को अनेक व्यंग- बाण बोले और कूटोक्तियां बोलीं किन्तु ठाकुर शांत रहे। अंत में वे तथाकथित शास्त्री महोदय खीज कर उनसे पूछने लगे कि आखिर आप अपने को समझते क्या हैं? श्रीरामकृष्ण परमहंस ने विनम्र स्वर में कोने में रखी झाड़ू की ओर इशारा किया और बोले"मैं तो एक झाड़ू हूं जो स्वयं गन्दी कही जाती है लेकिन सफाई कर देती है।"

जीवन के स्वर्णिम-सूत्र

जो आपको बुलन्दियों पर पहुंचाने में समर्थ है

ये जीवन के तपे-तपाये अनुभव की अग्नि में स्वर्णिम बने कुछ सूत्र हैं, जो जीवन को पूर्णता, श्रेष्ठता, समृद्धि एवं ऊंचाइयों पर पहुंचाने में समर्थ है. . . ये सूत्र आपके लिए भी अद्वितीय है. . . आजमा कर देखिये न . . . ।

जीवन का आनन्द खुश रहने में नहीं, खुश रखने में है।

आप वही कीजिये, जिसे आप सही मानते हैं।

कभी दूसरों के सामने अपनी पत्नी या बच्चों की बुराई मत कीजिये।

अजनबी का भूलकर भी विश्वास मत कीजिये।

साहसी बनो, भाग्य साहसी आदमी की ही मदद करता है।

अगर जिन्दगी को आराम से व्यतीत करना है तो अपनी आवश्यकताओं में कटौती कीजिये।

जो आज मित्र है, वह कल भी मित्र बना रहेगा यह जरूरी नहीं है, अतः गहरे राज की बात कभी किसी को मत बताओ।

तुम झूठ बोले, इस बात का मुझे अफसोस नहीं है, अफसोस तो इस बात का है, कि भविष्य में मैं तुम्हारा विश्वास कैसे करूंगा।

दस दिनों में एक बार सूर्योदय का सुन्दर दृश्य अवश्य देखो।

संसार के श्रेष्ठ व्यक्ति वे होते हैं जो आपत्तियों का पूर्वानुमान लगा लेते हैं।

हमेशा वर्तमान में रहना सीखो, विगत के बारे में रोना मत रोइये।

जो पत्नी अपने पति के व्यवसाय में दखल देती है, वह अपने पारस्परिक प्यार में पलीता ही लगाती है।

प्रेम - सम्बन्ध जीवन में रोमांच का समावेश करता है, और साहसिक रोमांच आत्मा के लिए उतना ही आवश्यक है, जितना शरीर के लिए भोजन।

यदि आप चाहते हैं कि आपको प्यार मिले, तो आप थोड़ी ज्यादा जोखिम उठाने की भी हिम्मत कीजिये।

कहीं भी रहो, दिन में एक बार अपने पिता को टेलीफोन अवश्य कर लो।

अगर आप जवान व चुस्त बने रहना चाहते हैं तो कभी भी जीवन में हार मत मानिये।

जीवन की पूर्णता ''गुरु'' से अपने आपको एकाकार करने से ही प्राप्त होती है।

● डॉ० साधना
भोपाल

प्रख्यात होम्योपैथ से स्त्री रोगों के सन्दर्भ में ली गई भेंटवार्ता

हमने पत्रिका के पूर्व अंकों में देश की प्रख्यात होम्योपैथ एवं योग विशेषज्ञा **डॉ० साधना** से उन विषयों पर चर्चा की जिन पर सामान्यतः चिकित्सक भी खुल कर अपने विचार प्रकट नहीं करते। मरीज तो प्रारम्भ से ही हिचकिचाहट में भरे रहते ही हैं। किन्तु **डॉ० साधना** की यह विशेषता है कि उन्होंने महिला चिकित्सक होते हुए भी मानव जीवन के इन महत्वपूर्ण गुप्त पक्षों पर चर्चा करना केवल अपना चिकित्सकीय दायित्व ही नहीं सामाजिक दायित्व भी माना।

पुरुषों में बढ़ती नपुंसकता की चर्चा हो या विविध यौन रोगों के प्रकोप की बात, शुक्रमेह अथवा शीघ्रपतन- **डॉ० साधना** ने प्रत्येक स्थिति के लिए खुले मन मस्तिष्क से इन पर चर्चाएं करके जो निदान प्रस्तुत किए उनसे पत्रिका के अनेक पाठक लाभान्वित हो चुके हैं। इस बात का प्रमाण हमें पत्रिका कार्यालय में मिलने वाले पत्रों एवं **डॉ० साधना** को मिलने वाले पत्रों के आधार पर मिला।

हमारी महिला पाठक वर्ग को इस बात का कुछ खेद था कि हम महिलाओं के जटिल रोगों से सम्बन्धित चर्चाएं **डॉ० साधना** से क्यों नहीं कर रहे हैं। वास्तव में महिला रोगों की समस्या पुरुषों की अपेक्षा कहीं अधिक जटिल होती है। अतः हमने उचित समझा कि इस विषय में जब भी सामग्री प्रकाशित करें तो उसे पूर्ण गम्भीरता व क्रमबद्धता देते हुए प्रकाशित करें।

इसी बात को ध्यान में रख कर पत्रिका कार्यालय की ओर से **श्रीमती कनक पाण्डेय** ने डॉ० साधना से जो वार्तालाप किया उसका एक अंश हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं।

प्राथमिक चर्चा के रूप में यह वार्ता महिलाओं में आम समस्या उनके मासिक रजस्राव की अनियमितता से सम्बन्धित रही जिसके कारण उन्हें दैनिक जीवन में अनेक गम्भीर परिणामों को भोगना पड़ता है।

श्रीमती कनक पाण्डेय : महिलाओं का सर्वाधिक जटिल पक्ष उनके रजस्राव से सम्बन्धित रहता है और मैं आपसे इस सम्बन्ध में आपके अनुभव जानने की अपेक्षा रखती हूं।

डॉ० साधना : मासिक रजस्राव एक स्त्री के जीवन का सामान्य पक्ष होता है और यह तो एक विशेषता है जिससे यह सूचित होता है कि वह प्रकृति निर्माण की क्षमता रखती है; किन्तु जब यही चक्र सामान्य न होकर कष्टयुक्त अथवा अनियमित हो जाता है तब गम्भीर परिणाम भी हो सकते हैं।

कनक : यह किन दशाओं में और क्यों अनियमित होता है?

डॉ० साधना : महिला की आन्तरिक संरचना पुरुष की अपेक्षा कहीं अधिक जटिल होती है। एक तो गर्भाशय जैसा नाजुक अंग और उसमें भी हार्मोन्स का सन्तुलन - असन्तुलन ही इसका मुख्य कारण होता है, जिसके कारणवश रक्तस्राव कष्टप्रद हो जाता है। यह दो प्रकार का हो सकता है। पहले प्रकार में पेट के निचले भाग में रक्तस्राव शुरू होने के साथ ऐंठन और दर्द शुरू होता है जो सात से दस दिन तक बना रहता है। दूसरे प्रकार में रक्तस्राव के ठीक

पहले पेट में हल्का दर्द शुरु होता है जो मासिक दर्द के प्रारम्भ होते ही समाप्त हो जाता है।

कनक : इन कष्टदायक स्थितियों के निवारण के लिए होम्योपैथिक में क्या व्यवस्था की गई है?

डॉ० साधना : यह दर्द सामान्य बात नहीं है। रोगिणी को इतनी अधिक पीड़ा पहुंचती है जो असह्य होती है। ऐसी स्थिति में इसे कष्टार्तव **(Dysmenorrhoea)** कहा जाता है। रोग की विभिन्न स्थितियों के अनुसार ही इनके उपचार की व्यवस्था की गई है।

कनक : डॉ० साधना मैं इस विषय में आपके अनुभवों को ही जानने की अधिक इच्छुक हूं क्योंकि औषधियों का विवरण तो सामान्य पुस्तकों में भी मिल जाता है लेकिन आप जैसी वरिष्ठ चिकित्सिका का अनुभव हमारे लिए महत्वपूर्ण है।

डॉ० साधना : मैंने इस विषय में कुछ वर्ग बनाए हैं और उनके आधार पर उपचार देने में सफलता भी प्राप्त की है। प्रथम और सामान्य स्थिति ऐसी होती है जहां पीड़ा समय से बहुत पहले प्रारम्भ हो जाती है।

ऐसी पीड़ा की स्थिति में जब शरीर कमजोर हो जाता हो, मूर्छा आ जाती हो, क्रोध की प्रवृत्ति बढ़ जाए, शोरगुल और दखलन्दाजी अच्छी न लगे। मूत्र - त्याग बार-बार करने की आवश्यकता अनुभव हो तथा उल्टी और दस्त प्रारम्भ हो जाए तथा डिम्ब ग्रंथियों के आसपास छूने पर दर्द हो तब **कैमोमिला** औषधि लाभप्रद रहती है।

दूसरी स्थिति ऐसी होती है जब रोगिणी थोड़े ही कार्य से थक जाती हो, कब्ज, निचले भाग में ऐंठन, दर्द बढ़ जाता हो तथा मासिक भी समय पूर्व होने की स्थिति बनती रहती हो, तब **नक्स वोमिका** औषधि अधिक अनुकूल रहती है।

यदि पीड़ा रजस्राव के भी पहले हो जाती हो तथा बहुत अधिक मात्रा में होती हो, पेट में दर्द, जी मिचलाना, भय, उदासी, उत्तेजना, ठंड लगना एवं शरीर का पीला पड़ जाना हो जाता हो तब मेरी राय में **वेराट्रम एल्ब** औषधि लेनी चाहिए।

कनक : यदि यह पीड़ा रजस्राव के साथ ही साथ होती हो जैसा कि आम तौर पर होता है तब क्या करना चाहिए?

डॉ० साधना : ऐसी स्थिति में **सीपिया** सर्वाधिक अनुकूल औषधि मानी गई है। जबकि स्राव जलन पैदा करने वाला त्वचा को छीलता हुआ पीला रंग लिए हुए हो, बेचैनी होती हो और ऐसा अनुभव होता हो कि पेट में से कोई भारी वस्तु खिसक कर नीचे जा रही हो, तब इस स्थिति में इस औषधि का लाभ सबसे ज्यादा माना गया है।

दूसरी औषधि **चाइना** तब उपयोगी रहती है जब स्राव के साथ साथ कभी- कभी काले रंग के थक्के भी आ जाते हैं।

यदि स्राव के समय पेट की बांयी ओर डिम्ब ग्रन्थियों में दर्द होता है और यह दर्द वृक्क या गुर्दे के आसपास शुरू होकर डिम्ब ग्रन्थियों के चारों ओर केन्द्रित हो जाता है तथा पेट में बहुत अधिक खिंचाव अनुभव होता हो तब **लैकेसिस** नामक औषधि उपयोगी रहती है।

कनक : क्या इन सामान्य लक्षणों पर आधारित औषधियों के अतिरिक्त कुछ अन्य औषधियों को भी आपने उपयोगी पाया है?

डॉ० साधना : मैंने अपने अनुभव से **बेलाडोना** नामक औषधि को एक अनुकूल औषधि पाया है क्योंकि आज स्त्री को घर से बाहर निकल कर अपने कार्यालय आदि में जाना पड़ता है और कष्टार्तव की एक दशा ऐसी भी होती है जिसमें सफर के समय बस, गाड़ी, रेल के झटके से उदर के निचले भाग में दर्द होने लगता है और ऐसा लगता है कि कोई भारी वस्तु नीचे की ओर खिसक कर वस्ति प्रदेश में जा रही है। चेहरा लाल हो जाता है तथा किसी का भी स्पर्श बहुत अधिक उत्तेजित करने वाला होता है। जाहिर है आज की सामाजिक स्थिति में महिलाएं इन सभी स्थितियों का निराकरण नहीं कर सकतीं अतः जब भी ऐसा कष्ट होता हो तो यह औषधि विशेष लाभप्रद होती है।

फास्फोरस भी एक अच्छी औषधि होती है विशेष रूप से जब स्त्री का मन दुखी और चिन्तित रहता हो, आंखों के आस-पास कालापन नजर आता हो और रात में अत्यधिक कमर दर्द होता हो।

कनक : डॉ० साधना क्या इसका सम्बन्ध रोगिणी की मनः स्थिति से भी होता है?

डॉ० साधना : इस रोग की उत्पत्ति का कारण मन से सम्बन्धित नहीं है किन्तु विशेष परिस्थितियों में या किसी अनियमित स्थिति में, उदाहरण स्वरूप स्राव में काले थक्के आने पर, डिम्ब ग्रंथि में खिंचाव बढ़ जाने पर या योनि में संवेदनशीलता बढ़ जाने पर रोगिणी असहज होकर मानसिक चिन्ताओं से ग्रस्त हो जाती है। ऐसी स्थिति में मेरी राय में **प्लेटिना** नामक औषधि लाभप्रद सिद्ध होती है।

इन प्रश्नों की सूची यहीं समाप्त नहीं होती और इसका आगामी क्रम हम भविष्य में प्रस्तुत करेंगें। इसके साथ ही साथ हम पाठकों से भी अपेक्षा करते हैं कि वे अपने सुझावों द्वारा हमें मार्गदर्शन दें।

डॉ० (श्रीमती) साधना
साधना होम्यो क्लीनिक,
शॉप नं० २५, छठा बस स्टॉप,
सुभाष मार्केट, शिवाजी नगर, भोपाल (म० प्र०)
फोन : ०७५५-५५४९२५

''देवभूमि - मनाली'' में

देव प्रत्यक्षीकरण साधना

देवताओं की घाटी और पग - पग पर महर्षियों के स्पर्श से चैतन्य भूमि पर यदि प्रामाणिक पद्धति द्वारा साधनाएं सम्पन्न करायी जाए तो कोई कारण ही नहीं कि वे सफल न हो और यही बात एक बार पुनः पूर्णता से स्पष्ट हुई दिनांक **३ व ४ जून** को मनाली में जब **प्रत्यक्ष लक्ष्मी सिद्धि एवं साधना शिविर** का आयोजन पूज्यपाद गुरुदेव **श्रीयुत नन्दकिशोर श्रीमाली जी** के सान्निध्य में हुआ। ऐसे विशिष्ट शिविर की प्रतीक्षा समस्त भारत के साधक व्यग्रता से कर रहे थे और मनाली जैसी सुरम्य स्थली पर पूज्य गुरुदेव के संग साधनामयता के क्षण चिरस्मरणीय हो गए। ऐसी पवित्र देवभूमि पर साधकों ने जिन अनुभूतियों को प्राप्त किया वे उनके जीवन को आलोकित तो कर ही रही हैं साथ ही साथ आने वाले साधकों के लिए भी प्रेरणा का कार्य करेंगी। स्थानीय आयोजक **डॉ० एम० आर० वशिष्ठ,** की सक्रियता एवं प्रयास प्रत्येक दृष्टि से शिष्योचित एवं साधकोचित थे। अपनी विनम्रता और अतिथि परायणता से उन्होंने भारत के विभिन्न प्रदेशों से आए साधकों को अभिभूत ही कर दिया। स्वास्थ्य निदेशक (हि० प्र०) के व्यक्तिगत सचिव **श्री के. एस. गुलेरिया, श्री कर्मदत्त शर्मा, श्री एस. आर. ठाकुर** के प्रयास भी प्रत्येक दृष्टि से प्रशंसा योग्य और साधुवाद ज्ञापित करने योग्य रहे।
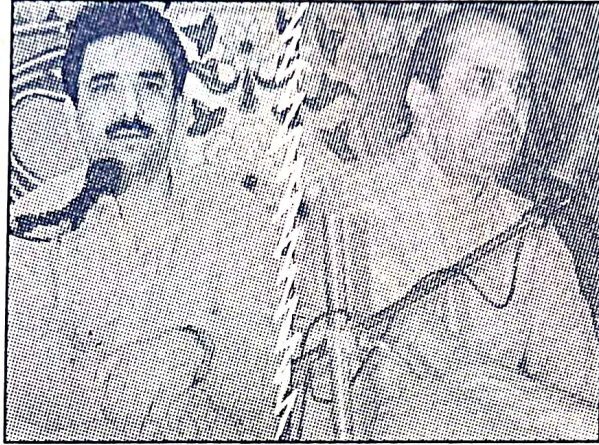
''शिवरी नारायण'' (म० प्र०) में

तीन दिवसीय शिविर

जन-जन की भावनाओं के प्रतीक भगवान श्री राम से जुड़े पुण्य स्थल **शिवरी नारायण (जिला- विलासपुर, म. प्र.)** में **श्री के. बी. द्विवेदी,** थानाध्यक्ष- पण्डरिया, जिला - विलासपुर के अथक प्रयासों से तीन दिवसीय साधना शिविर **(८ से १० जून ९४)** का आयोजन पूज्यपाद गुरुदेव के वरद हस्त तले सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर पूज्य गुरुदेव के साथ पूज्य श्रीयुत नन्दकिशोर श्रीमाली जी भी उपस्थित रहे।

भगवान जगन्नाथ की जन्म भूमि और तपः भूमि में एक - एक दिन अत्यधिक महत्वपूर्ण रहा। **प्रथम दिवस महालक्ष्मी साधना, द्वितीय दिवस मनोवांछित कामना पूर्ति साधना एवं तृतीय दिवस पूर्णाहुति प्रयोग** का एक सम्पूर्ण क्रम रहा। **पूज्यपाद गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी** के पावन चरणों में छत्तीसगढ़ अंचल के साधकों ने अनिर्वचनीय सुख और आनन्द का अनुभव किया। इस आयोजन के पीछे संस्था के सर्वाधिक सक्रिय व्यक्तित्व **श्री गुरु सेवक जी** का अथक प्रयास और परिश्रम रहा, यद्यपि वे स्वयं विनम्रता पूर्वक अपने को स्पष्ट नहीं होने देते।

श्री के. आर. कुर्रे, श्री राज कुमार यादव, डॉ० पूर्णेश चौबे एवं अन्य गुरु भाइयों ने जिस प्रकार से बिना किसी प्रचार या नाम की आशा के इस छत्तीसगढ़ अंचल के अध्यात्मिक विकास में सक्रिय सहयोग दिया उसके लिए आशीर्वाद के पात्र हैं।

❋ शिष्य की सार्थकता तो निस्पृहता में है ❋

जिसने अपना सभी कुछ मिटा दिया हो और बिना किसी आशा और अपेक्षा के गुरु - चरणों में विसर्जित होना ही सर्वस्व मान लिया हो, वही तो शिष्य है। आज **'सिद्धाश्रम साधक परिवार'** के दिल्ली और जोधपुर केन्द्र में इस भावना से अनेक साधक कार्यरत हैं।

जोधपुर कार्यालय में कार्यरत — *श्री संजीव वर्मा, श्री के. एम. श्रीवास्तव, श्रीमती उषा श्रीवास्तव, स्वामी जी, रघु यादव, डॉ० सन्तोष घले, श्री हेमन्त देसाई, श्री मंयक जोशी, श्री श्याम नारायण भारद्वाज, रामचेत भाई, देवी प्रसाद गुप्ता, पाठक जी, उपेन्द्र, वकील साहब, श्री चेतन चौहान, श्री के. के. तिवारी, श्री रमेश जी, श्री मोहन शर्मा, ऋषिकेश, विकास श्रीवास्तव, पाण्डेय जी, संजय, श्री कपिल शर्मा, श्री विजय देशमुख, श्री महेन्द्र सिंह, वंशी, भानु, हरि, धनेश्वर, राजेश गुप्ता।*

दिल्ली कार्यालय में कार्यरत — श्री राजेश गुप्ता, श्री सुभाष शर्मा, श्री शास्त्री जी, वर्षा बहन, श्री कृष्ण भक्त डंगोल, श्री श्याम लाल महार्णव, श्री पी. एन. अग्रवाल, श्रीमती सरोज अग्रवाल, स्वामी आत्म दर्शन सरस्वती, श्री शिवमंगल सिंह,श्री दर्शन, बंटी, राजेश भवसार, श्री परशुराम महापात्र, सुशील गुप्ता, श्री रविन्द्र पाल, श्री अपर अपार सिंह, श्री वासुदेव पाण्डे, श्रीमती कनक पाण्डे, श्री विद्यापति एवं राकेश यादव।

पूज्यपाद गुरुदेव ने सभी को गुरु-पूर्णिमा के अवसर पर हृदय से आशीर्वाद प्रदान किया है।

पूर्ण सिद्धि विशेषांक : दीक्षा व सामग्री परिशिष्ट

पत्रिका- पाठकों की विशेष सुविधा को ध्यान में रखते हुए, पत्रिका में प्रकाशित प्रत्येक साधना में संबंधित सामग्री की व्यवस्था करने का अथक प्रयास किया जाता है, दुर्लभ एवं कठिनाई से प्राप्त होने वाली सामग्री को उचित न्यौछावर पर उपलब्ध कराने की व्यवस्था की जाती है, तथा साधना से संबंधित दीक्षा की विशेष व्यवस्था भी की जाती है।

सामग्री	पृष्ठ	न्यौछावर
मनोवांछित साधना		
सिद्धि पैकेट	११	३००/-
माणिक्य शिवलिंग	१३	३००/-
मुक्तक शिवलिंग	१३	३००/-
नीलम शिवलिंग	१३	३००/-
कापालिक मंत्रों से		
सिद्ध शिवलिंग	१६	३००/-
काली हकीक माला	१६	१५०/-
गोमती चक्र	२५	२१/-
सियार सिंगी	२५	२४०/-
केलन	२५	२१०/-
आयुष्य लक्ष्मी यंत्र	२६	६००/-
सफेद हकीक माला	२६	१५०/-
लघु सूर्य यंत्र	३६	३००/-
षट्शक्ति रूपा गायत्री यंत्र	३६	१५०/-
श्रीं यंत्र	३६	१५०/-
ह्रीं यंत्र	३६	१५०/-
क्लीं यंत्र	३६	१५०/-
मां गायत्री का प्राण		
प्रतिष्ठित चित्र	३६	१५०/-
गायत्री माला	३६	१२०/-
सुघाण	३८	१५०/-
कामिनी कामेश्वर यंत्र	३८	३००/-
नजर निवारक तावीज	३८	१५०/-
रत्नसारला	३८	२१०/-
यक्षिणी यंत्र	३८	२४०/-
यक्षिणी माला	३८	१५०/-

सामग्री	पृष्ठ	न्यौछावर
ताम्रपत्र अंकित		
गुरु यंत्र चित्र	४२	२४०/-
स्फटिक माला	४२	३००/-
रुद्राक्ष माला	४२	२४०/-
गुरु चरण पादुका	४२	१५०/-
सिद्धाश्रम गुटिका	४२	६०/-
वीर प्रत्यक्ष सिद्धि यंत्र	४६	२४०/-
काली हकीक दाना	४६	२१/-
काली हकीक माला	४६	१५०/-
महाशंख	६१	३००/-
तिलोत्तमा अप्सरा यंत्र	६१	२४०/-
चन्द्रप्रिया जड़ी	६१	३००/-
अप्सरा माला	६१	१५०/-
एक बिल्ली की नाल	६६	८०/-
मूंगे की माला	६६	१५०/-
ऋण बाधा निवारण		
यंत्र (ताजीब)	७०	३००/-
ज्येष्ठा लक्ष्मी यंत्र	७०	२४०/-
क्षीरोद्भव (१४)	७०	१०१/-
कमलगट्टे की माला	७०	१५०/-
सिद्ध लक्ष्मी यंत्र	७१	२४०/-
रोग मुक्ति गुटिका	७१	३००/-
सिद्धि फल	७१	२१/-
अंगुष्ठ प्रमाण लघु शंख	७१	१५०/-
विजय लक्ष्मी यंत्र	७१	२४०/-
मनोकामना शंख	७१	१५०/-
अष्ट भैरव चक्र	७३	२१०/-
अष्ट भैरवी चक्र	७३	२१०/-

सामग्री	पृष्ठ	न्यौछावर
महाकाली यंत्र	७३	२४०/-
रक्त माला	७३	२४०/-

दीक्षा	न्यौछावर
महालक्ष्मी दीक्षा	२१००/-
ऋण मुक्ति दीक्षा	१५००/-
मनोवांछित कार्य सिद्धि दीक्षा	३६००/-
गृहस्थ सुख समृद्धि दीक्षा	२१००/-
रोग मुक्ति दीक्षा	२१००/-
धनवन्तरी दीक्षा	६००/-
शत्रु बाधा निवारण दीक्षा	१५००/-
बगलामुखी दीक्षा	३१००/-
पूर्ण पौरुष प्राप्ति दीक्षा	३०००/-
कुण्डलिनी जागरण दीक्षा	२१००/-
अप्सरा सिद्धि दीक्षा	२१००/-
पूर्व जन्मकृत पाप विमोचन दीक्षा	१५००/-
यक्षिणी दीक्षा	२१००/-
गुरु प्रत्यक्ष सिद्धि दीक्षा	३६००/-
गुरु हृदस्थ धारण दीक्षा	२१००/-
राज्याभिषेक दीक्षा	११०००/-
वीर वेताल सिद्धि दीक्षा	५१००/-
तारा महाविद्या सिद्धि दीक्षा	३१००/-
सर्व साधना दीक्षा	३१००/-
ज्ञान दीक्षा	६००/-
जीवन मार्ग दीक्षा	६००/-

नोट : साधना सामग्री आप हमारे दिल्ली कार्यालय अथवा जोधपुर कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं, **किन्तु डाक द्वारा मंगाने की स्थिति में केवल हमारे जोधपुर केन्द्र से ही सम्पर्क करें,** ऐसी स्थिति में डाक खर्च भी देय होगा। सम्पूर्ण धन राशि पर मनीआर्डर कमीशन के रूप में यथोचित अतिरिक्त धन राशि पोस्ट ऑफिस द्वारा ली जाती है, जिसका संस्था से कोई सम्बन्ध नहीं होता है।

चेक स्वीकार्य नहीं होंगे। ड्राफ्ट किसी भी बैंक का हो, वह **''मंत्र शक्ति केन्द्र''** के नाम से बना हो, जो जोधपुर में देय हो।

मनिऑर्डर या ड्राफ्ट भेजने का पता

मंत्र शक्ति केन्द्र, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-३४२००१(राज.), टेलीफोन : ०२६१-३२२०६

दीक्षा के लिए पहले से ही समय एवं स्थान तय कर अनुमति लेकर ही आएं

३०६, कोहाट इन्क्लेव, नई दिल्ली, टेलीफोन : ०११-७१८२२४८

प्रकाशक एवं स्वामित्व श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली द्वारा नव शक्ति इन्डस्ट्रीज, C. १३ , न्यू रोशनपुरा, नजफगढ़ दिल्ली से मुद्रित तथा गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली से प्रकाशित।

शन नं० ५५७६१/६३ A.H.W.
डी.एल.नं० १६०५२/६३

२१ दीक्षाएं जो देवताओं को भी दुर्लभ है

८ से ९ अगस्त को

इनमें से किसी भी दिन जो आपके लिए सुविधाजनक हो

सार की दुर्लभ और अद्वितीय दीक्षाएं पूज्य गुरुदेव इन दिनों में प्रदान करेंगे

- महालक्ष्मी दीक्षा
- ऋण मुक्ति दीक्षा
- मनोवांछित कार्य सिद्धि दीक्षा
- गृहस्थ सुख-समृद्धि दीक्षा
- रोग मुक्ति दीक्षा
- धन्वन्तरी दीक्षा
- शत्रु बाधा निवारण दीक्षा
- बगलामुखी दीक्षा
- पूर्ण पौरुष प्राप्ति दीक्षा
- कुण्डलिनी जागरण दीक्षा
- अप्सरा सिद्धि दीक्षा
- पूर्व जन्म कृत पाप विमोचन दीक्षा
- यक्षिणी दीक्षा
- गुरु प्रत्यक्ष सिद्धि दीक्षा
- गुरु हृदयस्थ धारण दीक्षा
- राज्याभिषेक दीक्षा
- वीर वैताल सिद्धि दीक्षा
- तारा महाविद्या सिद्धि दीक्षा
- सर्व साधना सिद्धि दीक्षा
- ज्ञान दीक्षा
- जीवन मार्ग दीक्षा

समग्र, साफल्यदायक, ऐश्वर्य प्रदायक, अनुकूल एवं जीवन की चुनी हुई २१ दीक्षाएं

सम्पर्क
गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव,
पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४, फोन-०११-७१८२२४८

नोट : ये दीक्षाएं पूज्यपाद गुरुदेव केवल ''गुरुधाम'' दिल्ली में ही उपरोक्त दिवस पर प्रदान करेंगे।